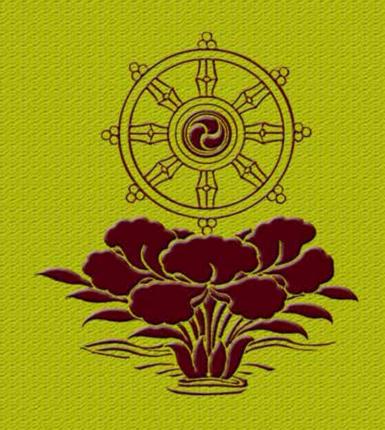






# द्वेगाः के नामिनास्य देशकुष्मक्षी



अद्भद्र'य'या

अवसम्बुन'न्ने'सेन्स'न्नस'न=५"।





### न्गामःळग

3
3
)
L
)
9
5
2

गश्यायायव्ययात्राकृषायाते कुष्ठित्रायर उत्रेसिया बुद्या	97
गशुस्रामाधीन् भेषासुषात्याहेत् सुंवामाशुस्रार्थे से मन्मामाना	99
नवे'रावासयाराक्षेु'नाष्ट्रीसरसळस्यराक्षेर्नातरेक्षुंळेंग्या	
নপ্র'মা	111
<u>ख्र.स.म्रेथ.खेश.ज.¥श.सर.रिशेर.सपु.श्रू.</u> थश.लुर.जेश.खेश.	
र्वि'त्र'यश्रुं भुं न'श्रुं र'न्याया'या	115
त्र्वा'रा'वळे'सेससाम्यसामेवासावत्रम्धे'सासळससार्श्वे र'रा'व	য়'
ন্ব্-	138
गहिरायां स्थायां श्रीत् ग्रात् समय सेत् तु त्येया न	
श्चे त्वर् स्तर्म्या	141
गहिरायाने त्यरा श्रे रायास्त्र स्वास्त्र स्वारा श्रे स्वाया स्वीत स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्व	146
गशुस्रामाने त्यसाम्माने त्यस्य स्वतः स	
বর্হ:জ্বানপ্রা	150
नवे परे 'यश नविव 'र्वे व सुव स्व मा अ क्रिन पर व्याप स्व या	154

#### न्गार :ळवा

गहेशमास्त्रभार्थेगामी र्झेन्सर्ने स्ट्रम् र्झेन्सरे लेश होत	
নপ্র'ম'মা	. 156
गहिरायानसूर्यायाशुरास्याग्रीदिरायदेवायवे	
শ্চ্ৰ'ম্'ব্নন'ম।	. 157
र्ट्स र्मुना नर्मय ग्री नर्ने व स्य न्वर मा	. 157
गहिरामगुराद्युरायदेवायायत्रा	. 174
गशुस्रायायर्वे नायदे नित्रायाय वित्राया	. 179
नवि'म'यम'ग्री'नदेव'म'नवि'म।	. 190
ने वार्क्षन सम्विष्ठ स्थानि क्षेत्र स्थानि क्षेत्र स्थानि क्ष	
779771	. 228
ম হ্ বা ' হ্ হ '	. 232

त्र मृत्या अन्या वित्र भ्रम्य वित्र मृत्या वित्र म्या वित्र म्या

शेर-श्रूद-द्यर-वह्य-द्युद्य-वर्शेद-द्ययःग्रीश

ริสาล์ลัพลิสามสุมมามูามารูที่มาสาราสูาสูราสุมาริสามิรารูาสุมาชิสา ราสูาสารารา marjamson618@gmail.com श्रुम्य प्रम्य प्रम्य

## यर्केन् नाईन्

ख्र. श्री क्षी याट. विया अ. श्री श्री चित्र श्री ट. या या क्षेत्र श्री चित्र श्री चित्र

## गल्दः देवा

# हैन्'वळन्'ग्रेन्'गाहत्'व्य'न्नन्य'याहेश न्नःस् नन्नन्'ग्रेवे'यर्नेन्या

न्द्रभाविष्यम् । विष्याम् अस्ति । विष्याम्य विषयाम्य विषयम्य विषयम्य

बेश न्या स्ट्रिंग स्

# गहेशमाने हिनायळन होना गहरायान्य माने शा

# ५५:सें। श्रुं:देव:नश्राम

नेशमहिशयानने नरमनेमश्रम नेशमहिंदाने।

प्रत्रश्चात्राव्यव्यात्र्व्यात्र्व्यात्र्य्यात्र्यं विष्ण्यात्र्यं विष्ण्यात्रं विष्ण्यं विष्ण्यात्रं विष्ण्यात्रं विष्ण्यात्रं विष्ण्यात्रं विष्ण्यं विष्ण्यात्रं विष्ण्यात्रं विष्ण्यात्रं विष्ण्यात्रं विष्ण्यं विष्ण्यं विष्ण्यात्रं विष्ण्यात्रं विष्ण्यं व

गहेशमाने हेन के में मान मान निया है स्वराये दु पदि दे गल्रामे प्रमेयात्रमान्यविषायात्री ने स्मान्ते सकें नाहित्यी कें मारास् नरुन्या होन्यों ने हिन्द क्रम्या सुनाय दे त्ये दुः दिन होन्यो का कुषा है । क्षूमा वळत् क्षेत्रामासु नवत्र मासु न्ये ने हिन्द्र सम्मायमाया वे तु वदे हेन्य इसमायदे न्वे माया परावार विवाधित वे वा वन्नाया गुःहे। वरे ख्रमः अर्दे वे : अर्के दः निर्हे दः ने के दः ने विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य याच्चित्रवर्गा लटार्यात्रराह्म्यायासद्गायात्रात्रास्याच्च्याः क्षेत्रात्रात्र्यात्रात्रात्र्यात्रात्रात्र्यात् यह्राता वसका उर् सिंहे दारि त्यसा ग्री देसा पार्टा यह का ग्रीका देश गर्यानुःयान्यस्यार्वेनायदेः वन्यादेः सूर्यानसूर्यायाचेगाया सुर्येद्रां वीः यसमी रेसमामिक मार्कर नर हैं दाराधिद विदा दे द्वादी में या नरें द गहेत्रस्ययाग्रीयानेयापराग्रानाप्ता नक्षेत्रापराग्रानदेर्देवाग्रीमिर्डाने धेव'नशनेवे'द्वेम् वर्मान्द्वस्थाउद्गाह्येव'नवे'वस्य वर्ष्य्य प्रान्द् नरुरायायायायायम्हिनायानर्यायस्य हुन्दे सार्वेनायम्हिनायवे देन त्। अर्देवे अर्केद निह्न सम्मायम प्रमेय प्रेत के तु प्रदे केद सह द प्राधित र्ने।

ने त्य गुद्द त्य अपन हुं अर्थे प्रकेष्ट प्रकेष में के प्रचान के प

नेशन विश्व विश्व क्षेत्र क्षे

बेश मुनि ने प्रेम प्रेम

द्रश्चित्री क्रद्रास्त्रुसेट्र ठ्रद्रश्वेश्वा वेशः द्वान्यः श्रेष्व्राध्यः स्त्रेष्ठ्र क्रद्रास्त्रे क्रद्रास्त्र स्त्रे क्रद्रास्त्र स्त्रे स्त्रे

ने भूर क्रियान हैं न मुहेर क्रिया मार क्रिय

यदेशःगवस्यः भ्रूनसः द्रायाः स्वायः श्रीयाः मित्रः दिनः श्रीः गवसः सः स्वयः सः स्वयः स्वयः

ने भ्रान्ति । व्याप्ता स्वाप्ता नि स्वाप्ता स्व

त्या त्य्याचिक्षात्राक्षेत्राचिक्ष्याची क्ष्याची क्षयाची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्यची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्षयाची क

स्वायास्य विष्ठा विषय विष्ठा विष्ठा विषय विषय विष्ठा विष्ठा विषय विष्ठा विषय विष्ठा विषय विष्ठा विषय विष्ठा विषय विष्ठा विषय विष्ठा विषठा विष्ठा व

ह्नाश्चाने द्वान्य स्थाने स्थ

ठे विवादवें अप्यासर्दित सुसाग्री अग्राचाराये भे हो।

ने नमाना ने भूम विनायने याने मान्य ने प्रायम ने ना माने किया के माने न हुर्हेग्रयास्य सुन्य धेर्यस्य ग्राल्टर् कुर्यस्य स्थानमे द्वाया कें अः श्रुवः पवे रहं वा वा श्रुवः पवे रहवा अः ग्री अः वरे वा नेवा अः ग्रुवः पवा ह्याशयाव्य इस्रश्यी स्वाराक्षेत्र स्वारा विवायन से न्युन पर वर्गुर नशा देवे भ्रेरा ग्वित इस्र ग्रे भ्रें ग्रेस के रास्त्र के द्वार प्र यदे द्वित्र अर्के अरक्ष न अर्था देश सम् हो न सदे रहे वा देश है वा देश है वा देश है वा देश है वा देश ग्रीभागाशुरास्यायम्। सराहेराग्रीभागारुयाग्राइसम्भाय। यदेवायविदे त्रूटार्देरावनशाद्दानवसायानसूत्रायासदिनसुसामीसामुनावेदा। देखेदा मुक्र हे स वेंग पर न दूर रा धेर द्या दें द है। गल्द धेर ले र इस पर ररःचलेव क्षे प्रवित्र च प्राच प्रवास्त्र है । क्षेत्र नस्यायग्वायायायाये वर्षाः वर्षाः चर्षाः सेराहेषायायये । वेर्षाः सेराहेषायायये । ग्रीअ'गुर्द्र विद्युद्द श्रुद्द्र अद्र अ'सूर्या'नसूष्य'वयाया अ'पवे' स्र द्र प्र अर्देद् 'र् 'हेर् व्यायर प्रेंया स्वाया भी व्याया श्री हिनाया या यहेव प्राये हे या प्राया कर समारेमाना नर्डेसाथ्वायन्माग्रीमान्याग्रायाननेवानविवेत्त्रमार्देरा ध्रित के सार्वे वा सर निष्ठ्रत साधित साहित दुरे सामर विश्वर निष्ठि स श्चेनि'रा'पळन्'रापे'श्चेनश्चार्या,यनेन्'नविषे'सूर'र्नेर'वनश्चार्याया मान्त्रायायने नर्भायते प्रदेश में क्षित्र अप्तार्था की अप्तार्थ के स्वार्थ क

ने स्रूर ख्राया अप्युद्ध न्या ख्राया स्याया देश प्राया ख्री राया स्याया है स्याया स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्था यदे न्वीं याया है ले ता ने प्यमाय है वा पर्ने सूसान् मस्य या हिताया में वा यदे वनशान् । विनाने अशास्य नुशासाय नहेत् त्रा दे हिन विनासर वर्गुरानागुरायविताभुरावेराग्रे मुंग्येरार्ने । देवे भ्रेरा वयया उरायवित राधराभेरार्रे भ्रुभार् खें वासराहें वासर्रा धरावाडेवा रवरा सुवा सुर् ह्यानान्द्रत्वुद्राची क्रेशन्तु व्यवस्था उद्दाय विवादा धिवाची कुष्य देश वस्रयाउट्रासित्रायां के से त्वरादे। । सूरावस्रया उट्टासे के या या दीया वस्रया उद्युश्यान् होद्यादे व्यवस्थेद्यादे ही मार्ने सूक्षात् विवासमार्हेणाया नवायान्यतः केन्द्रा वस्र राज्य सित्र सित्र विद्यानिय सित्र वित्र विद्यानिय सित्र विद्यानिय सित्र विद्यानिय सित्र विद्यानिय सित द्याग्रीयानभ्रेत्। ग्रुन्। ग्रेत्। ग्रेत्यामानेताम् वित्रामानेताम् वर्तुरानी द्वारामराम्यविषा रामा शुरुषाया धेताया है स्वरामस्या स्वरासित याक्ताप्तारायश्राहे सुराक्षे प्रदेशक्षयायन्तराया वस्रश्राउदासित्रायाकुरो <u> न्यात्यशक्ष्याने स्वरत्वित्यायाया क्रु</u>ायळवाडे वियाणें नस्वयान् नेयाया रान्ययानि हैं ने नियायया हैं याने क्षेत्रावित्या महें ने या हैन है। ह्वाराध्यत्त्वायी देश्रायायाँ दें त्राप्तात्र वात्रवायाय विवाय स्वायाया क्रॅ्या'यी'क्रसंस्र प्रविवा'स'यासुरस'स'धिक'वेटा। याव्र 'धरास्यास'य हुर' वीर्यादी वार्डें में र होवा या केंद्र सेंद्रि त्यया ग्री रेया वर्षेद्र यर ग्री र त्या खुवारा स्वाःवीशःवार्डः वितः वर्षः वितः वर्षः वितः वर्षः वितः वर्षः वर्षः

स्वाका क्ष्याची अप्तर्भ क्ष्याची विषा विषा क्ष्या क्ष्या

ने'नश्रात् श्वाश्वात्र्युर्गेश्वश्यश्वात्र्याचीश्वात्रः र्वेत्रः वित्रात्रः वित्रः वि

यदे यस मी देस पार्म के में मायक मार्ने किया माय प्रमा माय प्रमा मी माय प्रमा माय प्रम माय प्रमा माय प्रम माय प्रमा माय प्रम माय प्

ने त्थू रहा खुवाशाय द्वु र वी शक्त वा स्वे र स्व र स्

दे निवित् नु श्वासार्थ्व निवास से निवास न

दे द्वा स्ट्रेस् वा स्ट्रेस्य स्ट्र

यार्ष्व हत्ते ने श्रे न् श्रे न् र्यो न् र्यो न्या स्त्रे ने न्या स्त्रे ने न्या स्त्रे ने ने स्त्रे स्त्रे ने स्त्रे ने स्त्रे ने स्त्रे ने स्त्रे ने स्त्रे ने स्त्

द्रंत्र-श्रुवायात्र वृद्धाना न वृत्या ये या विद्या विद्या

मावव पारा हे उं अ र र र हे र प्रिं र र वे सुमा र स्या में अ प्ये र

त्र्युर्त्तः शुन्नाश्वः द्वारादे उत्याद्वा दे त्याद्वात्राश्वः द्वारादे त्यादे त्यादे

देन्यस्त्र स्टिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्र्यम् स्टिन्द्र्यम् स्टिन्द्र्यम्यम् स्टिन्द्र्यम् स्ट्र्यम्यम् स्टिन्द्र्यम् स्टिन्द्र्यम् स्टिन्द्र्यम् स्टिन्द्र्यम

ने भू सें न् ग्री प्रोचें र नवे सूना नस्य पी न पा हो न पा न र

त्रं त्र क्षेत्र क्षेत्र हे क्षेत्र क

देशक्षेत्राचा छेत्र से विष्ठ से विषठ से विष्ठ से विषठ से विष्ठ से

ने स्वानस्याने किन्यमें न्यास्य स्वानस्य मिन्से स्वानस्य स्वानस्य

कुषायेग्रासराधेरायाग्रस्य देवे देवा दुर्वे नास्रवयद्यारे रे विरावन्द्रारायशायन्यायर्गाकेन्त्री सान्द्रास्त्राच्या हो। स व क्षन् सेन् संनिष्ण संनिष्ठेत केत्र से निम् स्व सम् अम् निम् अम् อुरानिरामें अर्थाया व्यव्यात्र विष्या प्राप्ति विष्या प्राप्ति विष्या प्राप्ति विष्या प्राप्ति विष्या विषय विषय निव हिंधीन दे देर निव देश मान स्थानित निव के निव न्वायिर्म्यत्रस्वायस्याग्रीस्यस्याम्यायम्यास्याद्वारम्याद्वारम् ग्रैश में दायशयां नहेत्र त्रायमें नासूना नसूया नास्या नासे नासे दि से नर दशुर विदा सूगा नस्या न दगे नया न दगे न दि हैं भी नर दशुर यार्ह्सेने या श्रीमाहे विश्वाता विना विना ग्रमा वर्षा नास्यानाया थे। र्वेशन्ता स्टायत्याक्त्यान्यायायायाचीनायाचीमा नेपा मळेत्रमंनिक्षेरहे अळत्रित्रणेंद्रश्रहेष्यश्रम् केत्रसं विश्वतं से मुद्री

क्रेवास्त्रित्त्रेत्रेत्त्रेत्त्रेत्त्रेत्त्र्य्यात्र्य्यात्र्य्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्य

य्यायाः स्वायाः स्वयाः स्वायाः स्वायाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयः स्

ने स्मा क्रें न स्यान्त ही सप्ति प्राचे ने साम् न स्याने साम ने श्रेन द्वा विन्वा हिन श्रेश श्रे वा स्थान श्रेन श्र नर्झे अरुपाया देशाया कुराया क्षेत्री के से से देशा है। देशा के से स्वारं नर्झेमस्य मासी सेन मित्र के निर्मा के निर्मा के निर्मा के सेन के निर्मा के सेन मित्र भ्रे न्यू भ्रे जिन्दार्भ मुनायि ह्याया परान्या वहेत् त्यारे या या हेत् धरानुदेश्रुयाधिरयेययानभ्रेत्याराह्मयायाञ्चेत्रीत्रिता देरायान्त्र कें भ्रे अन्तर्भें त्र्राची अने वा अन्य न्या भ्राय देवी वयत में वयत में व नवे भ्रिम्त्र नवे भ्रेवाय ब्रम्देम् होत् पवे ख्राय प्याप्त देश महास्यास श्चे : श्चेर : स्वा हे : श्चेर श्चे : त स्वा श्चे : स्वा श श्चे न स : श्चे स स : स : यने श्रीनन् अर्देव यम् अर्थे नन्दर देश या ये न्या यदे यथा वस्य उन् ग्री र्श्वे त्यायायाने त्र्यायायाची ।

ने नमान स्थानी यमार्स्स् मामाया इटा बदा ग्राटा से पहिना परि हुं।

धेव'बिटा द्वे'स'दी यस'ध्य'रेट'र्र्'र्ग्स्स्र स्ट्रेट्'र्य्योग्स धेव' र्रो।

देवे श्वे र नो ना श्रावदे ना हे शर्य या ना या या श्री श्वे ना या र ना हे शर्य वे श्वे र ने से से ता या ते शर्य या ते से से ता या ते शर्य या ते से से से या ये से मार्थ से मार्य से मार्थ से मार

देश्या वर्षे न्यायव्यत्वास्य वर्षे वाय्ययः वर्षे व्याय्ययः वर्षे वर

रे.क्षेत्रः चक्ष्याश्राच्या चेता, वृष्यः वृष्यः चेत्रः चत्रः चेत्रः चत्रः चत्रः चेत्रः चेत्रः चत्रः चत्रः

चति । स्वानस्य प्रस्ति ने प्रस्ति ने प्रस्ति स्वान प्रस्ति स्वान प्रस्ति । स्वानस्य प्रस्ति ने प्रस्ति स्वान स्वान प्रस्ति स्वान स्वान प्रस्ति स्वान स्वान

ने भूर प्रयाप्त अवस्था वस्र अवस्था वित्र प्रति वित्र प्रयाप्त के स्था वित्र प्याप्त के स्था वित्र प्रयाप्त के स्य

श्री राहे के तार्गाण्य श्री स्थान स्थान महित्र स्थान स्थान महित्र स्थान स्थान

ने १ द्वारा विकास के त्या विकास के त्या के त्या विकास के त्या के त्या

ने'नश्रा प्राचेरास्त्रीन'न्स्त्राम्बद्धाः ख्रान्स्त्राम्बद्धाः ख्रान्स्त्राम्बद्धाः वित्राम्बद्धाः ख्रान्स्त्राम्बद्धाः ख्रान्याः ख्रान्स्त्राम्बद्धाः ख्रान्स्त्राम्बद्धाः ख्रान्स्त्राम्बद्धाः ख्रान्स्त्राम्बद्धाः ख्रान्याः ख्रान्स्त्राम्बद्धाः ख्रान्द्राम्बद्धाः ख्रान्याः ख्रान्द्राम्बद्धाः ख्रान्द्राम्बद्धाः ख्रान्याः ख्रान्याः ख्रान्द्राम्बद्धाः ख्रान्याः ख्रान्याः ख्रान्द्राम्याः ख्रान्याः ख्रान्द्राम्याः ख्रान्द्राम्यान्याः ख्रान्याः ख्

यदे के शक्त सम्मा के दिन त्या स्टा हे दा की देवा प्रमाणें द्रमा सु दि हिंदा प वेत्रप्रद्रा सूगानस्याकुः नठर्यावे नरः वेत्रप्रे सनस्य सास्य सा र्वेन प्रमः होन प्रवेश्वन यान्त्री न स्वन प्रामा सुया हो यान्या प्रवेश सुन त्या नहेन'मदे'भेन'केश'क्न'स्रश्नस्यम्न्युंन्यम् हेन्या देश'येग्र वरायाद्रावस्था उदासिवायार्वे वास्य होतायवे विवसाद्र हो। द्रियार्थे क्रॅनशःल्याशःग्रे:रेयाःलेशःळद्रास्रशःहसःसरःदर्धेदःसरःग्रेदःसधिदःहे। दे.लट.वर.स.रट.वश्रश.कट.शिव.स.व्या.सर.विट.सप्र.तश्रश्रश.श. येवायापारा अर्देवा अर्देवे खुर्या ह्या प्रमाण्य प्राप्त हेवा वा व्या में यदे हेत द्या य त्रा रा दे से द सम् सर्वे द स्या वर प्र द र वर्ष सिव्यानियात्री त्यारास्त्रास्यास्य त्यां यात्रा सिव्यास्य सिवयास्य सिव्यास्य सिवयास्य यर उद विन प्रते वन राय थेंद्र स्र सु हैं ना वेद दें द ना हेर ना थेद है। ख्न-खःर्नेव-त्-पाहेन-व-न्याः श्रून-व-त्याः व्यावायः विवन्ते। ।

ने नमान् कें भ्रे समान् भ्रेते में त्यम में नामाने मान में मान भ्रेता मान

रेग्रायायिः र्स्वे व्या ग्विन र्देन प्रायायायी म्यायाय प्रायायायायी स्थ्री स्थ्रायाय स्थ्री व्यायायी स्थ्री स्थ्रायायी स्थ्री स्थ्रायायी स्थ्री स्थ्रायायी स्थ्री स्थ्रायायी स्थ्री स्थ्यी स्थ्री स्थित स्थ्री स्थ्री स्थ्यी स्थ्यी स्थ्री स्थ्यी स्थित स्थ्री स्थ्य

र्देश-दे-त्या-ग्रह्मा ख्रह्महार स्वाकान्य स्थान् मुह्महार प्रिका विकान्य स्थान स्था

ते स्मा वे अन्ययय श्री अन्ययन निर्देश स्थान निर्देश स्थान स

है। नम्भयः राज्ञद्यासे द्राया से न्याया से न्याया स्त्राया स्त्राय स्त्रा वस्रश्चर्याद्येत्रसंदेर्यात्रेत्रयाराष्ट्रयारात्यारावराहेष्यात्राहे। देख्रावर्या श्रुःकैंग्ररायान्द्रायाच्या स्था यद्यासेटाहेंग्ररायदे लेखार्या धुव देट र् वें अरु पर हो र हेट। रे क्षर वें अरु पर हुर वं अरु ध्यानन्या सेना प्रेता में ताया में ता के त श्चें रायसाधित विदा दे हेर में समाय सम्ब्राय साम हार पर र् कुर है। नन्गासेन् परिनेत्र ननेत्र परिन्हसारा सर्देत् सुसान् हिंगूसापि हैं निरा रॅर्भुअप्यक्तिसर्वरायमधेन्या देकिन्यरप्रम्पर्त्र्यास्य होत्रपाने क्षेत्रपायमाधीन विदा दे स्ट्रिम पुन मेर पुर अवर-तुर-र्देर-ग्री-ग्राव्यावयाः उद-त्यः व्यायाः ग्रायाः नः स्वःग्रीः अवरः मुक्रमदे पो मेका भ्रेका वावका प्रवासिक मि है। या साबिदा सामा सास्यका धर्श्वरयायात्री क्रियावस्याउटाक्त्यायावस्याउटात्। सर्वाधराहेषाया यरः यरमा मुमाया विया ग्रामिये दिवाधी वार्ते।

यम् श्री श्री स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ

वृक्षःश्र्। विकालेकायरः श्वानवे क्षेत्रः त्ये क्ष्यं । विकालेकायरः श्वानवे क्षेत्रः विकालेकायरः श्वानवे क्षेत्रः विकालेकायरः श्वानवि क्षः विकालका श्वानव क्ष्यं विकालका श्वाव क्ष्यं विकालका श्वाव क्षयं विकालका वि

राधिता वेशावर्डेसाध्रमायन्याग्रीयानेयाग्रामयसाउनायितापानमा देवे जो जा शर् शुम् र पदे हो न वे न जा क जा शर् शर् शर् शर् शर् शर् शर् धेव पर प्रमुद्राया अवसायदेर वस्र साम्य सामित पर विद्रापित स्वर् ष्याची देयापान्या ग्राम्या राष्ट्रम्य सेन्या प्रस्ति । स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या <u> चे</u>र्प्सदे गहेत्र में कें अग्री नर्गा सेर्प्स क्षेत्र मदे कुल र्गा सन्तर्हे वा ननेव सें र श्री देव ग्रारा नर्डे स ख्व प्यत्य श्री स वेवा स बुव सें र वी । र्थे र्श्वेर र्नार्त्र वेना संकेत में बुत सेंट सेत संदे सर्रे र्थे र्ना लगा वेना यम्बर्ध्याम् । वर्षे वर्ष्याम् वर्षे वर्ष्याम् वर्षे वर्षा वर्षे वरमे वर्षे वर्ये वर्षे वर वेगायः बुव सेंद्र मी के केंद्र द्या यथा वव वेंश द्रा रद सदस मुराद्रा न्तरक्ष्यःश्रेशश्चरमञ्जाशुःशःगश्चरः। क्षःयःगदः वर्षाःगे वर्षाः सेरःसः र्यसिनार्श्वेस्रायायाष्ट्रित्यस्सेत्याता श्वेत्रायासस्यात्रिस्यात्रा दरा शेस्रश्चर्सेट्रद्रा क्षेत्रश्चर्यस्य विद्यस्य केंग्र वार्श्रवा प्रदे र् अ ग्री विद प्रम स्वावा वार्थ अ ग्रुट कुन वार्थ अ प्रदेश विद यर वर्त्वर वर वाश्वरयाया दे प्यर रे विवा के या ग्री वरवा से द दिया शु नश्रुव संदे र्श्वेन न् से सुर नदे ना न्या सुर में ना स्वा सुर सी प्रा सी सुर सी प्रा सी सुर सी से सी से सी सी स रेमानाने सूरामागुरमानाधित विदा वेगाना केतारी बुदार्से र सेदारी है। ब्रूॅर'र्ग'यथ। हुर'कुर'सेसस'र्मदरहसस्य हैस'नेस'हिदे हैं न'रादे' महेत्र में र के शा भी नित्र मार्थ प्रत्य स्तर मार्थ र स्तर मार्थ र स्वर्थ । विषय स्वर्थ स्तर स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय स्वर्य स्वर्य स्वर्य स

ने नमान पर्ने रायरा नर्डे अप्यून पर्ने अपविष्य नामा नियान में नियान निया गहेर-न-नगमे अर्देन-धर-वर्देन-धवे देन व्यक्षे नह्य नवे ळन् अपीन धर-गर्डें नें र न सुन्य प्रति ही र प्रा हे ना प्र हुत सें र नी हे हैं प्र या हे ना प्र मुश्रुयाची त्ययाची देयायाम्बर्ध्य यादी द्याची द्ये द्याया महत्यायया यदे क्षे क्र रे ने वा के राष्ट्री वर्षा से र रहें राष्ट्र र से के क्षेत्र र दे के र रुट्यान्याः हे अरुप्या बुट्य विष्टुर्य वे युः याहे अर्या वर्षे राष्ट्रेया ये युः रेदिःषमभीःरेमःमञ्जूनःमन्यपदःकेषाग्रीःमन्यामेदःमन्यन्य। वेयाः यः केवः सें खुवः सें रास्राधीवः सदे से सें र्चे र की र वी र सामान्व या प्रवे न न यदे र्र्से द्रमा केंग्र ग्री प्रमासे न सेंद र्र्से दर्द र्र्से न स्टर्म व बुद विदेशी ये दु वा शुअ यर के अ ग्री विद्या से द या कु अ यर वा हु व यादनेनश्रामाधेताया देत्रागुमानेगामाळेत्रामेतियसाग्चीःमेश्रामानावतः न्नाके खे तु वर्ते र कु र पर न्य वर् बे व पदे न्य र तु व र व र ते र से . वळन्दे।

न्ते ख्राम्य क्ष्मिं नि क्षम्य अप्तर्थ क्ष्मिं ने ख्राम्य क्षेत्र प्रम्य क्ष्मिं ने ख्राम्य क्ष्मिं विश्व प्रम्य क्ष्मिं विश्व व

ने या वर्षेत्र नवे वहुमा छुं या विंद नुः छुद ना यदा दूर से विंद नवे अळं व गवि रे अ धर ग्रु अ व श रे छे द कु गद थ नहे व व अ हे ख़र वर्षिरः नवे रहेवा ने सामाया राष्ट्र वा वित्र स्वा वित्र स्व वित्र स्वा वित्र स्व वित्र स्वा वित्र स्व वित्र स्वा वित्र स्व वित्र गल्र-प्रगामिश्यम् रावेश्यक्त्यावे देशाम इत्रमा देशित्र्या नश्यामी अळव ११८ ८८ श्वासर नश्चरायर प्रेताया गुवादमुर नरेव या क्रूॅब्र सदे मात्र प्रामिश कु मार ले महेव व्याहे सुर प्रिं स्वर सदे रहे थ वर्षिरः नः उत्रासुरः स् विशासशः वना न उशः हेरः वेतः श्रीः सुरः से स्थशः स्यानस्य भेता वित्र ना वित्र ना उत्र भीता से सार्य सामित है। नरः ह्यद्रशः है। वेवाः अवेदः याद्रशः विविदः वेशः विविदः नः दृदः वृवाः नस्याग्री सळव्यावि न बुर विरा र्वे या सामे राम क्या या विराम से रामे श्चे प्राप्त अप्तर्व साम्य हुवा पा अदा प्रवे श्चि सामे श्वर श्वर है वा अप्याया दे। वैस्थायश्यदेद्धवाश्यस्याश्यायश्याचा वेशः ग्रुप्तः दशा वस्थाः उर्गुत्रकें भ्रेम्पर्यक्ष्म वेशन्य प्रेम्पर्यं म्य

र्य ग्रा १ स्वास्त्र स्वस

दे त्थ्रमः भ्रे भारत्भाके माने माने त्या है नि स्वा के नि स्व स्व का के नि स्व का नि

गुव्यत्वर्ग्यदेव मदेश्यक्ष्यं के न्या विद्या विद्या

द्वःग्रहा रेशःवगदः नः हेन् धिवः स्थाः व विश्वः स्थाः न वृहः हे। ने धिनः व धिनः से देनः से हिनः से हिन

यदे.केंट्री यक्ष्यास्तर्भा वर्ट् क्षेट्रक्ष्याच्चा क्ष्यास्य प्राप्त क्षेत्र व्याप्त क्ष्यास्य प्राप्त क्षेत्र व्याप्त क्ष्यास्य क्ष्य क्ष्यास्य क्ष्य क्ष्यास्य क्ष्यास्य क्ष्यास्य क्ष्यास्य क्ष्यास्य क्ष्यास्य क्ष्य क्ष्यास्य क्ष्य क्

यम् त्याम् म् । विकास विकास क्षेत्र क

ने त्यास्त्री प्राप्त के मान्य विश्व के स्वास्त्र के स्व

वर् होर हे स रेग परे र नर गोस नसग्र परे वस स्थि। । इस

धरः लेशः प्राचे व्ययः देवे वया कवाया यादायः वर्षे या प्रवे द्वयः परः लेशः मर्दे । ब्रीटर्न्ट्या बुग्रस्त्रे व्ययः ग्रीः नगः कग्रस्त्र स्वीः इयः नेयः दे हिटः श्चे जावशःशुः ५८: सॅरः ल्वाशः धवे व् रः व् रः सॅ व्यः सॅ वाशः धवे जावशः भ्रम्य भी स्ट्रा भी अके न द्वा के से न मा ब्रम्य ने के न प्रसेय है। इस नेशः भ्रेरापदे भ्रेरः शुरापदे श्रेषा तार्श्विषा यादे प्रवर्धे पुवार्षेषा प्रसः गुर्रासर्वे रिगामके खुलान्नराह्म लेखान्यस्य स्राम्य विरामाने में भूराधन क्रान्य क्रान्त्रेया क्रीया ध्राया हुमा त्या वेदिया श्रुनाया व <u> ५२८:वेश:५८:धे८:वेश:५वा:वी:वर्षेर:५:क्टॅर:२:श्रेश:५:५८:वा५्८:व:</u> स्वाः इसरायः त्रूटः देरः दुः वर्दे दः कवारायः स्रे। देः वाष्पटः वर्दे दः पवेः खेदः वा न्दा वहेगामवे श्रेन्यन्दा श्रेन्यवे श्रेन्या मुख्यायमा न्दार्थे दी वर्देन्।वस्रमाग्री:वर्दे वात्याकवामायदे स्रेन्यन्ना वाहेमायदे। वस्रमा में रिस्यामिक रामी माने राज्य क्रमाया में रेसे हो एस या स्वाप्त माने स्वर्थ । गश्याग्री सुरार्स मुराळरायाळग्यायाये श्रेरायदी वियाळेयायदेत रासामान्त्राप्तर्देन्यामा यदेरारेग्रास्याप्तराप्त्राची यदेग्याँचा वहिना सदे श्रेन सन्दा वना नडश ग्रे सुन में त्या कना श सदे श्रेन सदे श्चेन्यदेश्चेन्यदे वेश्यवेन्ते। नेवेश्चेन्यर्न्यारश्चेर्णा श्चिमः ळगशनने सूगार्चेन मन्द्रा विर्देर वर्देन वह्या मने द्या की विर्देत दर

यावकाश्ची प्रतिकाशास्त्री विकामाश्चरकारा स्वा विकास विकास विकास का विकास के वितास के विकास क

श्चे नदी ने स्वादित्त्र स्वादेश्व स्वादित्व स्वादेश स्वाद्य स

ने भूरत्वा अरेवा भर्ता वर् हेर हरा क्या भर ले अरा वा शुवा

वै। कें स्यये मान्य भूत्र भीत्र भीत्य भीत्र भीत्य भीत्र भीत

नेते मुद्देन विवास से न्या से नित्र मित्र स्वा नित्र मुद्देन मित्र से नित्र मुद्देन से नित्र मित्र मित्र से नित्र मित्र से नित्र मित्र से नित्र मित्र से नित्र मित्र मि

लटः रूपा पर्या श्री कुदे र्वेषा सदे र पाट लिव पर दे रे स विवाव

ते भ्रान्ति श्रेत्य श्रेत्य दे स्थानि स्थान

च्यात्यःश्र्वाश्वायत्वाय्यक्ष्यः न्याः विश्वाः विश्वः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्

न् स्यान्त्र स्

दर्गिना निर्ने के क्षेत्र प्रते निष्ठ निष्य निष्ठ निष

देश'यर'ते दुर्पदे क्षंद्र'या या या वर्षे वे दि दु न विद्राय स्था विद्रा विद्राय विद्राय विद्राय विद्राय विद्राय वी वनवा हु वहें व या वश्वा वनवा न्य क्षे वज्ञवा यम वहें न यदे हो न या मर क्रूनर्भाग्रीभावदेवामासदिवासुसाम्रीभावग्रुनाम। देःसमानद्गानदेःनासः श्रेन्यन्ता ने व्ययः नन्यायी नने न सून होन्ने व्यून स्थानित स् न्दा ध्रिःर्रेयाची असमें अप्याखेन सन्दा ने यथा यन्या वी यने या सूर्या मदिन्द्रमार्चनामन् भेष्ट्रियादेन्द्रम् वर्षेनामदेर्स्य स्वानस्य भे नः अर्देन् शुअः रूट् अर्थः ग्रुनः पदेः भ्रुनः कें विदेते सूना नस्यः पटः नद्नाः रेग्रायद्राष्ट्रीः यासळ्ययार्श्वे राग्य देया देयाया वीया गुनाया वा सळ्स्रमः श्रु र नवे देग्रायात्रः श्रु साने हिन ग्राम् श्रुवा नश्र्या वे यात्र য়ৢ৴৻৴ৢৢৢঢ়ৢৢৢঢ়য়৾ঀয়য়৻ঀৣয়ঀ৾৽য়ৄয়ৢয়য়য়য়৻ঢ়ঢ়য়য়য়য়ৢঢ়ঢ়য়য়য় हेशन्यम्मिशनेश्रास्यास्य

सक्षम् श्री राया है भार्म्या मी भार्या राया। देवा भार्या है सार् हिरायमा के स्वामाय है स्वामाय है

न्दःहें दः सेंद्रश्रास्ते 'या बद्रान्द्राच्या 'या व्याप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वा

ने भूमा सूमा गुन में मा गुन में मा गुन भूमा गुन स्मा स्मा गुन स्मा गुन स्मा गुन स्मा गुन स्मा गुन स्मा श्रूरमारादे वर मार्पित देमात्र वेता तुमा सु देमा मान्या भी सा नित्या मी भा वनशहे भ्रानु या नहेत्रत्र या वराया दे अर्देत् दु नु नर त्या स्रुया दु वराया র্ষন দেই প্রনম অ ঐনমান্ত কেই অ নেই ক্লি ক্লি নেম নেমু সনম দেই ই প্রিস্ वर्गेषा यदेव ग्री ह्र अप्याद्दा ब्रम्स या धेर्म स्तुवा यदे खुषा व १९५ विदास वर्ष्ण वर्ने वर्ने व्यायमा ग्राम्य विष्य प्रति वर्षे व्यायमा भी विष्य प्रति वर्षे व्यायमा भी विष्य प्रति वर्षे विषय वर्षे विषय वर्षे विषय वर्षे विषय वर्षे विषय वर्षे विषय वर्षे वर् नदेव'य'क्कुर्यायर'वळद्'यर'हेद'य'धेव'य। गल्द'दे'दग्'वयर्याउद'ही' र्देव'षट'नद्या'सेद'हेंग्रस'मदे'लेस'स्न'र्जे्स'त्यस'षेव'सर'नसूव'स'द्र नेते कु अर्ळव नन्या वहें व श्रेन प्रते ह नम् श्रुव प्रान्ता नेते श्रेम नन्या वहें त्रा अर्थर शरा वर्षा वाव्य वार वो श ग्राट में वा वर के विश्वर वर नश्रुव सन्दरम् श्रुव्य से तदे र देश स प्येव त्या दे प्यट ही से या या द न्या नन्गः भेन्ने नन्गः सेन्द्रायेन्द्रः न्द्रायेन्द्रः म्द्रायेन्द्रः स्वरः सेन्द्रः स्वरः सेन्द्रः स्वरः सेन्द्रः वशुरःवशःश्री।

ने नका द्वा मिन स्वा नि स्व मिन स्व म

स्थायत्वस्थायः हो कें श्वाहेश्वः स्वित्त्वे स्थान्त्वा कें श्वाहेश्वः स्वित्त्व स्थान्त्व स्थान्त्य स्थान्त्व स्थान्त्य स्थान्त्व स्थान्त्य स्थान्त्व स्यान्त्व स्थान्त्व स्थान्त्य स्थान्त्व स्थान्त्य स्यान्त्य स्थान्त्व स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्यान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान

रेश की वेश प्रश्नित्र प्राप्त प्रति । श्रिया प्रस्य प्राप्त प्राप्त प्रति । श्रिया प्रस्य प्राप्त प्रति । श्रिया प्रस्य प्राप्त प्राप्त प्रति । श्रिया प्राप्त प्र प्राप्त

ने नश्च त्या यने व क्षृं व प्रति या बुर प्रने प्राणी श सुर में शे ह्या प्रति क्षृं व प्रति या बुर प्रते प्राणी श सुर में शे ह्या प्रति क्ष्य प्रति क्षे श स्य क्षे व स्रे प्राणी श स्र प्रति क्षे प्रति क्षे श स्य क्षे व स्र प्रति क्षे प्रति क्षे श स्य क्षे व स्था या बिव प्रति व स्य प्रति क्षे क्षे प्रति क्षे क्षे प्रति क्षे प्रति क्षे प्रति क्षे प्रति क्षे प्रति क्षे प्रति

दे'त्यः यादः वयाः यो 'यद्यां स्रोदः स्राधः स्त्रः स्त्रः

त्रः संजी अर्क्ष्वाः वावतः देतः दुः विद्यत्वे सः विद्याः विद्

भ्री भाग्नी स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स

मशुश्रासङ्ग्रीं श्रासंदे खुं या दे। दे 'सूर मार बना मी 'नद्ना खेद 'हेन आ प्राप्त के स्वार्थ हैं स्वार्थ खें स्वार्थ हैं स्वार

न्देरिक्ष्म्रित्राण्येश्व विश्वाश्वर्ष्याः स्वर्धः स्वरं स्वर

देशक्ष्याश्चिमामी नदेव नवि क्षेत्र मदे नवि नवि नवि नवि । वर्षिरः नरः वहुणः परे छुषः कुषः भरायः जातृतः वः स्वरः परे द्वेषः वर्षे रः नः सृगानस्याग्री रहानिव प्येतापा हिता स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप सन्दर्दे पार्रेशः ग्री:वदः वशः ग्रदः हेवः बेद्रशः ग्री:द्वदः पीशः शशः पार्शेषाः सः धेव मशा हैव सें रशमार्डे के न न न हैं व सें रशम दे व न व शा मार सार मार यन्दरश्चेत्रयार्वे के नन्द्रा श्चेत्रयायद्यारेवायदेन्वरावी शहुरनः क्रेरेशकास्त्रास्य विश्वत्रास्य विश्वत्रे क्षेत्र क्षेत्र के विश्व विष्य विश्व विश्य जास्यात्रमा स्वापस्याकुत्राकुत्रमाराख्यास्य स्वाप्तात्रमार्या पश्चम्बर्गा विक्रानितः स्वाति स्वात র্ষিন'মম'রীদ্র'মিরমমান্ধীর'রীদ্র'দ্রাদ্রা র্র্যান্রীদ্র'রী'অমান্রীর্মাঅমান্রী' र्वेषिः अःर्देषाअः प्रदेः अवदः अः सुअः पः दर्वेषाः प्रदेः रेषाअः प्रशः क्रुअः प्ररः

गहर्नायायनार्यात्

श्चित्राचित्रः ह्वाश्चात्रः व्यव्यान्त्रेशः विद्यात्रः विद्यात्रः

## महिरामा धरायमामी देवान भन् मायामहिरा

मिलेश्वासायम् विष्ट्री । वस्त्रास्त्रीय वस्त्रीय वस्तिय वस्त्रीय वस्

# क्रॅ्रव्यास्ट्रियास्य्यास्ट्रियास्य स्ट्रियास्य स्ट्रि

दिर्में या क्रियम् श्रुम्प्रति । वित्र में या । विक्रमें क्रियम्पर्मा । वित्र स्वर्धि । वित्र स्वर्य स्वर्य स्वर्धि । वित्र स्वर्धि । वित्र स

प्रवास स्वास स्वा

त्राचित्री सर्वित्यस्यक्षेत्रत्राच्यस्येव्यस्यस्येव्यस्यस्येव्यस्यस्येव्यस्यस्येव्यस्यस्यव्यस्यस्य व्यस्यस्य व्यस्य व्यस

गशुस्राया साम्वितायाश्चरातात्ता विताळेसायाश्चरातात्ता से। वीशुस्रायाया साम्वितायाश्चरातात्ता विताळेसायाश्चरातात्ता से।

र्ट्रास्त्री अर्क्ष्यक्षेत्राचे श्रुप्ता वित्राचाराया वेस्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्व

वर्देन नर्धेना साया बेर दाया हिन सदे श्लें दायेन है। श्लाय या हुन नदे रहन अने अन्तर्भात्रम् वी अन्तर्भात्र विश्व के अन्तर्भाव के अन धरः क्रेंत्र प्रवे क्रें त्र शर्र प्रवर प्रवर प्रवे स्था शुर् धर् प्रवे प्रवे प्रवे विषय श्री प्रवे श्चाना सेना स्वारी के सामाधित स्वीत सेना में विस्ताने हिना शिका र्अर्देवःसरः पर्देरः सप्ते र्देवाचे नारः धेवा द्धारा है १ द्वर है । द्वीवाचे सा वेजान्यरः क्रेंत्रमितं क्रिंता स्टाक्कान्य स्टाकान्य स्टाक या नर्देशशुर्वह्यायवेरध्यान् शुरुर्यवेर्नेत्यान हिंहियायने त्यास्य ह ग्रम्याविरास्रूरानाने है। ह्या से देश यह्मा पुष्या धेता हेराने व्यूप्त स्रूरा न-दे-१४५-सम्भून-स-त्य-निर्दिन-देश-गुत्त-त्रश्न-त्रश्न-स्य-सिर्द्य-वी-शुन्ते। श्रुनः होनः स्वनः संदे । स्वायः होनः स्वयः होनः स्वायः होनः स्वयः होन न्यग् ग्रम् वह्रम् प्रायाने केन् स्रीत्र के सार्वे मार्थम् स्रीत्र स्रीत स्रीत स्रीत

नर्डेशने वळन्यारेवि नर्हेन्यरेन्यी होन्या वहुनायवे खुवान्यते व र्देव'ग्नाट'र्ह्वे'रे'त्य'र्न्न'तृ'ग्नार्थत्य'वेट'श्वट'न्नश्वत'न्वरुथ'र्स्ट्रेस'स'सेवे' न्हेंन्यरेन्गी सूराध्यान् शुरापदे सुरेन्ने ने उसाविषा खेन्यर नसून मायानसूत्र नर्डे या ग्रीयानसूया मदे हिंदा ग्रेट्र ग्री सुनि हिंद्र सुन ग्री सुन ग्रेट्र स्व हेर्'णेव्'ग्री नसूव'नर्डे अ'वळर्'म'र्से'रे अ'म्रार'सूअ'मदे'नसूव'नर्डे अ'ग्री' कैंगा वस्र राउट र्रा निर्दे दारी दे ति ही हो कि ति है दाया से निर्देश निर्देश मदे कु सक्र व पें प्र पाउद की या विष्य परि के से दें विया पक्र पे। दे प्यं प नश्रुव नर्डे अ मिं व प्यश्र अर्दे व प्यर पर्दे द प्यते दे व प्रश्र अद्या व प्रश्र व प्रश्र व प्रश्र व प्रश्र व प्रश्र व प्रश्र व प्रश्न व प्रव प्रव व नश्रुव नर्डे अः हैं अः पः पें ने अः वादः श्रु अः पः व्रस्य अः उदः पदः वीः नहें दः वुः यः सेः नक्षुन्नरःव्युनःनर्गेशःनिद्य नेःक्ष्ररःन्नःनक्ष्रनःनर्देशःह्रायःमःभिष्वस्रायः सिंद्येन प्रमान्य प्रमान स्वाप्त प्रमान स्वाप्त प्रमान स्वाप्त प्रमान स्वाप्त प्रमान स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स वस्रश्चर् गुनःसरः शुनः प्राच्यस्य उत् सिव्यान सुन्यः पर्मेत्रसे र धरः भ्रानंते विषयायान धित ते विषा द्यानवे देव हैं। । क्रुव द्रेने पा द्येन देव देश-द्याया-सःश्रेयाश्रायःश्चरःचदेःचन्द्रःचदेःह्रःस्यः यद्याः यावदः पदः ন্ধ্রমের্মির্ট্রামের্ম্মের্ট্রম্বর্মার্ম্রমার্

महिश्याम् हिनाकेश्यास्थ्याम् निश्च स्थान्य स्

ग्रुसम्भे श्रेन्यक्ष्राचित्र देत्र वित्रास्त्र स्त्र स श्रेयात्यःश्रेयाश्वःसदेः द्वरः से द्वाः धेवः सदे द्वेरः खदः सदे सळवः हेदः ग्रेः इर-र्-नेश्रामार्श्वेश्रामार्थी। त्यन् र्ने ने क्रिया क्रियायीय। स्वाप्तिमार्थिया ने खून की क्वें पिहें राष्ट्रिय की निराम का क्वें में के किन समाय मन ने पिहें राष्ट्रिय की वरःवर्थःर्ह्वेःनेःविंवः होन्यावव्यक्षेत्रावरः र्हेन्यान्या रहेन्यवे रहनः सदे वर्ष सर्व निष्ठ के स्वार्थ के धी.लीकार्यम् मुष्ठाकार्या भी भाषी विद्याना का की तु. या कू त ध्यानी इसामा भरावते क्षेष्ठित्रा से प्रस्ता निष्ठी निष्ठी स्तर्भा स्तर सराम्यान्यात्वयात्रः हिंगारायदे कः वदे वहें गात्रायाये । स्विन्धिम्।

देरःचय। श्रुँ पर्देषाश्चरः द्वरः दुः पर्विदः तुः श्रः श्रुः श्रुः श्रः श्रुः प्रदेशः प्रदेशः प्रदेशः प्रदेशः श्रुः प्रदेशः प्रदेशः

अळव'हे<u>न'रूर'न्नर'न्'रूर'में अ'ॲरअ'शु'न्धुन</u>'रावे'म्वव्य'ग्रु'य'से' हेर्ग्रेशरेशस्याळर्स्या ही साम्बद्धाराष्ट्रिया दर्गे सूर्य प्यायापर ळन्यन्दरळन्थेव मे इसन्हे त्य से से दूर्य प्रम्य वर्ष्य में विष्ठ्य प ख़ॣॸॱढ़ॱॸ॓ॺॱॻॖ॓ॸॱॻॖऀॱढ़॔ॸॱॺॱॸ॓ॱॴॸॱढ़॔ॸॱॺॱॺॖऀॱॺॱॴॿढ़ॱॺॺॱऄॱॸक़ॗॗॱॸॸॱ देशन्वीराया ने परामाववाया है सामसा मुनाम से नामरायगुरारे वे वा वर्ने रः श्रें नः द्रें नः खुः द्रन्दः श्रें वे जाल्दः वर्ने :द्र्याः वो :दें नः वर्ने :क्ष्र्रः वळ दः दे। र्शे पहें त अरें त शुअ क्षु तु । यर र र रे वा अरें त शुअ व अ र र वी रें रें नेश्रायाधेत्रायदे कारे हिन्दिंग्रायराद्यूराग्री कर्याधेत्रायदे कार्यः हेवाराया देवे श्रेर स्टर्न्यर र् स्टर्मी मान्य शुःष नश्चर सेटर् नेयायाधित्रायदे ह्वायाधीयाळ द्याय सुवायदे श्रम्भू दासुवाधी ह्वायायया वै ळं ५ अ छे ५ ५ दें हैं गुरु अ सर हो ५ स धिव हैं।

वःश्रूनःयशः स्वां श्रिनः स्वां स्वा

विषानिः स्ट्रिंट्यान्य विष्ट्रिंद्र्या विष्ट्रिंद्र्या विष्ट्रेंट्र्या विष्ट्

श्चित्रम्बिक्त्यावरार्यमा देकित्याराज्यन्तरावे द्वायार्यस्य नुराक्तिरमान्त्राध्यरपदि स्वरप्रकर्ते। क्षर्यायर क्षर्यं सेत्र मी स्वर्या नुने वर्रे हिन्यान वर्षा वर्षे वर्षे ने स्थानिक स्यानिक स्थानिक स्य रैगा ने या ग्री दिन से दाने । सन्न स्नुगान हिन प्रवे रेगा ने या स्वन सवे दिन <u>र्दायश्रार्दाने दें तें श्रित्वि श्रित्व विश्वेरान ने श्री त्राम्य स्थान</u> <u> ५५ में अर्भूट पार्स्स विवार्धि र पर्स्तिवा अपने में से देशे हैं र से र मुहर</u> क्यन्ते ने से त्वन्यं संदेश्चित्रं से नित्रं के नि यर'वह्ना'यदे'शश्रुद्'यदे'ळद्'अ'हेद'यश'ळद्'अ'द्रद'ळद्'सेद'ग्रीह्रस्य' क्यान् हो : शॅर शॅर : देश व : नश्रव : नर्डेश : न ह्यश : पार्नेव : शेर : पर : प्राप्त : रें वेना ने भ्रम्भाव प्यान क्षत्र अवे अक्षव हेन क्षेत्र सवे नक्ष्व नहें अने व सेन स श्रेवाही देवाहीदार्श्वाकाळदास्यावकात्वद्रकावकात्रमायसायाहीवाहे। ज्या. रे. शूर्याता शूर्या हिरावस्था वर्षा विष्यात्र प्राचीता वर्षा वर्षा वर्षा सिव्यानिक सिव्या नदेः क्षन् अरास्त्रेन सदे से रात्र न स्वापित स मधीममित्रमित्रिम्मित्रभावकम्भि।

विविद्यान्तिः स्वर्त्तात्वात्तात्तिः स्वर्त्तात्त्रात्ते स्वर्त्तात्तिः स्वर्तात्तिः स्वर्त्तात्तिः स्वर्तात्तिः स्वर्त्तात्तिः स्वर्त्तात्तिः स्वर्त्तात्तिः स्वर्त्तात्तिः स्वर्त्तात्तिः स्वर्तात्तिः स्वर्तातिः स्वर्तिः स्वर्तिः

धेव के लिया प्रचीत प्रमासी | विवास प्राप्त के लिया प्रमासी से स्था के त्राप्त के लिया प्रमासी है ते प्रमासी के लिया क

र्श्वितः नर्श्व स्तुव स्थापव सं प्यते स्तुतः प्रक्षतः प्रवा । क्रिंतः साक्षु स्थेतः प्रवे स्त्र स्त्र

नुष्यात्वेरःश्वास्य प्रम्याप्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य प्रम्या प्रम्य प

ने प्यम् कुत्र स्वापन स्या ने क्ष्म पानि स्था स्वापन स्या स्या स्वापन स्या स्वापन स्या स्वापन स्या स्वापन स्या स्वापन स्या स्या स्वापन स्या स्वापन स्या स्वापन स्या स्वापन स्या स्वापन स

त्राक्ष्यायद्वी स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्व

दे खून त्र द्रें अर्थे ह्र अर्थे ह्र अर्थे ह्र प्राप्त के प्राप्त

यदार्वि र्वे वदे सूर वळदादे। कंदा सर वी पावया गुःया से पत्रु

नितः स्वा देव हो द्वाराम्यावयाम्या भी भी निसु वियासमान निष्ये द्ध्याने हिन्न् ने सामाने स ग्रम्से सुनानवे द्धया गहिषामध्येत हैं विषान नम्सम् ग्रामधित विमा ने लट.वर्रे.क्षेर.क्ष्ट्र.क्षर्य.वर्षेत्रवर्षेत्र.कष्टे श्चेशःतुशः सर्देवः सरः वर्देदः सवेः देवः यः वहुणः सरः ग्रः नवेः श्चेरः दः रूदः सरानमून'न्वे रापदे'णुय'न्ना ने'सूर'वन्यात्र'र्चेन'सुर'नसून'न्वे रा मः अप्येत्रः ग्राटः स्वरः अरुः क्षेरः वर्दे वा अप्यार्दे नः प्रवे त्यायः वर्षे । वर्द् वा त्यायः प्रवारम् र्रेन्देक्ष्रायां अपने स्वादेष्ट्रियां वे वित्रेन्त्र्यायम् याव्यायां वे अपने वेशम्यान्यस्वायम्बाध्यान्ते साने हेन्या सान्यस्वानि स्वाम् वर्ते अः श्रें वः यं धेवः हे। देः धरः क्षं दः अशः अर्दे वः यं रे वर्ते दः वर्ते दः वर्ते वः वर्ते वः वर्ते वः व नर्डे श्रेम श्रेमश्री देव हो दार हे दार मालया ना सूर देश शे या मालया यत्रम् प्रायुवावाके निक्षानिक दिन्य विकासम् स्वानिक स्वानिक स्वानिक स्वानिक स्वानिक स्वानिक स्वानिक स्वानिक स यदे देव की वावशक्षा वाशवा वर हो दायदे क्षेत्र सर है वर्श की शक्षेत्र वर्रेग्रायार्वेर्प्यराह्येर्प्यात्वेर्प्याप्यस्याध्यावार्याः स्थानवेर्पेर्याधेरा र्दे लेश शुन्ने ।

हैन्यः नेयः नेयः नेयः यन् हिन्द्व्यः यान्यः विद्यः यो स्वार्ध्वः यो हेन्यः नेयः विद्यः यो स्वार्ध्वः यो स्वार्धितः याः यो स्वार्धितः यो स्वार्धित

#### न्दःसिः क्षन् असः नश्नः य

निष्धान्य वित्र प्रत्य प्रत्य क्ष्य क्ष्य

# नः सेन् मित्रे भी सामाधीन मित्रे मित्र मित्र

## गहेशपासुरपिते देव प्रभूत्या

निष्ठेश्यः स्युर्द्रः स्वि । निष्ठेश्यः स्वि ।

प्रस्तित्वे। सर्देश्यक्रेंद्रप्ते ग्रीक्ष्मां स्वर्त्ति स्वर्त्ते स्वर्ते स्वर्ते

यहिश्वास्त्रेन् श्रम् ने श्रुवास्त्रे निर्देश यात्र हे निर्देश यात्र हे स्वर्थ व्यव्य स्वर्थ विद्यास्त्र हे स्वर्थ है स्वर्थ हे स्वर्थ है स्वर्य है स्वर्थ है स्वर्थ है स्वर्थ है स्वर्थ है स्वर्थ है स्वर्य है स्वर्थ है स्वर्थ है स्वर्थ है स्वर्थ है स्वर्य है स्वर्थ है स्वर्थ है स्वर्थ है स्वर्य है स्वर्थ है स्वर्य है स्वर्य है स्वर्थ है स्वर्य है स्वर्थ है स्वर्य है स्वर्य है स्वर्थ है स्वर्य है स्वर्य है स्वर्थ है स्वर्य है स

देतः क्रुः अळद् प्यतः छन् अन्य दे स्वाः प्यतः विकाः प्राण्य विकाः विकाः

नेरः श्ररः याद्रश्रः उत् श्रीः त्रुवः श्रीः याः छ्या । यदिशः श्रः श्रुदः श्रवेः र्खदः श्रः ह्याः याः यायाः यायः यायाः यायाः यायाः यायाः यायाः यायाः यायाः यायाः य

र्नेत्रप्रायि कित्रप्रायि विषय है त्ये कित्रप्रायि कित्रप्राय्य कित्रप्राय कित

याया ने श्वादी द्वादी प्राप्त प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र

ह्याःग्रम्भेतःयःक्ष्र्यात्वयात्वयात् देयाःचित्रः हेत्। क्षेत्रः व्याःग्रम्भेतः व्याःग्रम्भेत्रः व्याःग्रम्भेतः व्याःग्रम्भेतः व्याःग्रम्भेतः व्याःग्रम्भेतः व्याःग्रम्भेत्रः व्याःग्रम्भेत्रः व्याःग्रम्भेत्रः व्याःग्रम्भेतः व्याःग्रम्भेत्रः व्याःग्रम्भेतः व्याःग्रम्भेत्रः व्याःग्रम्भेत्रम्भेत्रः व्याःग्रम्भेत्रः व्याःग्रम्भेतः व्याःग्रम्भेत्रः व्याःग्रम्भेत्रः व्याःग्रम्भेतः वयाःग्रम्भेतः व्याःग्रम्भेतः व्याःग्रम्भेतः व्याःग्रम्भेत्रम्भेत्यः वयाःग्रम्भेतः वयःग्रम्भेतः वयःग्रम्भेतः वयःग्रम्भेतः वयाःग्रम्भेतः वयाःग्रम्भेतः वयःग्रम्भेतः वयःग्रम्भेतः वयःग्रम्भेतः वयःग्यःग्रम्भेतः वयःग्रम्भेतः वयःग्रम्भेतः वयःग्रम्भेतः वयःग्रम्भेतः

हेश्रामान्याव वित्राचित्र वित्राचित्र वित्राचित्र वित्राचित्र वित्र वित

केन्छे छेन्द्रे

यिष्ठेश्रासान्तरासुयागावासिकासिकासिकासिकासिकासिका सुना होत्राष्ट्रराष्ट्ररात्रस्रवायात्रा नवरासुमाग्रवासी होत्रायार्थे धिवायात्रामा यमिकेश न्दर्भाया वर्नेन्या वर्हेन्यान्ह्रा नेप्त्रम्यायाकेशन्दर्भेदी वहिना हेत की नात्र शर्थ अप्यें द्र शर्भें द हम अप्रें अप्या है द राय है द र्थेवर्र्सिर्भे। र्थेर्रिरेटरयमायायह्यामये भ्रीत्रमेत्रानवेत्र र्भेत्रम् हिन्यर न्दर थ्वायवे हिन्यु अर्थे म्यायविषा देव होन् व्यायवे हिन् न्याक्ष्यविदावेषायायार्थेषायायान्यायया न्रार्थेष्ट्रीन्यावस्याउनः में केंत्र, निरम्भ ने निर्मास केंद्र स्थान के किया है किया है से किया है किया न्नरः ध्रुमा धेव र्वे वे या पा स्रे। ने प्यर से रे या पान्या प्रस्य या स्रित यदे देव वस्त्र राज्य के स्वाप्त क यन्त्रायम् नर्वेदेःरेग्रयस्य स्त्रम् विरान्ते न्ये स्यान्यायः ग्राद्यस्य विद वेशमञ्जून होन्याष्ट्रमार्से । निः द्वेमाविष्येषा वेष्येषा हेवायने प्राप्त वाष्ट्रमा ठ८.८चट.सैया.ग्रेश.श्रेश.बुश.श्री वि.श्रुया.यु.विय.वर्षेया.ग्रेश.श्रेय.तर. ह्या विकिताने किर्यास्य श्रियान रह्या विकिताने दिर हैं र केन में है। यदे सर्गि उत्रे लेश गुरायश गुरायर हु। हे। हे गुरे परेंद्र पर श्राय स्था उद्गार गठेगानगमाना हेर् श्री अपावद इस्था श्री र विम्या सर दशूर नर दर्गेर्याद्याप्तर्भारत्वराधुमात्रस्य राज्याचेत्रायाचेत्रायाचेत्रायाचेत्राया वर्गेग्। सर्भहर्भा के त्वेदा दे त्या हे वा हे वा स्वर्थ कर द्राप्त हुना वीश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्र हिन्द्रश्वान्त्रश्वान्यान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान्त्रश्वान

८८११ वे। वे पहिना हेव ग्री नाव या खुया वेंट्या श्री ८ इसया श्री मार्से व रि र्शेट्यार्थं अर्तुः श्रुवायाधीवाव्या र्श्वीत्रायाधीवायीवायीवायीवायाधीवा वया होन्यारी वाववार्षेवान् सेंन्या राज्यान् सुन्याया धेवा वाता न्यारी सुन्य वःह्वायःवर्रः न्वाःयरयः क्रुयः यदेः वर्रेन् ः संस्यायानः स्थ्रनः होन् । परः न्वाः भेवः धरः वया वर्ने न्वाः स्टः कुः भे ससः धरे वसः वसः भ्रेसः धरः <u> अरशः मुश्रायदे रळद् स्थरा गुनः वेदायदे भ्रिम् वस्रावेशमा नह्यामा भ्रीः स</u> स्ट्रायम् । विदेशस्यस्ट्रायात्रवःक्षेत्रायाते स्वायःक्रिया थ्व ग्री द्रो सागुरायर वया हैं ह्या या भेव पा है । स्वा प्रा भेव प्रा से से दाये ही सा पर व गशुस्रायाः क्षेत्रः विषायोत् । द्वान्य स्थ्रुयाः यदिषासः स्थान्य । विष्यायाः विष्यायाः विष्यायाः विष्यायाः विष क्ष्या वार्या भेता है। हे स्थर त्राप्त प्राप्त क्ष्या के या के प्राप्त विवास के तर् र्येट्-वर-व्या क्रेंट्-वेट-वह्या-पवे-ध्रेर-वेश-ग्र-वःश्याका-प्रश्री।

गहेशमञ्चून होत्यानहग्रास्य स्थान्यामा सह याया हे नहीनस नुदे हैं या नार्ये दा से दा शे हो या सु पर्वे हिंगा हो दाया हा नुसार्से ग्राया दा सर्द्धत्यापदे प्रतिहरू । हिन्या स्वाया स्व परःश्लेशःतुशःतुशःपदेःहःतुशःश्रेष्राशः८८ः५त्तितशःधेदःपरः५५ःनदेः न्वीनशर्यं सम्बाधार्यात्रीत्। न्दार्याः सूर्त्रः सुवाधार्ये वर्षानार्येः वेशः र्हेन पदी रदा होन हो अर हैं न पर पेरि से अप त्रेर हैं या न यें द से द हो। हे अ शुःवहुगः य उदाह तुया ग्री द्वी न य श्रिम्य के वदा न दे वद र र न र र व्यवायाधीवावाह्यावादे त्यवाङ्गेवात्वेतः हैत्याववात्ववायाः है वाशुप्तर्येषाः यम्प्रित्यने ने ने ने मार्थ्य हिन् प्रेत्र हैं। ने स्थान प्रमान हैन हैन है ग्रम्भास्य अर्थेट्यार्श्वेट्रायवयःद्याः इत्यायविष्ठः दुः श्रेयः त्रियः चार्थेट्र बेर्गी:हेशर्अपर्वेष्ट्रिंग्चेर्राचेर्प्यक्षेत्रपदेः द्वेर्ष्यकारे देवायार्क्याया गुन भेन हैं। । गहिरा पास्ता इस्तु अन्दर देखा रेग्या कुरिया राष्ट्र देया राष्ट्र देय यदे दिस्य में व्यय स्व मृत्युव यद्या व्याप्य प्रा द्वी वया वेया यदे सुदे क्षेत्रवहुषायर्थस्य स्वाध्याप्य प्रश्तिम् हर तुय"नविव-त्-रे-र्ने प्यट क्षेत्रेय नुवे हिंयानय नुयायर हेया शुन्रेया प ग्राम्भेर्याम्भेर्याम्भायाम्भेरित्रे क्रि.स्याययाभेर्येग्याम्यविदः राष्ट्रा श्री म्याप्त्र स्थाप्त्र श्री भाष्ट्र स्थाप्त्र श्री म्याप्त्र श्री म्याप्त्र श्री म्याप्त्र श्री स्थाप्त्र श्री स्थाप्त्र श्री स्थाप्त श्री स्थापत स्

ने सूर श्रुव होन त्या वहवा या वया नही वया हान पर वा दर्वी न व मुँग्रायःक्र्यायाया न्त्रीन्याद्याद्योन्त्राष्ट्रियःयायानेयार्थः वियान्या यया वित्रे से द्वायदी ने ह्वा श्रामी द्वारे ही दि हिन्य स्था नहग्रायात्रयार्भेतिनाईनामित्रेत्राचित्रप्रमायक्ष्र्र्याचित्रप्रमार्केनाप्रेत्राचे वा व्यक्षः सर्द्धः राग्नीः स्वाः स्विनः स्वाः स्वा यद्धंदर्यासरार्द्धेवारावी देवायाराउवाग्नीया युवियोह्यासे। यव्ययातुः धेव परि द्वेर रें वे या नर्गे दाया द्वें दाया परि के विश्व या में विश्व या स्वाया शुःदर्गे द्वाद्वे ह्वाश्रः श्रेशः श्रें दायर दशुर विदानु अपवे गुरुपार हवाशः शुःदर्गे ५ व ह्वा शःश्चाया सामुनासराद्युरार्रे विशःश्चे व निर्दे । सरामे दिना ने दी त्रवश्यक्रंदशः ग्री सूर केंद्राधिव सर वर्दे दारी क्षुवे ग्रुश सामा नुस्रायदे नुस्रायादेशागा ता हे सासु दर्मे नदे तन्न सानु नुस्राय हु । इस ने छेन सून होन र ने जिन स्थान से स्थान स्य यदे ह्या या प्यत्र वा प्येत वा वही वा या उत् क्षु तुया है न वा न न यहे ही र ने गहेशःग्रे गुरुषःपः परः वर्तः त्रायहग्यायः त्रयः क्र्रेतः वर्देतः यदेः स्वाः केतः धेव'मदे'भ्रेम ग्रुम'म'र्डस'मे स्नुम'ग्री'ह्याम'धर'म्या'धेव'हे। र्धेवाम' क्रॅशःगुनः डेटः नश्चनः गुरेः क्रॅशःगुः हे शःशुः वर्गेः नवेः ग्रुनः यः गुनः यवेः श्चेरः

到I

क्षेत्राक्ष्म् श्रीत्राव्यकात्यायक्ष्म् स्थान्त्राक्ष्म् व्याच्याः स्थान्त्राः स्थान्त्राः स्थान्त्राः स्थान्त्राः स्थान्त्राः स्थान्त्राः स्थान्त्रः स्यान्त्रः स्थान्त्रः स्यान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्यः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्यः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्यः स्यान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्य

ने त्या स्वाप्त स्वाप

ते त्थ्रस्य व्यवस्य अद्धार्य अप्या के द्वी त्य क्ष्य व्यवस्य क्ष्य क्ष्य

नर्गे न् रहेश नह्या शत्र श्रेष्ट्रिं न महें न राधि व राधि से ही म सह दिया श्री व राधि व राधि

ने भूर न्त्रीनशर्वश्रम्याश्रश्यार्गेन्यायापा क्रेश्रास्त्रीश्रेर्थः वेशःहग्रशःशःवर्गेद्वाद्याद्यायायादेशःचित्रः दिन्द्वाया देन्द्वाये स्वायत्या ग्रीसाबेसार्स्यायाणीयार्द्ध्वाया देन्यान्द्रन्त्रियसार्द्याग्रीः सुपद्वापर यद्धंदर्भारावे भ्रीरावेशास्त्राया शुःवर्गे दात्राच्याया सारी स्वार्थे वा सूर्वाया वै। न्रीनर्भन्दर्भवर्भवेर्नेन्या ग्रीष्ठिन्धरन्तुस्य स्वीयायान् ग्रीनर्भा धरःश्वराधरः हो द्राधरः से विश्वराधया दे १ क्षेत्रः श्वराधितः धरा देशन्तरे भुरा द्येरत्र द्या य स्वामाय क्षेत्रः श्री स्वान्य <u> न् व्रीन्र्याभूतार्थ्यान्, या बन् भ्रोत्यानुयानुयाप्ये न् व्रीन्याभूतानी भ्रार्भे ना</u> नर्अं मी अरग्रम्भे अरग्र्या ग्रुया ग्रुया में दे स्ट्रम् त्युना न रहा वर्ष वयः नवे सुर र्रे।

त्री क्ष्म क्षेत्र त्री श्राचित क्षेत्र क्षेत्र त्री क्षित क्षेत्र क्

नुसम्मद्भवद्यास्य स्थित्। स्थित्। देराष्ट्रम् न्रेट्रम्य स्थित्। न्रेट्रम्य स्या स्थित्। न्रेट्रम्य स्थित्।

यहाक्तिक्षान्त्राच्याः स्वत्याः स्वत्यः स्वत्यः

न् भूमः सुभारु विभाने स्वीतः स्वीतः स्वान्यः स्वान्यः स्वीतः स्वान्यः स्वीतः स्वान्यः स्वीतः स्वान्यः स्वीतः स्वान्यः स्वीतः स्वान्यः स्वायः स्वान्यः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्

क्र्यःस्रश्चात्रःस्रश्चेत्रः स्वाद्यः स्वादः स्वदः स्वादः स्

श्चार्ड अप्यश्चार्त्त से प्रयाद्वा स्थार श्चार श्चार

होत्-तु-नर्गेत्-यन्-तु-रुव-तृत्-सून-र्य-विदेशेन-वर्गे-त-वेश-य-तृत्वन् उव-८८-स्टान्स् त्याक्षे विष्यानिते कुः सळव क्षेत्रा हिंदान् उव-८८-सूट सेंदिः शेर-र्-श्रुर-त-शेव-हे। हिंद्-श्री-वेव-धवे-वहेंद्-ह्वे-देव-वर्शे-त-दर-यम् ह्मत्रामिक्षा नुः उत्राद्धारार्भे के त्यायिया या मान्याया निवासाय निवासाय स्था यशहिंद्र महिकादे प्रामी भेटा दुः श्रुराय धेवा परि श्री हिंद्र शे वेवा परि के त्या क्षे त्वित्या ना क्षेत्र है। क्षे त्या क्षेत्र क्षा न्या प्या त्वे विदाय वा प्रमान हिल्ला यदे हिर्दे । देशवायमा ध्रवावेश यदे हुरे हार में के या वहाया य बेर्ग्यूरर्देव यन्या सन्दर्भव सन्त्राह्मर से के त्याविक संदे कु अळव सी अ म्राम्सिंके धीव है। यग माम्मिन्स्य स्वे श्रीमा वे मामिन्स वियायायवियायम्यविम्यानविदार्वे।

स्वानी निर्देश से नि श्वानि के प्यान नि श्वानि स्वानि स्व

हिन परे हिन दिशान दिशा के साथ हिन के साथ हिन स्था हिन स्

गिहेशमं राम्यायकुर्यामञ्चरमा वे केंत्र हिरासरायकर हु। गुः

चक्रोन्द्राच्यात्त्र अक्षेत्र विद्यात्त्र विद्यात्त्य विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्य विद्यात्त्र विद्यात्त्र विद्यात्त्य विद्यात्य व

नायाने हे सूराध्यान्दान्दार्ये इससा सैनायान्दारा सार्वे नायाना रे रे र र र र विव हिन्यर सेन् ग्रम् केंग्र र विव र विव हिंदे हैं के मनिष्ट्रम्प्रम्प्रम्प्रम्प्रम् । प्रम्प्रम्प्रम् । प्रम्प्रम्प्रम् । प्रम्प्रम् । प्रम्पे । प्रम्प वर्गुरान से दारा वया दार विशाने व्यवस्या श्रामाश्या से वाशा हिन धराधेर्पर्यते भ्रिरासे । दे स्थाधे व व र न न न र से न व र से न व र स न व र से न व र स न व र स न व र स न व र स भ्रेत्रपदे तुर्यास सेत्रपर प्रमुरायर वया । श्रेर्स से से देवे त्याय भेर्यम्भभग्रह्म्य विद्याल्य । देवे भ्रित्य । देवे भ्रित्य । देवे भ्रित्य । देवे भ्रित्य । श्रॅग्रथाने में मान्या के मान्या मान्या मान्या मान्या मान्या में भी मान्या मान्या में भी मान्या मान्या में भी मान्या मान्या मान्या में भी मान्या मान् ध्रेर्-र्स-र्स-र्स-र्स्न स्वास्त्र-त्वाराष्ट्रीट्र-पदिः त्रासासेट्र-रेट्ट स्वासादः वर्चर्यान् । त्रास्त्र वर्षे वार्यायते । व्यव्यक्ति । वर्षे प्राप्त वर्षे प्राप्त वर्षे प्राप्त वर्षे । तुःदेवे कुः धेव स्यर तबद ग्री द्वार सुगाय सँगाय संवि त्वाय पुवे कुः स धेव है। वस धर रूर नविव छिन सर सेन सदे हमा र धेव सदे छिन यदिशासाम्रम्भारत्र भी यात्र शास्त्र यात्र शासाम्य साम्य विदानिया यः अवरः श्रेतः यं त्रावः अवितः र् श्रुतः ।

यः अवरः श्रेतः यं त्रावः वितः श्रुतः ।

व्यानः वितः यो व्यावः वितः यो वित

ने प्यत् भे प्रवन्ते। याद प्रश्लेष्ठा स्थाने भे प्रति वस्य र उत् सि हिन मार्चिमाममावश्चरम्बरेम् होत्। होत्। ही हो से मार्चिमामा ने दे दे से स्वार्थितः यदःश्चनः ग्रेनः यदः यदः श्वेनः यदेः श्चनः यदेः श्वनः यदः वनः वनः विनः यः षरःषेर्भायाधीवार्वे विश्वावी स्वातु निर्मेर्गा षरावाग्वाया होवा स्वा यासेन्ने। गुन्यहिन्द्रिन्यने विष्ट्रिन्य सेन्येन् सेन्येन्यन्य प्राप्ति । यःश्रेष्यश्चितः स्ट्रिटः स्ट्रिस्स्यशः श्चेः भ्रेष्यः द्वार्यः स्ट्रिस् स्ट्रिसः स्ट्रिसः स्ट्रिसः स्ट्रिसः स् धीवन्दर्गे अन्तिन्। दे श्रुवा हो द्राया से दारा हो से स्वतः हवा हो दारा धीदा सा नियामाग्रावासहिवानी सर्ववाहेन द्वीया स्वीया म्बर्भाद्रम् कुरारेरासे सेवासास विराग्ता सिंद्र सी सक्त के दार् प्रदेश यानग्राभी ब्रह्मेराग्री ज्ञानस्यास्य साम्यहेत्रस्य स्वार्धित साम्राया र्देव गहेर त्य हे नर अर्थि नदे गुव अहिव ही अर्द्ध हेर हु सून पर अहर मधीत र्ते विशक्ति सम्माम्

महिश्रासाने नियामानात्या मित्यानार्ने नाहेरामहिरायहितावित पर्वे प्यानित्र महिरायहितावित पर्वे प्यानित्र पर्वे प्रानित्र पर्वे परित्र पर्वे परित्र परित

महिश्रामही क्रेंद्रामायदे धिश्चां या महित्रामहे महि स्वरं स

या अः ने अवः न क्षेत्रः प्रस्तान्तः न स्त्रेत् । प्रस्ते वे स्त्रः न स्त्रेतः प्रस्ते । प्रदे वे हिं पा स्वरः प्रस्ते । प्रदे वे हें पा स्वरः प्रस्ते । प्रदे वे हें पा स्वरः प्रस्ते । प्रदे वे हें पा स्वरः प्रस्ते । प्रदे वे वे प्रस्ते । प्रदे व स्त्रे । प्रस्ते । प्रस्

गश्यामानी मुनामानर्से साध्यापन्यार्से या उत्ता में या नार्ने नार्ने मा ग्रीशळन्थाकेन्त्रावर्देन्देग्राशन्। त्रूट्यान्दर्देन्यवेदनेकेन्यवेद्या वह्नाः व्रेंना वनसादरान रुसारा सर्देन सुसाद रेना पासवर द्वित पर सहर धेव परे भ्रम् अव तुरे ग्रम्थ सम्बाध कर से गायम सहर पाउँ स सर्वेदानार्स्याग्रीयाग्याद्वियानार्देनामहेराग्रीपदेनामाह्यायायायायाय ग्री मना देर में अर्वेर रख के ता पर दुर। वर्रे द सवे दे के द न देव न विवे ग्रवशास्त्रम् अस्ति सुस्र न् अर्बेट न में या न देव महेर या है न र यहिं। नदेःगुरुः अद्विरःश्चीः अळदि हिन् धिरुः धन् रने गुरुः श्चे । ने खूः श्चे स्वरं ग्वायः हेः वगानेरासें अवेदाना उसा ग्री अपर्मे वान देता गरे मा ग्री अपन स्रेता पर ग्री अपने ळद्रायदे भ्रे अः तुः धेव व र्शे या निष्य व है र प्रविच । छु र र्ले वा शु में द यर यहेत यर ग्री अ भीवा । यदी अ ते श्री त ग्री दे ग्री त स्तर मुर से द से र शॅग्राश्चर्यान में वार्यान में वार्य में मार्थ में निर्मा में निर्मा में निर्मा में निर्मा में निर्मा में निर्मा

# यहिरामा क्षेत्रा स्वापाया यहिरोर्दे त्या यहा स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत

गहिरायं केंगा स्वायं स्वयं स्वयं

#### स्वायात्र विद्या वे स्वाया विद्या विद्या

न्दःस्या श्रुदःहे केवःस् र्वेषा अदे क्रू रः नश्रवः यः न्दा ने सः श्रुवः पदेः र्देग्राराश्चर नर्दे। दर सेंदी अवय द्या स्वा नस्य या स्वा या स्वर् मदे मुग्रमाहे केत में ने मस्राज्य सहित मह्म न मर हो न माल न न में म र्श्वर्र्राय्क्रीं प्रमेश है। अवयर्ग्यास्यायस्यायस्यास्या श्वेर हे के तर्भे से दुन देशे वन राजा हैं न पर से वित्र राजि हो र है। दि सू नुदे श्रुग्राश हे के द र दें दे प्यार कु से द द द से सश्रुद र पदे कु प्राय प्रमुद र त शेव हो। वर्गे न अवव द्या स्वा नस्य न या स्वा न स्व न स्वा न स्वा न स्व क्षेटा हे क्षे न नु अर में अर पर हिन्यर नु सूर पायर विन पर है र ने भुःतुदे वुग्राहे केत में ने हेन ग्रम् हो न न्या हु सेन सर्गे स्राया र गुर्भामात्मर्थास्त्रवरसेट्रान्द्रेयाने। बस्रभाउट्रासिक्रान्द्रेयाने नदे मुग्रम हे के दार्य अवर मुन्य प्रमुन प्राप्त के वि

गहिरायाने सामुनायदे निवाया सुरानाया क्षेत्रा नाम्या स्थाया स्थाय

द्रिन्न्यायायहेत्रद्धयायाश्यायत्ति। क्रित्ययाद्धित्यायायदेत्यः क्रिन्न्याय्याद्धित्यः क्रिन्न्यायायदेत्यः क्रिन्न्यायदेत्यः क्रिन्यायदेत्यः क्रिन्न्यायदेत्यः क्रिन्यायदेत्यः क्रिन्यः विद्यायदेत्यः क्रिन्यः क्रिन्यः विद्यायदेत्यः क्रिन्यः विद्यायदेत्यः क्रिन्यः विद्यायदेत्यः क्रिन्यः क्रिन्यः विद्यायः विद

न्यविद्रान्त्रिं श्रुक्षाक्षेत्रक्ष्याः विकाली क्रुं स्वर्धन्य विकाली न्या विकाली क्रुं स्वर्धन्य विकाली न्या विक

येव हेर वे नशय न धेव वेश न वर दें।

दे प्यटास्टाची क्रें जा द्वी सार्थे दायवे से वासाय स्वदाय प्राप्त क्रें जा ह्ये<sup>.</sup>स्रासेन्। स्वीत्रास्याव्यात्वयः न्यायाः सः न्या व्याप्तः स्वीत्रास्यसः वित्रः स्वीत्रास्यसः वित्रः स्वीत्रास्य नहेव'म'न्याया'म'हे'याबुट'र्नेव'ळंव'याशुस'नु'यशुर्म्भ प्येव'बेट्य ने'या याधिवाहेवावी प्रमाणा धिरार्से । विश्वासावी सर्देरा मह्रवाधिवावी स्था यामुरायरायन्द्रायाधेदाया देःयदा क्रेंग्यायेद्रशासुःयेदायादावेद्राया वया वस्रयाउदाळे वासर्वेदाया हेता हे सामदे वर मुस्या सुर्वे सा ल्रिन्सदे श्रुव होत श्रृंव ला ने हित लवर । तर से र श्रुं अ अ श्रवा वी सेवा स यःरेग्।यःश्वार्थ्वर्द्वर्द्वर्वेद्वर्वेद्वेष्ये राष्ट्रीय विद्वार्थः विद्वार्थः विद्वार्थः विद्वार्थः विद्वार्थः नरत्युरर्रे वेशपदेरे न्यायाय भे नायाय है। वर्देवे देवा सन्दर्भे विमेत्र हो द्रा हो देवा साम्राम्य साद्दर हो विदेवे देवा साम्राम्य वक्षे विःस्रस्र देवा यः द्वे स्रास्रस्य स्र ह्ये रावाया कु स्टास स्ट वी विद्यान बेद्रमदेश्चित्रमञ्जीत्म ही सञ्चयन महोद्रम धिवर्षे ।

ने त्रमा श्राये से सम्मानित हैं से सम्मानित हैं। ने स्मानित हैं स्मानित हैं से सम्मानित हैं स्मानित हैं से सम्मानित हैं स्मानित हैं समानित हैं स्मानित हैं समानित हैं समानि

र्स्तान्त्र्वान्द्रम् त्रित्त्र्वान्त्रः द्वीत् । स्वर्धान्य स्वर्धित् । स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् । स्वर्धित् स्वर्धित् । स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् । स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् । स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् । स्वर्धित् स्वर्धित् । स्वर्धित् । स्वर्धित् । स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् । स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् । स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् । स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् । स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् । स्वर्धित् स्वर्यत् स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्धित् स्वर्यत् स्वर्धित् स्वर्यत् स्वर्यत्यत् स्वर्यत् स्वर्यत् स्वर्यत् स्वर्यत् स्वर्यत् स्वर्यत् स्वर्यत

त्र्युः स्त्री वित्रेष्ठी स्त्रुक्ष के सक्ष स्वरुक्ष स्वरुक्य स्वरुक्ष स्व

श्रुम्रास्यायात्रीयात्रात्री स्वर्थाण्या विद्यायात्रीय

र्त्त्राचा के न्या के

ने स्वर्श्वर्ते क्षेत्राचार्यं क्षेत्राचारं क्षेत्राचे क्षेत्राचारं क्षेत्राचे क्षेत्राचारं क्षेत्राचे क्षेत्रचे क्षेत्रचे

वश देवे देवा हु प्रकेश अस्य श्वास्त्र देवा स्वास्त्र हु स्वास्त्र हु

मुश्रायात्वरार्देष्यात्र । मुश्रायम् ज्वात्रेश्रायात्वरायात्र विष्ट्रायात्र ।

### क्रुं नः श्रुं श्रें प्रति स्वा क्षुन क्षेत्र स्वा

महेश्याम् श्राप्तान्ता के स्थान्य स्थान्ता के स्थान्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य

नक्ष्यराष्ट्री | श्री राजायार्वे राजे राज्य महित्राच्या विद्याप्ट्री | प्राप्त स्थाप्ट्री | स्थाप

न्दःर्रे है। वास्याना क्रे नार्ये द्यार्था क्रे यास्याना नी न्त्रम्थायग्रुम्म् नान्मन्यम्भिन्यभ्यम् । स्मार्यम्भा वर्ष्या अने राये वर्ष्य प्राया वे वर्ष्य सामे राया है वर्षा सामे वर्ष सामे वर्ष सामे वर्ष सामे वर्ष सामे वर्ष नविवाग्री खुर्या हेन प्रवाद विवाय राष्ट्री न से दे हो ने प्रवाद हा हा न प्रवाद न वशुर्विराधिरार्रे । देशक्षावायायासाङ्ग्रेशसाववावी रेवासाद्वरार्थे न्येर-व-न-कृते-रेग-य-वर्न-विव-विय-यित-हग्रायायया वासयायाः क्रीया अविवानी देवा सन्दर्भे वा स्ट कु देवा सन्ध्य केंद्र दु केंद्र न त्युव मर्भाक्षेत्रम् अप्पेन्यम् वर्ष्यान्य केन्य ने स्थ्रम् सुनाम निष्ट्रम् सुनाम सुनाम निष्ट्रम् सुनाम निष्ट्रम् सुनाम सुना विने हिन्नु अळ्यम क्रिं र निवे त्या पान्य वृत्र पा सर्वे र न निव पी त पाने । याकुःध्रवार्से के विवार्षे न्यर कुर केर कु वार विवासे न्यते कु सळव ग्राम्भेराष्ट्राया प्रदेष्टि सेस्राष्ट्रास्य स्थित्र स्वाराष्ट्र से स्र सळस्रशः र्र्हे र न से र पर पर देर् र पर पीत है। रेश त कु र्रें ग्राह्मर पर बेर्पिते हिरावास्य प्रित्वे सेस्यावास्य स्याप्त स्राप्त्र्य स्रि यासळस्र अर्डे राजा धेरासरा गुरा वा धेरा दे।

स्मा ५७६८ वया द्वीर विश्वास्थ्यात्वा धीर विश्वादत्वर पार्मित या स्री

व्यः उद्दाश्यायते क्ष्र्रेव प्रवृद्दा क्ष्या है 'क्ष्रेत विष्ठ है प्रवाद प्रवृद्दा क्ष्या है क्ष्य है क्ष्या है क्ष

धर्म् निश्चार्यश्चार्य हेर्य निश्चार्य निश्चार निश्चार्य निश्चार्य निश्चार निश्

नेते भ्री मान्य नित्र मिन्न मिन्न स्वाप्त स्व

है। क्रुःसळदाष्ट्रन्यरसेन्यदेधिरर्दे।

र्वेन् हिन्न्यायम् निन्ने स्वाप्त निन्ने स्वापत निन्ने स्वापत निन्ने स्वापत निन्ने स्वापत निन्ने स्वापत निन्ने स्वापत निन्ने

धिन्-नेशन्तर-र्धिः इस्रशहेर-तेत्न्, गुरुप्यायशक्षे, नायरास धेव है। यह सूर धेर हैं हैं गारा यह कें राउदा हो गाया है गहार पेर दिन हैं र्रे ख़र्रे हिंद् शुरे हेर खेद संधिद है। दे इससारे रे यारवारे वार्रे वार्रा য়ৢয়৽ঀ৾৾য়৴ৼ৽ড়৾৾৾৴ৼ৽ড়৾৾৴ৼ৽য়৾য়ৢ৾৴ৼ৽ড়৾৾৴ৼয়৽ঢ়ৢয়৽য়৽য়ড়৾য়৸য় धिरःधिरा देरः अः वदः द्वदः वे वदे द्वाः धेदः क्वें व्यः वहेवः यः धेवः है। धेदः *য়ৢ*ॱ८वॱऄ॔ॻऻॺॱॻॖऀॺॱढ़ॻॗॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॺॱदेॻॖऀॸॱॸऻॻॖढ़ॱढ़ॻॗॖॖॗॖॖॖॖॖॗॖॣॖॖॖॖॖॖॺॱॸऻॶॺॱ यदे हिम् देश हे के प्देवे के वा श्वा श्वा श्वा राष्ट्र है स्था भी देश है ता वहे हैं । राउँ सार् निष्ठुताया देरासा वर् सेवा सेवा सार्वा सार्वा सुत्र धिन ह्रें त्या ह्रें नश्चाह्य निर्देश हें राधिन हिंदी हुन तें वाला निर्देश हिंवा धराद्यूराग्री खुर्याचेया प्रश्रासेस्याचेया प्रासेदार्दे विश्वास्त्री देवे धेर्रात्र क्षात्र मा श्रीत ग्री मा न सुमा पादे प्योत्त हिंत होता है ता न मा पादे हिंद हो। गुर्रासदे रेग्रास्य शुर्रा ग्री हैं स्यास हिराय है रामहेराय स्वरा ग्री से समायदे यशयगयनिगान् भूदे सेगार्सेग्रास्त्र निमाने स्वर्था होता है।

प्रवृत्त्रम्। ध्रित्ताः प्रेतिः ध्रित्त्। ध्रित्तः स्थितः स्याः स्थितः स्याः स्थितः स्थितः

हिनः स्वान्यः प्रवान्ति । स्वान्यः । स्वान्यः । स्वान्ति । स्वान्यः । स्वायः । स्वान्यः । स्वायः । स्व

देशक्षक्षश्राचार्यक्षायात्रक्षे । विदेष्ट्रवरार्श्वेष्यया ग्राप्टरेष्ट्रव्य रेग्रायात्राष्ट्रीयायळ्ययार्श्वेरावरावयुरावाधेवाते। रेग्रयावर्देशवयेवा वेद्राची खुराया श्रेद्रायाद्राय कर्या यदि से सर्याया वैवासा सुर्येद्रायदे हिन् नेशन्। ग्रामीशभ्रामुम्बर्धस्य सङ्घेर् स्थेर हेश सेवाश ग्री स्नानशस्य म यवासः भ्रे अया वर्षा सदे सेवा सन्दर्भे ने हेन श्रेन सर्वे वा अर्थेन सदे रेग्'रास्यायमास्रेगारम्'नस्य न्या ने'र्ट्यक्रियायक्र्यायमास्रे रान्द्राचरुषायदे प्रके सेस्रा श्रास्य ग्राम् देवा पा ही सासक्स्र सार्श्वे रा नरःश्चनःमःहेन्।नन्न्। यदेरःस्रमःमःश्चेन्।मन्दःनक्रमःमदेः सेस्रयानार्मेवासासुर्वरार्भास्यायसास्त्रे विदेवरास्यायसास्त्र नश्चनशन्य। ने न्रा के शासक दिया प्रशासक विष्य के निर्दे न् नर में प्राया सुर्यायाञ्चेत्रपात्तावरुर्यायदे सेस्यायाञ्चित्रयासुर्येत्रपाययाग्रहा न्नरमें भ्रे अपाव्य अळ्यश श्रे रानर श्रुवाय के नाम विवासी

रे'गिहेश'गिरे'ह्नाश श्चिर्या अर्देर'य श्वेश'वा वास्याय प्रति श्चिर श्चेर श्चिर श्चेर श्चे

दे वित्तं के द्वा श्राद्य स्था वित्तं वित्त

यवः खंदः क्च कुंदः त्ये कुंदः त्या व्याप्ता व्यापता व्याप

ठत'धेत'यर'चय'वेँ।।

यर नमून याती सुराणे र क्विंदे कुं पोन न सुरा रेग र व सेन पाने हुना या यश्रापीट्र क्वें देश उत्रेष्ट्रे नायबद्र राधेत विद्या ह्या ग्रह्मेत या ब्रेंश त्रा रैसाउवर्त्र भेत्रपदर सेन्त्री ।ह्याया क्रेवा ग्री शाग्नित परात्री ग्रा उव भेव भरे भे में । जिन हैं सूर अने अ उव निर हैं ग्रम भरे सुर या अ रेसाम्रियाधेराङ्गिः धायमुद्दारावरायमुराम्रीः ख्रयाम् विषाः पुः वाङ्गीः वास्रवः र्वे ले ता सुरु ने ते प्यर सृष्टिते ने साम प्यें न माना सवा नर हो न मा प्ये तामर वया धेन हैं स्यारेय उदार्चे ग्राय धेन प्राय हैं या द्या खुरा की याधेन हैं। धुः सःरेसः उत्रः न क्रेन्। यर नेन्ये धुरा ने यर्देन वा धेन क्रेवे खूद उपाः <u> चेट्र क्र</u>ेत्र खुराञ्चट केवा स्थाय स्थाय ते से यय अप अट्र केवा से या दे रहेत् बेर्यायरर्र्भेर्यायरे प्रेर्वे प्रेर्वे स्वर्थित स्वर्येत स्वर्येत स्वर्थित स्वर्येत पिदे-र्याचयया उर् ग्री के त् श्रुया येयया यत् कुंत् कुर कर् यया यार्षेर न'हेर'र्'दशूर'र्रे।।

त्रीः न्यायीः र्ने विति त्रीः श्री न्या है न्

बुःसदेः खुदः डेवा चेट् क्रे द चेट्ट व्या स्था क्षेत्र क्षेत्र

## श्चे न रू श्वे शेन मेरे श्चुन श्वेन न्याया या

महिरायकि से स्वास्त्र स्व

न्दः में ही नादः प्रकेश अअअधि दाने ही देने देने स्वाभाय दि ही सामक्ष्य अरा सि ही स्वाभाय दि ही सामक्ष्य स्वाभाय दि ही सामक्ष्य स्वाभाय दि हो सामक्ष्य स्वाभाय स्वाभाय है स्वाभाय स्वा

गंदेशमान्त्रे साम्यान्य स्वर्धियात्रे न्यान्ये साम्ये स्वरं ग्राट्सेन्यादे । प्यट्स कुः अळद् । ग्राट्स अस्त्री अस्तर् भ्री स्था अळअअस्त्री स्था बेर्यर वर्रेन्। यर यो शव रे छेर् ह्या शरेवे अध्वर र धेर हें या धर छेर डेशदिश्वस्य देखास्य निष्यास्य निष्यास्य निष्या स्थानिस्य निष्या स्थानिस्य स्यानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स् षिरे देवा या हिन हो खुर यथा न १५ यथा ने ह्यून में बे वा अरथा हु या यरे गुनःसबदेःहेशःशुःदन्दरःदसंरे हे। दे सुनः ने दुर्दः सेटः दुरःनरः वया। गुनः सबदः दे : कॅदः समः सः गुनः पदे : देवः उवः धेवः पदे : धेरः हे। सदमः गुमः यदे सुर देव सेवाया प्रयादिवीया प्रमादिद राया थी। । प्रमादी वाल्ट यूया द्रे न या अ श्रु र पर द्रे पर्वी वा पर्वे प्रयापा या श्रु र त्र या द्र्या न वी पर्वे अ पर्वे । पिते सेस्याने ने सून ग्री समुद्रान्ये मासे मित्रा सम्मान्या न्या नर्ये समित्र शेशशक्त अशास्त्र मुन प्रदे भ्रिन विश्व नर्गे दिस्य भ्रिस निवाने दे प्रदे वर्गेवारातासुरागुरार्द्रि

स्वाप्त्र स्वाप

नेति श्री महिंद्रा क्षेत्र स्वाप्त स्

लर्द्यास्थितः है। तर्दे स्ट्रिस्युम् सेसम् ग्री हेर से द्रास्थित स्थिति हैर विभार्से द्राप्त है। दे क्लिंग् हैर विभागाया से विभार्से विभार्से नाद्रे दिश् द्राप्त क्लिंग् हैं।

यदःश्चितः द्वितः क्रुतः यावतः वितः वितः स्वानः यावतः द्विः स्वानः यावतः वितः स्वानः स्वानः यावतः वितः स्वानः स्वानः यावतः स्वानः स्व

कुंवाहे क्ष्रम्यायाय हे त्रा स्थान हे हिन्यो स्थान हे हिन्यो स्थान हे हिन्यो स्थान हे हिन्यो स्थान हिन्यो हे हिन्यो स्थान हिन्यो हिन्य

पि'ठेगा'न्नर'र्से'गिठेगा'स'ळॅट'र्न'णट'से'स्रेने'नर'त्रय'नदे'सेर'वेस' मदे ह्या शयावत सूर मदे वेश नेर में । । न्यर में सेर मदे खुश यह या क्रेवर्के वे व नगर में से न प्रवे खुरा ग्वव की ग्वन्य क्रेव प्रश्राम प्राप्त प्रवे र्ह्में भुः न से द ने । दे व्यादे दे रहे र त्ये द से सका से द र पि ही र ही । वाया हे सुरु वें वा प्रश्ने अरु वें वा प्रश्न वें वा सुरु के अरु वें का सुरु के वा प्रमावसाया छे विष्या स्वामी स्वामी प्रमाव स्वामी साम्रम हिमा मुनावसायरायस्यायदे धेरावाध्वर हेगानावसाय धेवाने। नियस <u> ननर में ख़्र निवेद नर नुस्या ग्री मा तुम्य नर में निवेद में । ख़्य में ग्री या </u> क्रम्यास्य नित्र्त्तित्त्र्यम्य स्वा देवे स्वा देवे स्वा नन्गः क्रेन्-त्र्व्यान्दे क्रें न्याद्यू राज्या थेन् स्त्री देन न्याद्ये न्या <u> धुवान् नुषाना हेन् ग्री क्ष</u>ेत्र व्याद्युम् ना धेव है। ।

### याश्रुस्रासायत्र्र्य्यास्त्र्यास्तरे कुं। विद्रास्तर उत्रे स्याया बुदाया

याश्वरायायव्यवरातुः व्याप्तिः क्रुः । व्याप्तिः स्वरायायः स्वरायः स्वरायायः स्वरायः स्वरायायः स्वरायः स्वरायायः स्वरायः स

हुर।

हुरा

न्याने खुर्या ग्री सामान्य स्वाद्य निष्या साम्य स्वाद्य निष्या साम्य स्वाद्य स्वाद्य

#### गशुस्रायाधीत्र नेयासुकात्य हेत् स्वागशुस्र के के त्राचायाया

यश्यानाधितः विश्वास्य स्त्रेत्तः स्त्रेत्तः स्त्रेत्तः स्त्रेतः स

त्रांस्या व्यान्त्र्वित् देवे यम् न्यान्त्र्वे । व्यान्त्र्वित् वे स्वयान्त्र्वे । व्यान्त्र्वे । व्यान्त्र्वे

गहैश्यानिवेश्यवाने निर्माणाया सन्नुवाने वास्त्राची सन् न्वावा व्यावाक्री वाक्री अपवर्षे आयर देवा वापाय विवास विवास के रा नविनर्ने विन्न धेर् हें हिंगा या दे त्य या द्वा या या द्वार हा त्वार वी दे र्ह्मेदिः क्रुर्रारेशायरा द्वीं शाया या धेवायरा व्या धेवार्ह्मे वा या दे । धेवाये । क्रॅनर्या ग्रीया निर्मे प्यान्ता निर्मे निर्मा निर्मे निर्मा निर्मे निर् क्रियानवे मान्न प्रमान् स्त्रा स्त्र मान्य स्त्र प्रमान्य स्तर प्रमान्य स्त्र स्त्र प्रमान्य स्त्र मंद्री त्यन हिं या से न सम् कुर्ग न त्य साय सुन न त्यी मारे वि स्वर्ग से न स्वर्ग से न धेरा ने क्षर जेव राया नव्याय ने न्या स्वय द्वर व्योग रायय जेन हैं। सुवा हुदावर्षीन पार्चिन प्रमायकुर प्रमा ने द्वा धेर हिंदे रे या परे हु विन्यम् उत्यो विन्या मान्य प्रमा न्यम् राम्य विन्य विन्य अर्द्ध्रस्थःभीरा भी नदे सुरायदर न्त्रुग्रायात्र मान्य स्थाने

निर्यायाक्रीत् क्रियायाक्रीत् क्रियायाक्री । व्यायाक्रीत् विर्यायाक्रीत् क्रियायाक्रीत् क्रियायाक्रीत् विर्याय क्रियायाक्रीत् विर्याय क्रियायाक्रीत् विर्याय क्रियायाक्रीत् विर्याय क्रियायाक्रीत् क्रियायाक्रीत् विर्याय क्रियायाक्रीत् क्रियायाक्षित् क्रियायाक्रीत् क्रियायाक्रीत् क्रियायाक्षित् क्रियायाक्षित क्रियायाक्षित् क्रियायाक्षित् क्रियायाक्षित् क्रियायाक्षित् क्रियायाक्षित् क्रियायाक्षित् क्रियायाक्षित् क्रियायाक्षित् क्रियायाक्षेत् क्रियायाक्षेत् क्रियायाक्षेत् क्रियायाक्षेत् क्रियायाक्षेत् क्रियायाक्षेत् क्रियायाक्षेत् क्रियायाक्षेत् क्रियायाक्षेत्र क्रियायाच्याव क्रियायाच क्रियाच क्रियायाच क्रिय

महिश्यसंदेवे त्यव्यव्यस्तिम्यान्ते म्यान्ते से त्यां विद्यस्ति स्वान्ते त्याः से त्

व्यायः विवाः विवाः विवाः क्ष्यः प्रति । प्रतः विवाः यायः विवाः वि

चालक्ष्या नुवानीकाक्षेत्राचेत्रेत्र्या स्वाक्ष्याचेत्र्ये ।

स्वाक्षाव्यक्षः विद्या विव्यक्षः विद्यक्षः विद

गशुस्रायाः हेरायेवा ग्री सर्व्य हेरायेवा येवा हेरायेवा स्थायाः व्यव्य हेरायेवा स्थायः व्यव्य हेरायेवा स्थायः विव्य हेरायेवा स्थायः हेरायेवा हेरायेवा स्थायः हेरायेवा स्थायः हेरायेवा स्थायः हेरायेवा स्थायः हेरायेवा हेरायेव

त्रं न्यायर प्रत्या से प्रत्या से प्रत्या से स्वर्ण से स्वर्ण स्

याहेश्वास्त्रीं खुश्वाणी व्यवस्त्राची यावश्वास्त्राच्या यावश्वास्त्राच्या यावश्वास्त्राच्या यावश्वास्त्राच्या

र्यदे नु स्र स्र ह्र स्य न्वाया प्र प्र । ने स्य स्य विव प्र प्र स्य ह्र स्य स्य स्था ।

न्दः में 'दी भेदः क्षें 'र्के अठ 'दी खु अ'दे 'र्क्षिद् 'ग्री'त्र अवक्षा स्वि 'हेद 'खे' त्र अवक्षा स्वि 'हेद 'खे' त्र अवक्षा स्वि 'र्क्षिद् 'स'द्द 'र्क्षेद 'स'द्द 'र्क्षेद 'र्क्ष 'र्क्षेद 'र्क्ष 'र्क्षेद 'र्क्ष 'र्क्षेद 'र्क्ष 'र्क्षेद 'र्क्ष 'र

महिश्रासदिश्यवर्तमानारात्वे। अध्येवरहे। मुनःबेवरक्षेत्रहेनाम्यर व्यवस्थानव्याः मुन्देन्द्रश्यावर्षः हेवर्त्वावर्षेत्रहेन्द्रश्चेत्रहेन्द्रश्चेत्रः मिन्द्रस्य स्थान्त्रहेन्द्रस्य स्थान्त्रहेन्द्रस्य स्थान्त्रस्य स्यान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्य स्थान्त्रस्य स्थान्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्य

ने 'वे 'थेन 'क्वें 'ये देव पा प्रवे 'हेव 'थेव 'प्र'न्याया प्रम् ग्रु हो थेन 'क्वें क्रॅंशरुद्या विन्तरियाराधेन्यम् प्रयानम् त्युम्ते व्युनः वेदासुष्य ग्रीयः श्री तहिवा सम् श्रुभा मदे श्रिम् वाया हे हे तहिवा कु त्यभावहिवा सम् तहिन पशस्याप्याभेवार्वे वित्रा धेनार्त्वे केंशाउदा हिन्दीशाग्री वहेया कुरा वहिवानाक्षे विष्ठन्यम् प्रवा ने विष्ट्र से अपी वहिवा कु ने अपी वहिवा पःवित्रित्रम्हरूषाविवाः वर्त्तावारः वेत्र वेर्षात्रम्वारुष्वा वर्षातः स्थायः वेत्रः यद्धरमायदे भ्रेम मन्यायदे मुयाग्रम के निमा ग्रा के मिना माया वहेगा कु: ५८ सा स्र ५ त युन वे देशे वहेगा धर गाव सा स्र गाव सा स्र गाव सा कु यावर्याक्तुःदेशायावर्यास्य द्वारास्य श्चेत्रित्ये दे त्वा वहिया या न्हें अ'सेंदे के अ'हेन्न् 'खेन्य पद्ने 'ख' पार्देन् होन् सेन्य पद्मेपा हु न्दायाञ्चन्यम् प्यदायदेवायाञ्चेन्यवे भ्रम् वर्तेन्त्र। व्यवस्यवे मुर्गाने कें अ'हेर'धेव'यदे हीरा

याश्रुयायायाद्व श्रुयाद्व त्यायायाद्व श्रुव प्राय्यायाद्व श्रुव प्राय्यायाद्व श्रुव प्राय्यायाद्व श्रुव श्र

यानर्गे द्रायि हे साम देर् द्राया सह द्राया स्वाया क्षेत्र क्

ने प्यत् क्रुन्द स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्य स्थान्य स्थान्त स्थान स्था

गिहेशमानेशमेगाराउदामिवदापानिमारायमानस्वामित्रो है

गशुस्रामार्देव नसूरमंत्री गाया हे सुरा बुरा विवायसा दिसारी है। वहिषा'व'नेवे'भे'वहिषा'मंर'षावर्ष'मवे'कुष'ठे'वेषा'ग्रु'वेटा श्रेष'कु'नेव' गाव्याने सेन्यान प्रहेगाय प्राप्त माये सु क्रा स्थान सेन्य प्रिया प्रीय है। दे महिमायदरमाव्या क्रुया मव्यास्टिन से वुया सर दिना सदे धिर-रें-विश्वायशायहिना-त्रान्यश्च्रियान्यश्चर्यान्यश्चर्यः चित्रः यान्यानाः द्या ग्रम्भाम् स्थाप्त विष्या विषया विषया विषया विषया विषया विषया विष्या विषया कें वदर दहेग सर से द्यूर वर वया भ्रे न उद ग्व सवर खुर दर नन्गायः श्रेंग्रायः स्वान्देशः शेः हेत्रन्य वर्षः याधेतः यादेवे श्रेम् हिनः है। ह्वान्द्रिंशः शुःहेवः वठशः वयशः उदः शेः वहिवाः यरः वावशः यः दृदः धृवः मश्चित्रमित्रिम् देशम् न्या न्याने महावहिना हरा दुवा ह्या धेव व देशे वहिना पर नात्र रासर हो र प्रवे हु रें त नावत नार हे रे रासे वहेना पर होत् से त्राया वाय हे स्ट यह वा स्ट ख्या द्वा प्येत तर हे से यह वा सर यावर्यायर हो दायदे कु देव यावव याद के देया के वह या यर हो दा के वु या नायाने स्टायहिना स्टार्ख्या द्या क्षेत्र तात्र या त्र या त्र या त्र या त्र या त्र यो त्र यो त्र यो त्र यो त चेत्रश्चेत्र्यःश्चित्रः व्याप्तः व्यापतः वयः वयः वयः वयः वयः वयः वयः वयः व

महिरामाने वर्षामान्त्र मित्र स्थानित स्थाने स्थाने मित्र स्थाने स्थाने मित्र हे खुर्या सेस्रयाने व्युत्ति हेत्र न्दर नहेत्र यासाधित ग्रामा समासे विवास ने न्दःन्यायद्यायदेश्यरःसेदेःदेन्। धुवायविवावःवादन्यायःन्याः स्ट्राः यन्तिवित्त्। विश्वाविषायात्रासुश्वायात्रहेत्रायदे ह्यायर विश्वायायुवा र्बेट्-पाकुनविवर्न्यावयायिःहेवयाधिवाधटाकुषावदेयान्यायहरा यदे हेव दर यहेव या धेव कें लेवा धेर हें खुराय यहेव या दरा सर बेविव्हिन्सर्से त्यानहेन पानिहरानहेन दुष्या सद्धर्या सामा धिन है। युकाग्री सुवानु ग्रुटानान्दावर्षेनामायादेशिकामासेनामर हिंग्यायी। मैंस्ररायासँग्रायन्तु होत्रपदे हित्यम् ही क्रियम्यायासँग्रायास्या न् जुरानान्रावर्षेनामान्वा हावसुरानाधेनाय। द्धयावरीने सरासेने वेर सरसे सुयान् जुरानान्यवीनामदे हे सासु जेनामदे सि ।

मिं हे मां कुँ व समिं से दि दे में दिस स्था कि से दे दे दे मां खे से स्था से स्था से स्था से स्था से स्था से स महामा कुँ व स्था व से साम के से से स्था से से स्था से स

नडुन्'लेव्'र्सेन्यार्भेर्यार्थ्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्य

युःश्चित्त्वर्त्त्राच्याः स्थाः स्य

यायाने क्या अर्थेया अरथ्या यसे या दर्श या रशे हो अरथे। हो या अरथे। मुरायायरायरें दिस्यारा स्दायायरावेरास्टरायसेयानरासर्हेटा नशर्शे वे व श्रेंश्रेम्हेंगायदे वेशम्य श्रेंग्रायम्य न्याययाय विगामी के खुश कुश रा से गुश मी क्या सार्से गुश प्रसेय पा के सारत्य पुरा अव्यासदेख्यान्देयाग्रीहेवन्यार्थेन्यदेन्तरामेश्योत्राहे। केंन्यानने श्रृवात्यश्चाद्देशःशुःश्चेशःयाधेवःयदेःश्चेम् र्ह्वमःयःवदेःश्ववादेःधदार्हेशः उवा न्यःम्नाराण्येः स्थार्यायात्र्यान्ये वार्षेत्राची स्वार्षेत्राची स्वार्पेत्राची स्वार्षेत्राची स्वार्येत्राची स्वर्येत्राची स्वार्येत्राची स्वार्येत्राची स्वार्येत्राच्येत्राच्येत्राची स्वार्येत्राची स्वार्येत्राची स्वार्येत्राची स्वार्येत्रा रेगा चुते छिन धरमा बुर हैं व रु है य यथा हु। या यथा हु। या यथित धरे छिन। द्वारा वर्ष्ट्रेशक्षेत्र्वाचि देस्याया सँग्रायाया या स्वाया क्रयाया सँग्राया वर्जुर-वर्वे द्धवायर-वन्दायाधेव है। दे न्या ग्रम् वर यो सेया ग्रुटे देव ॻऻॿ॔॔॔ॹॎज़ॱॸ॔ॱख़ॣॖॖॖॖऺऺऺ॔॔॔ढ़ऻॹ॔ढ़ऻॹॾॱज़ॴऄॗॖॴय़ढ़ॖॱॸऺॺॸॱॺॗॕॴढ़ॿऀ॔॔ॾॱॺॾॱ

होत्रपार्डमाधेत्रपि । त्येत्रप्ति । त्येत्र

मशुक्षाना र्ह्हीं खुका शुं जा कुत खुत पुत पु मिक्रा खुका खान हेता पर पर्टे प्राची वा कि प्राची के प्राची

यः प्रत्यां विष्यं श्रेष्यं श्रेष्यं श्रेष्यं विष्यं विषयं विष्यं विषयं विषय

<u>लर्य तर्रे हे मुर्यं ही अख्य से स्या क से राह्य पार्रे गार् प्राप्यः</u> वयायानार्भेवानास्थि वदीत्थ्रमाममानीत्युकाममानीत्रेयकारीतेवाना <u> २ अःअक्ष्यःयः २८ः सृष्टेदेः स्त्रेया अः गक्षेः गाः नगमः ने दः दशः गवदः ग्रीः खुर्यः</u> हेत धेत सार्वो वा सर नवेद दे। विया हे सार्य स्था सुरा हे द हे द हो राज्य हवा गी'तुवै'धीन'लेशन्दर'र्से देवे'हेर'येव'धेव'र्ते 'वे'वा दें'वा खुश्राशेश्रश्रः बेर्इराग्वेमारुष्या त्रूर्या स्टिश्य विषया स्टिश्य वेशःशॅग्राशःग्रेशःसःसदेःशेस्रशःग्रेःथॅदःहदःग्रादःथेदःसुश्रःग्रेददःथेदः यम् त्रया यास्रदे सुरुष्ते सर्भाया निम्न वर्षे निष्ठा यास्य ने अर्मन्द्राम् के निद्राम् के अर्थाया अवाश्वामे विद्यान के निर्मा विद्यान ८८ हे अ शु अ शु व पर र तु श्ले अ अ श्वर्ण मी रे मा य व्याप्य प्याप्य र व शु यः अवे अे अअावार्षे वा पृत्र है । शूरार्षे पारा है । है पार्य शीवराषी वा या या रा विगायासदे सुरार्वि व तुदे रेगाया दर रें देवे हेर खेव धेव यदे हुर द्येर्-द्र-रेग्-प्र-श्र्-अप्य-पेर्-पदे-पेर्व-ह्रद्र-रेग्-प्र-श्रु-अप्यवद-वर्गु-न्य-श्चित्रम्य स्मुन सः निव् वर्षे ।

यद्गेत्र मान्य स्थान स्

न्दर्भित्री ग्रायात्री ग्राद्यीयात्री त्रमासळस्य स्थ्री स्थेद्र हे या प ८८। दे.वर्षे.वसेव ग्रेट् प्यूर मु श्रेश ग्राट दे.वर्ष स्वाप्त प्यूर प्राप्त स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त स् ठेशः श्रूशः प्रदेः श्रुं प्राप्तुः सर्हितः सळस्य शः श्रूं रः प्रदे श्रुः दे प्रवापादः वे दा वः यत्राश्ची क्षेत्राच्या यदे याच्या यद्दे याच्या यद्दे याच्या यद्दे याच्या यद्दे याच्या यद्दे याच्या यद्दे याच्या वर्देन् सवे श्रेन् सम्मास्य या श्रेन्या सवे न्यव सवे न्यव मार्थे न्या शु येव है। नगर सुगाय सँग्रास देश से सस उव ग्वाबव सी सन्गर से न न नरे न में न सर पर्दे र स्था धोत त सूर्या न सूर्य ही जात्य र र र र या र खेत मासी प्रवाद में लिखा दे सी प्रवाद है। मुन्य मास्त्र मा বশ্বাত্রতার বিশ্বর্ম বিশ্বর প্রত্তির কির্মানী ক্রিন্দ্র নার্ম নার্মিন কর্মিন জী श्रेन्यावर्षित्राचराश्चेशायवे कुःधेवायवे श्वेत्र नेशावाश्चेगा नश्यायानने नमायह्यानदे र्यमाने यान्यने नार्षे नायमें नार्थे नार्थे गहेशाग्रीशानश्चरादशहेरासळस्रशाश्चरानाधेदाद्या देरावया गराया वैजा श्रेन ने सेन परि न्या नर्डे सामाने हैं ने बन पर श्रूर सामित निमा

य्या व्याप्त्र स्था विष्ठ स्था विषठ स्था विष्ठ स्था विषठ स्था विष्ठ स्या विष्ठ स्था विष्

महिस्याने त्या ईन्या स्ट्रान्य ही माया हे स्री न्या विद्या स्था विद्या स्था हिन्य हिन्य स्था हिन्य हिन्य हिन्य स्था हिन्य हिन्य हिन्य हिन्य हिन्य स्था हिन्य हिन्य

भेगानी श्रास्त्र में प्राप्त स्थान स्थान

देशवःवर्रे क्रान्यवा अयर्षे क्रियः वर्षे वर्षे

यळ ५ ने ने प्यामाल ५ ने प्यामाल ५ ने स्वामाल १ कि विश्व मित्र मित

विः तें हो। दे खूरादा कुदायादा तें हो नाया के दार्श ति खुरायाया के का के साथ ते हो नाया के दार्श ति स्थाय ते हि स्थाय त्या स्थाय ते हो नाया के दार्श ते स्थाय त्या साथ ते हि स्थाय त्या साथ ते हो नाया के दार्श ते स्थाय त्या साथ ते हि स्थाय त्या साथ ते हो नाया के दार्थ हो हो ने साथ विष्ण स्थाय ते हि साथ विष्ण स्थाय ते स्था ते स्थाय ते स

यात्राने प्राविद्यक्त स्वार्थित य्या स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वर्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार

ने नमान मुन्यहर्मिय नम्मान निष्य स्थित स्थान मिन्स से न ययर विश्वानित्र त्रायळ र प्रति देव। इसायर विश्वापायश ह्राणवित हीरावासेरायवराधेवाते। खुरासुःसूरावादरे त्रस्यारहरावे केरायायाः ळग्याग्रीयानश्चन्यदे सूनाया दया धेवायदे मुन्दे लेया ग्रामाहेन धेवा या देवे भ्रेर वदेवे वर्षे व *वर्हेवाशः* धुःर्रेयः ग्रुःखुश्रः वर्वेवाः यदेः मयः यदः मुश्रः यरः वत्रः यदः यदः विदा देशक्रेन्छिन्छैन्छोयायायया स्टामिन्स्निन्यायाययाया यान्वराते व्याप्ताया विवादी । देशाया प्रदेश के व्याप्ताया निवाद पावरा प्रवाद याव्य प्रीय कें विश्व ग्रुप्य दे हुसा सम्प्र हो ना प्रीय प्रीय हो हो व यार्बेश्वात्रवादि दे वेषाया निया प्रत्यायात्र पीत दे तेया वासूर परे स्या धर-रही-यायययः विवा-हु: बर-र्रे विश्वाह्य या श्रीवाश्वाधश्वाय विदः र्रे विश्वा श्रुद्।।

दे ज्या विवा विवा विवा श्री त्रा क्षेत्र त्र क्षेत्र त्र क्षेत्र त्र क्षेत्र त्र क्षेत्र क्षे

मश्रुमाग्रीमान्यान्यते श्रुमायन्य विषाणान्य महेत्र समान्यवा प्रमाग्रीमाधितः

थ्रप्रहेत्। शुर्वाया इस्रायम न्यून्यते ह्या विष्या विष्या श्री । नःश्ची म न्याया ना विष्या विषया ह्या विषया ह्या ।

<u>ख्र.स.म्रेय.ख्रश्र.ज.क्रश.स.र.२६८.स्त्र.क्रुं.यश.लूट.प्रेश.खेश.प्र्र.य.</u> र्रे दी वर्रमः धरायमा उदाक्त से मार्थिन में मार्थ में मार्थ <u> २वा ग्रम् मुम्यव मुः स्वरे मुनः स्वरः याप्यः यवा उत्रे द्वावाव्यः विश्वः </u> येव संप्या है ज्ञा है ज्ञा संस्था से समा है हे र से व र र से द षरः अधितः भी देवः ग्रारः वर्षे रः देवा अधितः अवतः के दः प्ररः ग्रः विदेशे रा कुर प्रवाहित सुरा सेसरा ग्री हेर से वर्त पर्देत व सुरा है सुर तु विवा वर्देन न्या वेंब है। ह्या झार या ग्री खुरा हेर यो बार् वर्देन हेरा यह गरा वशायवीं वा ना भी विश्वेर विश्व ग्राटार्सियाश्वास्यात्रास्य दिटायाधियासरानेशासरा सुराह्मरा रेअ'स'देवा'न्या'यह्र-न'न्या'ग्रह्म हो'ज्ञवा'स'यहेर्नास'सूर हो'प्यन' यगाउदार्देवाग्ववरायग्वागायायशायस्य रायदेवात्र व्यास्त्र स्थापिता है।

ने स्यान्य स्थान्य स

क्रम् अप्यायम् अपयायम् अप्यायम् अपयायम् अपयाय

थर'वि'ठेग'तेु'त्रग'र'रे'गहेश'ह्रश'गठेग'तु'वर्रेट'रा'से'वर्द्र

धरःमें व्या ग्रिंदः वर्दे क्विदः स्वः प्यवः यगः ददः प्याः व्याः व्याः व्याः हायर्देरायायर्वेषायाधेवानेषायळ्यायवराष्ट्रयार्थेता यदेरादेशाहेषाह्या गडिना धेर पारमें ना पारस धर धरा हमा महस्र भारत हमा परि । धर यगारुव क से द प्यें द पर नगागारा प्येव वा वदेश वे श्वेच हो द पर से गायारा वेशर्यदे रेग्रास्य परिया धरायमा उत्र रेत्यावत से दात क्षेत्र रेत्या स्था रुटःवरःवर्देर्धवरःग्रथयःवरःवन्तरःयःदरः। धवःयगः उवःदेवःग्वव बेर्'द्र'द्रवर'नेश'य'ब्रूट'र्,'बे'रुट'द्र'ह्रश'रेग्राश'के'स्रबुद'ग्री'र्केंग्रश'रा <u> हे सूर सूर वेश श्रें ग्राया ग्रे ग्रे ज्ञाप राया प्रश्न सूर अहर या वार्य हूँ दारी र</u> गर्वेद्राधराधरायाहेद्राधात्र्यशाद्राध्ययाया उत्तेद्वाण्यव्या स्वरं वेद्या म्बायम्यम् वर्ते । स्रम्भागाद्यम् । वर्षे वर्षे वर्षे । वर्षे वर्षे वर्षे । वर्षे वर ग्रीसम्दर्भी दरस्डुयासम्बद्धसम्प्रेम् सार्थे ।

यश्चाश्वार्यात्र

यर्ग्नायायिः श्चित्र्यायाविकाः वाश्चित्र्यात् स्वाद्यात् स्वाद्यात्यात् स्वाद्यात् स्वाद्यात्यात्यात् स्वाद्यात् स्वाद्यात्यात्यात्यात् स्वाद्यात् स्वाद्

महिश्वास्यवानि देवानि विश्वामी त्यानि विश्वामी विश्वामी त्यानि विश्वामी व

स्व नि ति स्व न्या स्व न्य स्व न्या स्

सर्वेद्राचारायहेत्राचेद्राच्यायायद्वेत् । यमाचिद्रायत्यायायहेत् स्था । यमाचिद्रायत्यायायहेत् स्था । यमाचिद्रायत्यायायहेत् स्था । यमाचिद्रायत्यायायहेत् स्था । यमाचिद्रायत्याय्य स्था । यमाचिद्रायत्य स्था । यस्य स्य स्था । यस्य स्य स्था । यस्य स्य

गवाने 'प्यत' वया 'उत' गडिया 'न श्चेत्र श' ग्राट 'या वत' स' न श्चेत्र श'त श्चेत्र श'त

नेति के निश्च निर्मा प्रति प्यत् विष्या प्रति प्यत् विष्या निर्मा प्रति प्यत् विष्या निर्मा प्रति प्यत् विष्या प्रति प्र

र्थेव निव त्याय हेव प्रवे त्याय तर् दी गर्देर मी प्यव त्यमा उव माडेमा सर्द्धेत् मुक्तामान्युम् रायात्राध्या उत्राव्य म्हाराष्ट्रापायश्चर न्वीयायाप्तिः र्वेत्रायेरास्रवेतायात्रास्रयात्रास्रयात्रा न्वीयायवया धवायवा उव वाववाया वश्चर वावश्चर वाश्चर वाश्चर वाश्वर वाश्चर वाश्यर वाश्चर वाश्य वाश्य वाश्चर वाश्य वाश्य वाश्चर वाश्य वा वर् वर् हैंग्रायर वर्ष्य रावया क्रिं में सूर वर्ष रे से स्थूर वर्ष क्रयमार्था वेया मे विया होता विया प्रवाधिक विया प्रविक विया प्रवाधिक विया प्रविक विया प्रवाधिक विया प्रवाधिक विया प्रवाधिक विया प्रवाधिक विया यवा.क.चरुशाश्चायायसेषायदे। यद्येषान्यवाशास्त्रीशासानिषायाचित्राचीशा र्देव विन । ने सूर सुरा शे प्यव त्यना उव रनारा या करो न न विना हु से न धरःश्रुवःधवेःहण्याःश्रेःश्रुवायःर्र्वयाः श्रुवःधवेःरेण्यः धराद्याः वस्रुवः वेदः वयःह्रम्यार्थः द्वीद्रायः द्वी भ्रेशः सुदेश्ययः स्रीः ध्वरः ध्वाः उदः स्रीः स्वीयाः य कें राज्या स्वायायाक सेराविया पृष्टिराया से दाने। वार्षे से वार्षे सेवाया विषयान्य वात्र अपने प्याप्त विषया । उत् । तु । अपने । विषया । नेवे श्रेम

यिष्ठेश्रायानगामायायाविद्वासार्वेदायाया ध्वरायमा उदादेवामावदा बेद्रवाधीर्देवर्तवरःलेशाधिश्राक्षीर्हेण्यायर्ष्ययावाञ्चरावाद्रा देशा रैग्राशं उत्राग्वतं प्यराविग्राशं रात्रह्रत् यात्रा प्रतायगा उत्रित मर्दे। । न्रम्भिन्ते। यम्यम् उत्रम्भम्यविष्ये न्या स्यास्य यम् स्यास्य <u>५५.सदे.स्वासासस्य ५५.५म् सामास्य ५५.स्यास्य ५५.स.स</u> ग्रवशः भ्रम्यशः हेर प्यश्रः सायस्य शर्मिशः निरा दे प्रम्य दरः स्या स्या स्वा स्व हिन्यर उत्र न्य हुर यदे न्य नित्र न्य नित्र नित्र के यह वित्र नित्र के यह वित्र नित्र के यह वित्र वित्र के वित् ह्याद्यास्याधीत्रायवे धीरावे त्वा ह्यायाद्यार्थी प्रवास वेश ॻॖऀॱॸ॔ऄॻऻॺॱक़ॖॆढ़ॱॸ॔ॖॱढ़ॹॗॖॖॖॖॖॖॖॣॖॖॸॱॸढ़ऀॱॻऻॿॖॻऻॺॱॸ॓॓ॸढ़ऄॻऻॺॱक़ॖॆढ़ॱऄॱड़ॖ॓ॸ॔ॱॸढ़ऀॱ वावर्थः भ्रम्यरु । नृत्यः भ्रम् । व्याः भ्रम् । भूतरायराष्ट्र-पर उत्-त्यूर पदे ग्रा<u>च</u>्यारा ह्यरा दे न्वर के राग्ने ग्राबुदःधुयः दुःद्रगुरुद्रवे अःयःदेवे धेरा ह्रग्रथः गृहे अःयः अःग्रुवःयःदे। नुयामार्केशाउदा मुयास्व सेवाममात्रया न्नरमेवि सर्वास्व सुयार्केन समाम्मा स्थानिक स्थानि

याड्याची वा स्वायायाच्याचे क्ष्या स्वायायाच्याचे क्ष्या स्वायायाचे स्वायायाच्याचे स्वायायाच्याचे स्वायायाच्याचे स्वायायाच्याचे स्वायायाच्याचे स्वायायाच्याचे स्वायाच्याचे स्वायाचे स्वायचे स्वायाचे स्वायाचे स्वायाचे स्वायाचे स्वायाचे स्वायाचे स्वायचे स्वयचे स्वायचे स्वयचे स्वायचे स्वायचे स्वायचे स्वायचे स्वयचे स्वायचे स्वयचे स्वयचे स्वयचे स्व

यादः द्वाः स्वाः सः धोतः तः ह्र सः शुः सः शुः सः शुः तः शुः तः स्वः यदि । वितः दुः हुः यः श्वतः धोतः तः द्वाः वितः यदि । यतः वितः वितः यदि । यतः वितः यदि । यद

गहिश्रासानेश्वानेश्वान्य उदायावदाणमानेग्वान्य सम्मान्य स्वान्य स्वान्

गशुस्रायाध्य विषा उत्र देवा वावन खें दाय वे श्रुवा हो दादा दे । नहेन'मदे'र्धेन'न्न'चे'न्नम्'न्र'न्मम्'म्'य। न्नर'नेश'ग्रेश'सर्वेर'न'य' यत्यम् उत्रेत्रम् वत्रम् र्यायम् अप्य प्रमान बेर्-र्-इयानःश्वरनर्दे । १८० में दी हे ज्ञानान नाप्यतायना उत्र देवा ग्वितः पॅरि: प्रवे: प्रवरः ग्री अ: प्रवरः श्री अ: यः श्रूप्तः प्रोतः ग्री: पे से प्रवरः प्रवरः नेशःग्रीशः अर्वेदः नरः शेष्युरः रेष्वेशः श्वानः देष्ठेदः प्यवः यगः उवः देवः मालवर प्यें र प्रवेर श्रुच हो र र हें मा पर पर्वो मा प्राप्ये वरि । वरि गर्भर-र्शेग्र-१८८६रा-१८८४: ई.क्रॅंब्र-थ-र्शेग्र्य-४:६-४५८:५५८: नेशायाञ्चरायाक्षीयवर्षाया देखायात्रया उत्तिवाव्यक्षेत्रया धेराने। ह्यारेग्रांशे अधुवाग्रीशाह्या थे हैं या पान्ने प्राप्ता गुवापि सन्नदः धेतः संदे ही रः दे।

मान्वन् प्यतः निवान् स्त्रीत् । स्त्रिम् स्त्रीत् । स्त्रिम् स्त्रीत् । स्त्रिम् स्तिम् स्ति

क्रेव गश्यास्त्र म्याया प्रवास्त्र म्याया स्वर्धित म्याया स्वर्धित स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर

स्वासाश्चित्रायदेत्राणतावयाताते। सर्हत्यायि श्चित्रा है स्वासायहैत्याय्या श्चित्रायाये स्वासायहैत्याय्या स्वासायहैत्याय्याय स्वासायहैत्याय्याय स्वासायहैत्याय्याय स्वासायहैत्याय्याय स्वासायहैत्याय्याय स्वासायहैत्याय्याय स्वासायहैत्याय्याय स्वासायहैत्याय्याय स्वासायहैत्याय स्वासायहैत्य स्

ल्यान्य क्षेत्र स्वाचित्र स्वाच्या स्वच्या स्वच्या स्वच्या स्वच्या स्वच्या स्वाच्या स्वाच्या स्वच्या

नायाने नायो सामान्य हुत स्वाधित स्वाध

ग्रांभः हे 'धव 'यग् 'उव 'र्देव 'ग्रांबव 'से द 'ग्रांट 'धव 'यग् 'ग्री 'र्दे 'या स्थान स्थान हिंदा स्थान स्था

द्याया मिन्नाया प्रमाणका स्वाप्त स्वा

मालवाणा है क्ष्रित्र ज्ञानका क्ष्रित्र निर्मा निर्मा भेता निर्मा भीता निर्मा न

देशवास्त्रःश्वास्त्रःश्वास्त्रः श्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वस्त्रः स्वास्त्रः स

महिश्रासाश्चामान्ति। नुस्रामान्यसाम्यान्यस्यान्ति। नुस्रामान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रसाम्यान्त्रस्यान्त्यान्त्रस्यान्त्यान्त्य

यात्राने त्वन्यायार्वे स्थान्य यात्र्यायात्र्या यात्राने त्वन्य यात्राचे यात्राचे विष्णे यात्राचे विष

णयाने गुनायाने स्वाधानि स्वाध

नन्ग्रासिर धिव र्वे वि वि वित्र केंश देव ग्ववव यस सेट वहुगा स दिसा शेर-दर्। दे-भेद-भवे-भेर-चन्न्याय-भेर-हे-बिय-च-प्रदे-भेद-कु-यळंद-गद्दाय्य स्थान वर्षे द्वारे देव ह्या चर्द्दा संस्था से द्वारा स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स र्देव से दारे श्रुम प्यान स्थान स्था धरःवया रटःवशःर्देवःचाववःधवेःचटशःग्रीःकुःशळवःठवःश्रेवःयदा नगरःश्रेष्यशःवर्हेन्द्रविःश्चःवेःश्चःत्रस्यःग्रद्यःस्थेवःववेःश्चेरःवेयःयःश्चे दे प्यटादगार से प्यें तात्र प्यें ता प्रशास्य प्राप्त वितास है । प्यें ता वितास है । प्यें ता वितास है । प्यें हरासेन्या न्यान्यं वाडेवाविष्यं स्वान्यायाः वान्यः वाह्नान्यः वाह्नान्यः वाह्नान्यः वाह्नान्यः वाह्नान्यः वाह् <u> नगर-र्से निह्न प्रते श्वाह्र स्थान्य स्थान स्थान</u> इश्याव्य सेट्या केंश्ये वेया स्थाय हिंद्या स्थाय हिंद्य स्थाय स्थाय हिंद्य स्थाय स्थाय हिंद्य स्थाय स्थाय हिंद्य स्था हिंद्य स्थाय हिंद्य स्थाय हिंद्य स्थाय स्थाय हिंद्य स्थाय स्थाय स्थाय हिंद्य स्थाय स्था स्थाय स्थ म्रम्यायम् वयायिः भ्रुवाने सेनाने विकास्य विकेति ।

भेव'रादे'र्धेव'हव'ह्रभ'ग्वव्र'भेट्'ग्यट्' यथ'र्द्रे ह्रभ'भेव'ह्रभ'र्द्रे'यथ' भेव'वेश'रादे'श्च'र्देव'स्त्रमुव'रह्ग'रा'राविव'र्दे।।

गशुस्रायाने सामुनान क्षामान । यह गायाने वासेन । त्रामान स्थान । या । क्रिंश क्रिंश रुव निर्दे प्राये क्षु क्षे त्वन प्रमः वयः नः श्वरः नः निर्माशः ह्निन्दरः केंग्रसः ह्निन्धे त्वद्याय व्यापा श्रूराय गाहिशा दराधि वाया हे तुस्रामान्द्रानुस्राम्यान्साह्र्याचान्द्रान्तेत्राचेदान् देग्निव्यन्त्राध्यान्या <u> ५८.लूच.४५८६४१६८२५१५५१ चेत्रासह मट्याट्या क्रासह देवा से.२८.</u> र्शेन्द्रिते खून्या वे याया कृत्वे ते जुना ह्या हो। वाद्या या विकास विकास कि वाद्या वाद्या वाद्या वाद्या वाद्या वित्यार्श्वेर्यायेत्राय्यार्थातेत्वा केंग्राकेश्वर्याद्यार्थे श्वेर्याये कुषाने परे पोन है। तुसामये मारका वेकामा कुत्र नरें का में पर किंका हैं न नविवर्त्नम्भवरमानादाधेवरमाने । धदानुसामवे । मूद्रसादे । मूद्रसादे । सूद्रमा । नवे । केंसा शुः शुः राये वारमा भू तुः वारमा वावन यमा हिन् यर तुः वी वर होन् या धेन या दे निवेद दुः सँ र सँदे निवेद साने र सं ने साम पर्दे दाया से र र्सेवे के सामान्त्र गुत्र ह्ने धुयान् वस्याया सेन् सम् हे भ्राम्यायमः र्शेन्द्रितिः वृत्रानित्रानित्र नानित्र नान्त्र स्थित् । स्थित्र स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् ने मिलिनशासि के शामित मुंदि निम्म हो नि कि निम्मित के मानि ने मिलिन मुंदि के सिम्मित के मिलिन मि ॲं'ग्रेग्'रॅं'दे'हेर्'न्हेर्'ग्रर'ॲर'ॲदे'ह्य्रिंक्र्य'वस्थ ४'उर्दे हर्

द्याः देवा के अध्या के अध्य के अध्या के अध्य के अध्या के अध्य के अध

गिरुश्यास्त्रीयशहूँ न्द्रास्त्रीयशहूँ न्यायश्यास्त्रीयशहूँ न्यायश्यास्त्रीयशहूँ न्यायशहूँ न्यायशहूँ न्यायशहूँ न्यायशहूँ न्यायशहूँ न्यायशहूँ न्यायशहूँ न्यायशहूँ न्यायशहूँ न्यायश्यास्त्रीयश्या हिन्या श्री स्वायश्यास्त्री स्वायस्त्री स्वायश्यास्त्री स्वायस्त्री स्वायस

ह्य-प्रतः द्वी-प्रश्चित् प्राचित प्र

त्यान्तरे श्वान्द्रणामा से दावे या न्यान्तर स्थान स्य

देशन्तः लेशन्तुः केशान्त्रन्त्रा देवाशन्त्रियाव्यान्त्रः नहिन्यन्त्रा ध्यतः यगा उत्र देव गावत नहें दारा देश क्षेत्र वा राहे दा दार के गावा हे दा दारे का यर'ववग्'न्वें अ'य'भ्रेत्यर'ष्रया नेग्रअ'ठत'वहें न् ग्रूर'भ्रे श्रें र'व'न्र' ळॅंग्रांस उत्र नहें न जुर श्वेंट नवे श्वायने ते ते ग्राय न ते ळेंग्राय । निर्देन्यते श्रुते श्रें श्रें र प्रतेन्यते श्रुत श्रें र साधित प्रते । हिन्य र धित प्रते । मुन् यन्यग्नान्यायम्यम्यम् वित्रम्यम् वित्रम्यम् वित्रम् ग्रा व्याया विया प्रति द्वा क्षु क्षु मानाया मुर्गिया परि । दे १ १ १ मानाया विया प्रति । वा ब्रवाश छिन वा ने 'न्न रहें वा श हो 'तु स स ने 'छिन रहें श ग्री 'प्यत 'यवा 'तृ 'तु स हे नसूत्र म्यानु सम्ये मा बुम्या देया स्टार दे व से मा लेया से दे परि तुया यदे हिन्यर ने बुद सेंद्र सेद यर हैं खुय न् न सूद यर हेन् यदे हिन् नन्द्रायायायायवे स्वायायदेया उत्तर्व में देखायहें द्राया स्व मालवाययराने। विंतामालेवान् सक्षेत्रासमामाहेन। समान्ति।

निहेश्या सुर्था स्वा स्व स्थित हिंदि हेर स्थे द स्थे द स्व स्था सिहेश स्था सिहेश स्था सिहेश सिह

र्वेत्र स्था क्षेत्र हिंदे हेर से द्वा क्षेत्र हो । द्वा स्या क्षेत्र स्था क्षेत्

तेःह्वाश्रःश्राचारश्चे द्वायश्वःह्वाःशःयाठ्वाःहेदःधवःदिःवाःदिःशः वःष्परःकुदःवोठवाःषःधदःकुःश्वःद्वाशःद्वाःश्वःद्वाशःह्वाःशःह्वाःहःहेःवरः व्या देवःहेदःवेदःह्वाःश्वदःदुःशःद्वाशःह्वाःग्रःदुशःवाठवाःहःधदःक्विःवाः व्या देवःह्वरःवेदःह्वाःश्वदःह्वाशःह्वाःग्रःदुशःविवाः व्या देवःह्वरःवेदःश्वःश्वदःह्वाशःह्वाःग्रःदुशःविवाःहःधदःकुःश्वदः व्याःविद्वाःह्वरःदेशःग्रेःदुःश्वदःकुःश्वदःदेविवाः देशःग्रेशःग्रुदःविवाः स्वरःविद्वाःह्वरःदेशःग्रेःदुःश्वदःकुःश्वदःवादःविवाः। व्रुशःयवेःह्वदःवादेःवाःश्वदः स्वरःविद्वाःह्वरःदेशः।

सरम्या हिंद्र प्रज्ञान स्वाप्त स्वाप्

यात्राने तिश्वाम् विश्वास्त्र त्यक्ष त्य विष्ट्र निष्ठा क्षे स्वास्त्र क्षे स्वत

क्षेत्र'य'ने संग्वाह्म स्वाह्म स्वाहम स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म

यायाने न्त्रायाया श्री का न्या न्या अवा उराधिन स्त्राया न्या या व यदर:रुशःगठिगःराःठवःग्रीःशेयशःगठिगःगीः कुःधेवःग्रीःरुःयदेः कुःशेवःर्वेः वे ता दें त न्त्राया स्कृत्य वेदायाया स्वायाय रिया वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स न्त्रग्राशःग्रीः कःनुः अःगुरुः वैन्याशः योनः द्वितिः क्रुनः नुर्गे अः यदेः ध्रेन्। वेः क्षेः इना विव र्सेन्य अप्येन हिंदे क सर दुर है क्षेत्र स्पेन प्रश्न से हैं होने न धेव कें बे वा कें व नहें या हुन यर सेन या निव न न व का निव न वज्रुरानः कें अन्ते प्येत्रायते भीत्र प्रतिन्य न्त्रन्य स्वाया वित्राप्ति । प्रतिन्य प्रतिन्य प्रतिन्य प्रतिन्य देवे के ने याया परा वायया थे वायया थे वाया थे । ह्यू रायर पें रायर वर्गम्। विचासे। वर्गसानुःगानः विगानानः गीः वर्षयः वर्गमः न्यान्य वर्षयः वर्षीन शन्दर् , वर्षु र न से द र र ने रे दे र दे साव वसा से द र दे से से दे स वःगल्दायदेःद्रवायोःवस्यावे यदे यो वात्रे प्रवायाये द्वित्र द्वित्र द्वित्र वि धेवावा न्त्रवाशाह्यायवसार्थे ह्यायायार धेवा न्रासे सुरावा रेसाग्रीशा ग्रम्भेर विद्या विष्य प्राप्य कर मम्पर प्राप्य विष्य प्राप्य विष्य प्राप्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य

ते स्वरायम्य स्वरायम् स्वर्यम् स्वरायम् स्वरायम्यम् स्वरयम् स्वरयम्यम् स्वरयम् स्वरयम् स्वरयम् स्वरयम् स्वरयम्ययम् स्वरयम् स्वरयम्यम् स्व

## इगामादके सेससामाससामितासाम्या स्वासाम्या स्व

त्रुवायाविकः सेस्रस्य स्वास्य स्वास्य

र्स्याने साम्रमानी खुर्या भून के मान्दर सेंदि हे र खेत न्दर्ग वर्षे माने साम्रमानी खुर्या भून के मान्दर सेंदि हे र खेत न्दर्ग वर्षे साम्रमानी खुर्या भून के माने साम्रमान के म

दें त पर्दे द विस्रका क्या की पर्दे का क्या वा बुवाका से द र द भी प्रदेश हैं। शेस्राध्य प्रम्यम् प्रम्य व्या ग्रम् या स्वाप्राधेन द्रम् भे प्रम्य प्रम्य षिर्मा शुः क्रुं निवे नर देवि खुर्मा क्षुत्र है ना दर में ला हेर लेव से दासर वश्रुम् में लेखा महम्रासेन मुंदिर प्रमें प्राप्त पर्मेन प्रमास कर में के प्रमें के प्रमें प्रमें प्रमें प्रमें वरःगीः भ्रेः अळे रः श्रः अः श्रः गा त्रु गा अः अरे रः वर्षे अः यदे रः वर्षे रः । विस्र अः ग्रीः नर-देविःखुर्यान्वनः भूत्र-डेना-त्र-से ते भ्रेतः प्रेतः हेर त्येव सी सु हेत् प्येवः है। देशन्वनाः कवाराः नर्झेशायदेः खुर्याः ग्रीः सः वेदः ना बुवाराः सेदः विस्रयाः दशः येव र पेर प्रायम म बुगम से द वस पर्से स परे परे द र परे न र दे दे *वाह्रदायाद्वरायर ज्ञायाद्वा क्रुयायर ळदायाधेद ग्री खुदायेया* दुर्वि र्नेश्वान्त्रभावित्रभाव

ने त्थ्रम् प्रके । प्रवेश्य अध्या श्री अप्रेश श्री अप्रेश प्रिम् प्रवेश वित्र प्रिम् प्रके । प्रवेश प्रवेश अप्रेश श्री अप्रेश श्री अप्रेश प्रवेश प्र

ने दिन्द्र हैं या निविद्य ने त्या विद्य ने

ण्याने निया मुना हो। के प्यनित से मार्थ मार्थ मार्थ निया में निया

म्बर्धित्राक्ष्य विष्ठा विषठा विष्ठा विष्ठा

गहिरामार्गे सरामार्शेन् ग्रम्स्य स्थेन् नुप्ते वार्या स्थित स्थित

बिन्। विन्ना

महिरायन्य मह्नाया ने महिरासे सक्दरायि क्ष वळन्यधेताने। नेप्पर्या केर्या प्रमुद्ध केर्ये में निया ह्या श्रा भित्र प्रमु हेव नहेव र न्द्र तन् हिया श्रुर स तन द विनाय से दे र नर में सर नयारेग्यायदर्भ्याय्याययाष्ठीयाष्ठीयाष्ठिर्परर्,प्रशुर्पायाहेयाया क्षेत्रायाने करावश्यके अद्धरमायमा क्षेत्राया धेता वेता ने या अर्केरमाया <u> ५८.कुवे.ट्रॅ५.ज.५.चिक्रेश.स.क्ट.चश्रास्त्रया स्त्रीत.र्.चेल.चर.चर्स्रेय.स</u> वै। व्याने वियापाया सेवायापा है। दे प्याप्त सुन विष्यु मान् विशाने यायाने श्वराष्ट्रिया विन्तर हैं याया ने वें सावस्तर ने विन्तर द्ये अप्तायायात्री अत्रायादे त्याया से दार्थे मार्थे विकास से केंद्र या स यव गडिना में समार हुमारा है सुर प्यार सकेंद्र साव प्यार हैं या सूर स गैर्या भी हो हो ने विकास के निकास के निकास के निकास है। विकास के निकास है। विकास है। विकास है। विकास है। हेत्राग्त्र्याय्याधेत्रधेत्र वेयायाः कृतेः र्हेत्राययेयाः र्ग्ययायाः कुः भ्रमायरः वशुर नवे भेर वे या पर्वे।

नेश्वा स्टानिवन्ते विद्यास्य भी विद्यास्य विश्वास्य स्टानिवन्ते । विद्यास्य विश्वास्य विश्वास्य

विश्वान्य विश्वा

नहें न न्दर ने अर्दन र्से ग्राय है । हिंद र्से अ ग्रिय रें पे र स्टर्न य सबदःसेन्न्वयानावबन्धरःस्र्रेन्यानेत्या वीस्रायान्यन्ति शुर्याया शे रेहें शायर राया निया का यह वा या स्थान स्थान स्थान वि র্বীয়য়৽য়৽য়ৢয়৽য়ৼ৽য়ৣৼ৽য়৽ড়ৼ৾য়৽য়ৼঀয়ৢয়৽য়ৼ৽য়৾৽য়য়ৣৼ৽য়ৼ৽ रेग्रायद्रस्याययाष्ट्रियारेयाग्रीयास्रीत्र हेंवानस्ययरिग्याद्राष्ट्रीः अजावन में दर्भ में दर्श हिंद्र सर हेद्र सर दशुर न धेन हैं विश हैं। हिन नसून नशा नहे से ग्राम सुँ सारा यदर दन् हैं या सुर सारा देश सर क्रेंश्राधी द्वींश्राम दे रहंद नदे हिर रद्द वी रद्द वी श्राद्व वा वी विश्व हेंद्र प वै। नक्केन्द्रन्तेशन्द्रार्शेषाशक्षेश्वारुष्ठ्य हिन्नेश्वराधन्त्रम्य सेससायार्द्यां प्राचीसायह्यायराद्यूराहे। हिंदावीससायराज्याया वा र्हेविःरेण्यावरारेःरेःश्चेर्पायास्रराद्यावरात्वेवतरहेंवारेःरेःशेः न्वीं यायर प्रवन् हें वा वाहेवा प्यया ग्राम् नेवाया प्रवाह ने स्वाह ने स्वाह ने स्वाह ने स्वाह ने स्वाह ने स्व नदे सेसस ग्री पिंद प्रदाये न प्रदेश प्रदेश के प्राची के प्रदेश के <u> ५वा:बः त्रवः त्र्र्रः वी:वर:५:८८:वीश:वहुवा:घ:५८:५६,वः&:५८:</u> ग्रोरायार्थेग्रायारायर्वायार्थे रावेग्रयायरात्र्याचेत्रायार्रामे प्राप्ता ग्यायदान्द्रान्त्रवाद्रादे ने म्यायदा द्वी साञ्ची दारान्त्र साची त्यादा है। साद्र म्याद्र सा होत्रप्रदेश्चित्रासुराम्हेरायाके सारायाके सामी मानाया विवासी । यादाद्या ।

श्रेश्वर्था। श्रेष्ठ्राचान्त्रेत्रेत्रेत्र्यायाप्यद्यान्त्राच्यात्र्यायात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र हेव्यत्रेव्यत्रेत्रेत्रेत्र्यायाप्यद्या नाववर्त्यक्षेत्रेत्र्यात्र्यत्रेन्यायाः श्रेष्ठ्राचेव्यत्रेत्रेत्रेत्रायायात्र्या नाववर्त्यक्षेत्रेत्रेत्यात्रः हेव्यहेव्यत्र

ते स्वर प्रवाद हैं या या शे सूँ शायश रहा में पह हो या स्वर या या स्वर या स्वर

ने भूर के भागित अर्थे क्षंत्र प्राप्त स्थान स्य

ने न्वायः हिन्यः श्वर्या विष्यः विषयः विष्यः विषयः व

तुः त्येयः नः उत् ः श्री श्रे श्रे श्रे श्री नः विद्वा स्त्रे श्री नः विद्वा स्त्रे श्री नः विद्वा स्त्रे श्री स्त्रे स्त्

ने भूर क्रें त्र विषय प्रति प

देशवानके नासवानसे दादावान स्थान स्य

गहिरायाने वर्ष मुंद्रित्र स्वास्त्र स्वास्त्र

विष्णारायाव्यक्तिः त्यायाः व्यवस्ति । विष्ति । व

ह्यायार्थित्ते। व्यवसायसानुत्त्वित्त्वसानुत्त्ति हुःत्वाप्त्रः यार्भ्भवाः तृः शुक्तः पायेष्ठ व याव्यवः याव्यस्य त्त्रः प्रवस्य पात्रः प्रवाः प्रवः वितः प्रवे त्यां प्रवः प्रवे त्यावः वितः प्रवे त्यां त्यां प्रवे त्यां त्यां प्रवे त्यां त्य

महिश्रास्त्री द्रास्त्रस्यानश्र्याक्षेत्रस्य स्वास्त्रस्य स्वास्त्रस्

सर-ब्रेन्-स-र्स-ने-त्य-श्लेंब-न्द्र-स्या-स्य-त्र-स्याचेत्र-स-सन्नर-ब्रुग-सदे-पो-लेश-सर्देव-न्-र्या-स्य-त्र-स्याचेत्र-स-

स्ति । श्री । श्री विष्य स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति । स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति । स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति । स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति । स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति । स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति । स्वास्ति स्वासि स्वास

निवासित्ते। नेश्वत्वावदार्नेदायायह्वायाउदानीः श्वतासित्ते विवासित्ते। नेश्वत्वावदार्नेदायायह्वायाउदानीः श्वतासित्रं विवासित्ते। निर्धासित्त्वायाय्यायाः स्वासित्त्वायाः स्वत्यावद्वायाः स्वत्यावद्वायः स्वत्यायः स्वत्यावद्वायः स्वत्यायः स्

वर्द्रग्रथः मुः अळवः ठेः वे न्या श्रुं रः यः सुवः ळें ग्रथः दे र श्रृं वः यः

प्रस्थान्त्रीय प्रस्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य

गशुस्रामाने त्यसाम्माने त्यस्य स्वास्त्र स्वासामाने वासाम्बासामाने वासामाने वासामामाने वासामाने वासामाने वासामाने वासामाने वासामामाने वासामाने वासा

गश्रुस्रान्ते। व्यस्तान्त्र्यस्य क्षेत्रास्त्र क्षेत्रास्त्र विष्यः स्वर्णः विष्यः स्वरं विष्यः स्वरं विष्यः स्वरं विषयः स्वरं विषय

दे ख्रिस्योग्रास्यस्थ्रद्याया प्रेष्ट्राध्याया व्याप्याया व्याप्यायाय व्याप्यायायायाय व्याप्यायाय व्याप्यायाय व्याप्यायाय व्याप्यायाय व्याप्यायाय व्याप्याय व्याय व्याप्याय व्याय व्याप्याय व्याय व्याप्याय व्याप

त्रंत्रश्चरःश्व्यायदेश्चर्यायद्रश्चर्याय्यारः धेत्राच्याय्यः श्वर्याय्यः श्वर्यायः श्वर्यः श्वर्यायः श्वर्यायः श्वर्यायः श्वर्यायः श्वर्यायः श्वर्यायः श्वर्यायः श्वर्यायः श्वर्यायः श्वर्यः श्वर्यायः श्वर्यः श्

निहेश्यसहेश्यस्य स्थान्य स्था

ग्वितः प्यटः न्यः वरुदः यः यद्यः वरुदः वरुदः वर्षः वर्षे गः यः द्वे। देशः यः वर्

या शे शे न प्रते कु अर्ळ न श्रुकि कवा शार्शे वा शाह्म श्रामा प्रति । श्री से स र्षेत्रग्रह्राश्राग्रह्रा भेत्रा भेत्रा मद्दे श्वेत्र रह्मा न स्वा न स्व व स्व स्व स्व स्व स्व स्व र्धेरशःशुः हें गृः श्रान्तः दे 'द्या ह्या या या धेव हो कुः धेंद्र प्रदे श्री र द्रा र्श्वेद्राचित्रवर्षास्त्रेद्राच्यास्त्रेत्राचे कुःसिन्ते वाहेत्रसे वे सम्मास्यस्य स्वर मायह्रम्यविष्ट्विम्प्रम्। व्यकार्षेष्ण्यम् क्षेत्रम् केषामायाधेवाने। क्रुवेप्रमः निवन ने अप्याधि अप्ते वे माहे व सिं ते प्ले अप्यवस्य मुनान धिव सव से से सु र्देन पुना केर न से दारा साधिव है। न हे स्व स्वा न स्वा न विस परि हिर विश्वास्त्राम्याम् सार्वेद्वान्त्राम् विश्वास्त्राम्याम् स्त्राम्याम् स्त्राम्याम्याम् स्त्राम्याम्याम्याम्याम् वनशः द्वेत्राया से द्वारा से वाले हो क्षेत्राया हेत्या विषया र्शेग्राराष्ट्रीय स्थान स्थान

देशव नह्याश्वराष्ट्री स्व प्रति । श्रुव प्र

निव मने प्रभागविन में त सुन किंग्या क्रिंग माने प्रमान क्रिया

निल्याने त्यस्यानिन देव स्वास्त्र स्

सः तर्हें सं धृदा त्य द्वा व्या व्या विद्या है स्या विद्य स्या विद्या है स्या वि

मुनमित्रे भुनम् भुनम् भुनम् भुनम् भुनम् भुनम् भूनम् भू

## गहेशमासुशर्ध्यामी क्षेत्रमाने स्वराने स्वरामें त्रामे ने सामे ने सामे निया में

महिमाना श्री निष्मा श्री मिन्नी स्विमानी स्विमा

न्दः में त्या निवः निवेदे नाव शास्त्र नाव शास्त्र निवः निवः स्थितः स्यतः स्थितः स्यतः स्थितः स्थितः

चलित्र नावस्य ख्रित्र व्याचित्र क्षेत्र नावस्य क्षेत्र नावस्य ख्रित्र न्या क्षेत्र न्या क्षेत्य

## गिर्देशसान्त्रम्भ्रदासान्त्रम्भ्रदास्यान्त्रीः देव स्वतेव स्वति स्

## ८८.स्. मैया.यर्था.मी.यर्थे.य.य.य.य

दे जियदान वि जर्मा दरासे सूना नस्या ही नदेव माला सूना नस्या

यनेव्यविष्यं । यद्भावायं । यद्भावयं । यद्भावयं । यद्भावयं । यद्भाव

नशुस्रायाः सुरासिकाः श्रीन्यायाः विनायकाः भ्रीन्याया। यहारः वास्त्रवाद्यायाः स्वाय्यायाः स्वाय्यायाः स्वाय्यायाः स्वाय्यायः स्वाय्याः स्वाय्यायः स्वायः स्वाय्यायः स्वाय्यायः स्वाय्यायः स्वाय्यायः स्वय्यायः स्वयः स्वय

८८.स्.स् । ४८.४८.म्। १५ मायाय इत्राच्यायया हो। ४८.

योव त्य अपर्ट्रेट क्ष्योश्चर्ट अधिश्व श्वर त्ये क्ष्य श्वर त्ये विश्वर त्ये व

महिश्वास्ति त्या निविष्ट्वी मान्या निविष्टी स्था मान्या म

म्नुग्रान्द्रिर्या र्वे अय्वता के कुर्ये म्राण्या भ्रे अर्वे या म्राण्या म्राण्या स्थान स

चया कुं.पर्वैर.य.पूर्यश्रेते.तर.पर्यः यहात्रीर.वृशःसहः कूर्यः पर्यः विश्वाः विश्वा

याहेशन्यक्ष्यान्यक्ष्यान्यक्ष्यः । यद्येयात्र्येत्रात्रे अद्ध्यान्यम् क्षुः त्र्य्यश्चित्रा धेत्रात्रः क्ष्यः प्रमाण्या स्टः यास्त्रुं द्यान्यक्ष्यः स्ट्री

इटार्से या ह्वार द्वेद्धिया है या सा कवार से वार के या उद्या सुद सम्रिक्षःस्वाकाःश्चीःन्द्रिकावन्यकाःसाधिवाने। सुदायाःस्वाकाःसवेःस्विवास्यकाः <u> इत्राप्तर तुरवियान व्येत्र द्वर हित्र इस्र शहत् प्रस्तु रवियानवे देशाया</u> बेर्'यदे' धेर'हे। वर्'ग्रव प्रयेष प्रश्रम् सुर्'रे क्या श्रम्प प्रयोग प सर्वेट्रनिर्देश नेदेर्द्धयासूनानाने। सामुनासे। सिस्रामानसेयान्स सुरामिट्रियाम्यावे सूराक्षे न्यायक्षेरानदे सुरावे ता दे उया ग्रीयावर गश्याद्र द्राम्यश्याकु त्रव्या ग्री अळव हे दाया ळदा वदे ह्या या या या व राहित्याधेवायरावया देखेवावावदावदावस्याउदाख्यायराद्युरावाधेया वे सूर भ्रे नर अर्बेट नम ने नम गुन त्रम्भ नुर म्या नि भूर भ्रे नि । ने ख्नरःवे·स्टरने वदःग्वायायादिकार्यः श्रुत्रेयायात्रः हिन्दिन्या सेवरहे। स्रिक्षामार्ति दिते प्रदेश वर्ष स्राप्ति स्रापति स्राप्ति स्रापति गशुसारी ग्रावायमा दिया शुः भ्रे या प्रवटा सेवा है। वदा गशुसा का सहसा मिते भ्रे भार् प्रमाय प्रमाय के क्रिंट के क्रिंट के स्माय प्रमाय प्रमाय कि स्मित्र के क्रिंट के स्मित्र के समित्र के स्मित्र के स्मित्र के स्मित्र के स्मित्र के समित्र के ने सूर मुँग्य कें या न सुनया दया हा ह्याया ग्री विनाया सुनाया है।

स्राधिः स्राचिः ह्वास्याध्यायाध्यायाध्यायाध्यायाः न्द्रस्य सुर्वे । व्ये स्वाधिसः स्राधिसः स्वाधिसः स

माया है 'दे 'प्लॅब 'हब 'द् 'दिंब 'दा' दे 'प्लद 'प्लच 'प्लच 'ह 'दिंब 'दा' प्लेब 'ह 'दे 'प्लेब 'ह 'दे 'पलेब 'ह 'दे 'पलेब

गिरेश्यायाधीत्रत्रः उटा म्रायान्ते। ग्रावशः भ्रावशः ग्राटः यान्यः ग्रावः

य्वान्यम् तसेयानिव नियानि स्थानि स्थ

मशुश्रान्यस्तायस्तुंद्रश्यान्यस्ति। क्षेत्रश्चान्यमाः विद्रत्तिः स्वायाः स्वायः स्वयः स्वयः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः

हेव'सेन'हिर'वेश'र्शेषार्थ'ग्रे'भूतर्थ'शु'तगापा'वेव'य'हेन'ग्रे'हिर'र्से ।

मिल्ने संस्थान क्ष्या स्वाहित स्वाहित स्वाहित संस्थान स्वाहित संस्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित संस्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित संस्वाहित स्वाहित संस्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित संस्वाहित स्वाहित स्वाहित संस्वाहित स्वाहित संस्वाहित स्वाहित संस्वाहित संस्वाहित स्वाहित संस्वाहित संस्वाहित

वायाने किंवाश्वासाविवासाया द्वीस्थे द्वाश्वासायो द्वीस्थे द्वाश्वासायो द्वीस्थे द्वाश्वासायो द्वीस्थे द्वाश्वासायो द्वीस्थे द्वाश्वासायो द्वीसायायो द्वाश्वासाय व्वीदा द्वीसाय द्वीसा

सन्दर्तुश्रासं उत्राधित संदे द्वित्ता सं स्वाधित स्वा

त्रायः के स्वराद्य स्वर्ण ।

त्रित्त्वावात्त्र स्वर्ण स्व

है : श्रेन : खुर्रा वे : इस्राया विव : निर्मा विव : निर्

तिः हे शःशुः हो दः प्राप्ति वितः दुर्शि । यायः हे ख्रिशः इस्राप्तः यावदः दुः से प्रयुप्तः वितः द्वी यायः हे स्यापः यावदः दुः से प्रयुप्तः यावदः दुः से प्रयुप्तः यावदः दुः से प्रयुप्तः यावदः दुः से प्रयुप्तः से प्

यहिश्यान्ते। यात्राने द्रिश्चा व्याप्ते विश्वा विश

ने वेशने भून ग्रम्थ उत् धुम्य प्रायया । ग्रावद में कर नडश रा शु

म्बर्भावन्य विद्या क्रुं ते त्यत्र नक्ष र क्ष्य क्षे त्या त्य विद्या वि

नाशुस्रायाः इत्वासासानुनायाः पान्या स्टाकुन् त्येत्रः प्रतेष्वयः नाशुस्रायाः इति त्यत्रः नुनायाः पान्या म्टाकुन् त्येत्रे व्यायः व्यायाः प्रत्या

न्दःर्यः द्वी ह्याश्राश्चाताः श्ची श्रेश्रश्चात्रः विश्वाश्चारः नुः श्चीशः विश्वाश्चारः विश्वाश्ची । विश्वाश्चित्रः विश्वाश्चारः विश्वाश्चारः विश्वाश्ची । विश्वाश्चारः विश्वाश्ची । विश्व

हेर लेव सेव मंदे भ्रम् । सेसम उव ग्रम भ्रे से द मार्थ प्रमान के सम उद्गायस्य उद्गार्थम् स्रोस्य राज्य स्यापित् । या या सम्य द्वा स्यापित । या सम्य स्यापित । या सम्य स्यापित । या मश्चान्यत्राचित्राचित्रा देक्षेत्रावर्षियायायाञ्च रात्राचेत्राहायेयायाया ने प्यारक्त स्वर्थ विद्या कुरक्ष निष्य दिन कि स्वर्थ निष्य विष्य लूर्जा वर्वेर.य.क्रेंर.श्रा.च.जवरा वर्वेर.य.विर.तर्य.श्रेंर.श्रिश. श्रवाशक्त्रम् श्रुप्ताद्वा वर्ष्य्य स्त्रम् स्थ्राचात्रेश्वरायश्री प्रायश्रीयाः यायविषान्त्रेराक्षराश्चामान्त्र्यामान्त्र्यामान्त्राचीयाः मा वर्षे अन्ते वर्षे देशक अप्ते रायाया के अर्थे यो अर्दा है देश है राक्षेत्र श्चानादी कुःगविदानाराधरासेरासरारे में हिरायसाना से स्वाना सुरा ग्रथरःश्लेषःश्लाप्यायेवःयःश्लेष देवेःवदेःद्याःग्रेषःवर्गेषाःयरः होदःर्देः वेशः गुःनः षटः र्ह्वे शंत्रः दृष्वः यः द्वाः वीः हः नरः देटः नः धेवः है। वाश्ययः यदे से समा उत् भ्रेमा समा कवा मा उत् र्से वा मा सु व तुर विरोध मा से र धरादवादाविवाः कवारा ज्ञायाः नुः श्चेत्रः भेतः भेतः नुः । वया वरादव्युरः ने। ये यया उद्राचस्र अरु स्थात्र से द्राया स्थार द्राय स्थार स्था स्थार स्था स्थार स्थार स्थार स्थार स्थार स्थार स्था स्थार स्था स्था स्था स्था स्था स्थार स्थार स्थार स्था स्था स्था स्था स्था स्थार स्था यदे हिम् देश दसद्यायदे स्टा कुर्दे। स्रा से स्य से स्य स्था स्य सेसराउदार् से राज्य धीदाने। हिरा वसराउदा से राज्या दया करा करा रा उदान् देवायादेयायदे भ्रम् वाययायदे भ्रेयानु इययादे वया स्टाविया गदिः हिन्यावि धिवः वि । यदि वि ययाया विवाद सेवाया स्वाया स्वया स्वाया स् यद्विश्वासानेते त्यावासाने वायाने क्षेत्राचु ग्वासाने क्षेत्राचु ग्वासाने क्षेत्राचु ग्वासाने क्षेत्राचु ग्वासाने क्षेत्राचु ग्वासाने क्षेत्राचु ग्वासाने क्षेत्राच ज्ञासाने क्षेत्र च ज

नन्गाकेनायमायायन्मायवे भ्रिम्कग्रम्भान्नाम्भान्यायम् व। वस्रभः उत्रदितः कवार्यः श्रीवार्यः के कुतः सर्कुत्रभः सरः दशुरः नरः वय। देवे-दर्भाग्री-हेर-लेब-वर्ग्न-वासर्द्ध-सामवे-ध्रिम् जायाने-वर्ग्न-वास ळे :ळु८:वी :छ्५:यर:यय :ळवाय :र्सेवाय :ळे :ळु८:५् :व्यूर:व :धेव :र्से :वी दा हिन्यर विन्यर वया नेते नहें अभी हेर ये व यह राज प्राप्त के कुर वी। हिन् सर विन्धिर ही र है। सर्ने र द वहुर न न स के कुर वी य हो। ह्या रोसराउत्रह्मस्यायार्स्याप्तराके कुरावी विदायरार्धेदायरावयाहै। सैंवा मी निर्देश कुतर वर्गुर नार्वित प्षेत्र प्रमाश्चिष्ठ प्रेति विष्ठ निर्देत व्यादेव शुरा श्री या न्याया थे। । देया ना हेर यो न य शुरा न इस्याया हिर धरार्धेर्ग्यरार्श्वेवाःकवाशात्त्रस्रश्रायाःकेशार्श्वेवाःकवाशायाःश्वेवाशायादेः हिर् यम् सेन त्या ने व्ह्रम धीव ग्रामा कवाका क्रीवाका के कुम वी विन सम विने दे हेत्रव्यूर्यं न्यान्या के कुर्यार धेत्रयर वर्षेत्रय वित्र वर्ष्य वर्ष्य वर्षेत्र वर्पेत्र वर्षेत्र वर्षेत्य वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर् स्याचुरावर्षेत्रायावित्रात् क्वायार्थेवायाण्यारावर्षेतावर्षेतात्वीयात्व्यूरावरा वयार्वे । ने पर्ने न त्वा कवा राजे वा या ने खूर पे न प्रायय श्री या ने से न प्राय वर्रीन हु वर्री मा वर्रेन हो सेसस उद कवास राज्य से सेन प हरायाःश्री।

वावाने :कवाशार्श्ववाशाके :कुट घट प्राट पो : येट : द्युर : वा शेट :

सक्षित्राचात्राक्ष्यक्षात्राक्ष्यक्षात्राक्षेत्राचात्रेत्राचात्राक्षेत्राचात्राक्षेत्राच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्यात्यात्यात्रचयात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्यात्रच्

चया वर्चुम्यवसेयावर्चेनाची। विन्यम्ये प्रति प्रति प्रति प्रति । वर्चुम्यवि । स्वी प्रति । स्वी

क्यायार्श्रम्यार्क्ष्यारुद्धा मानुम्यार्थ्यम्याम्बद्धान्त्रात्यः निवसायर देयाय क्षेत्र है। या सैनिया ग्री निवसा है। सैनिया दे द्वा प्रहूर न-८८:क्रियाश्वारायां केया सदि क्षेत्रिक्य महीर स्रोतः स्वायः सी सुदः धीवः सदिः म्रेम नायाने कनायार्थे नायान्य प्रमान प्रमाने विद्याले नाया है नाया प्रमाने नाया है ना वर्गान् होरा सेन प्येव पाने सिंह र मार्थ की वास सिंह र मार्थ की ने प्रमान <u>अःश्रेन्राश्रःवःव्रिन्। त्र्वे न् त्रुन्यश्चे न् श्रेन्यशः व्येन्यश्चेत्रः व्याधानः त्रुव्यश्चेत्रः व्याधानः त्रुव</u> ठेगाः भ्रे नगः विनः यः नविनः न् त्व वृतः नः यद्यः कग्राश्रयः स्वार्थः स्वर्धः स्वर्धाः वस्रभारुन् भ्रुत्र रेगाः भ्रे प्रसाधियः सरावयः यदः भ्रिन् स्री । न से या सः हिंद्राची मा बुद्राध्यया द्वी रेदेया ची रेदेवा ध्यादा हिंद्रा देवा वर्षे स्वार हिंद्रा है वर्षा हिंद्रा है वर्ष धेव'मदे' धेर'र्रे।

बेश्यत्रित्त व्यावेश्वर्षित्वेश्वर्षित्वेश्वर्षेत्र विवादित्व विवाद्य विवादित्व विवाद्य विवादित्व विवादित्य विवादित्व विवादित

महिर्मान्त्रे महिर्मान्ये स्वाप्त्रे स्वाप्

यीत्रेश्वास्त्र्याप्त्रेत्राचित्राच

गशुस्रायान्यासेन्यते क्षायान्य प्रत्ये क्षायान्य प्रत्ये क्षेत्र स्विधिया

यवि'रार्श्वेरायि इसारात्वे। क्रिंशाउवा र्वेत्राव्वर्ष्णेः यद्यायीयः वित्राव्यायीयः वित्राव्याययः वित्राव्यायः वित्रावयः वित्रावयः

ने श्रुनः यदी कें अरुवा निवास्तः निवासिक्ष हैं निवासिक्ष हैं से निवासिक्ष हैं निवासिक

श्रेवःसश्चाह्यःसरः वया ह्याःसः देवे श्चेरः वः वद्याः सरः द्वरः वः याद्याः यशसुरार्धे रु.सार्चे रु.सार्खे प्राप्त प्र प्राप्त प्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त धेरा ग्विन प्यट कुं ग्विन र्गाने केंग्रिंग राज्य प्यट प्रच्या राज्य प्राप्त स्था ववादाश्चे नासे नादे भ्री स्वायन्य सानु न्या व्याया क्री माववा है सासु निर्माणस वर्गुर्याया कुं वर्ग्यशहेशासु वर्गे यःऍन्यःसधिन्यदेःधिरःह्याय्यस्य स्त्रुस्तुः सुः तःसे त्वन्दे। ने प्यटाचाबुदाचाब्र द्यात्यश्रार्श्वेदायदे क्रिया प्राप्त द्या प्राप्त विकास वेशायवुराधरा वर्दरायद्याः सेरायवे द्वसायाद्या क्रिंदासवे द्वसाया वेशा र्वे देशने सूर नश्र नश्री राषी रे वे निष्य के नि याववराग्ची अर्भेद्राया हैया अरभ्यान स्पर्वेद अरथा प्रदा अरहवा छेटा ग्वित नगर उत्र धेत भने। सर मी में में निम्न भीत भने सुन हो न नु भे धरा चुरवदे खेरा दे वाहे शावश्रव पदे दे सा श्रवा हु वदवा से दायदे इसाया गशुरश्यत्राने त्या श्रुन हो न गाव्य सामर्गेन पा धिव हैं।

पश्चिम् प्रति । है स्वर्ता क्रुं से प्रति । क्रुं से प्रति । है से प्रति । क्रिया क्रुं से स्वर्ता क्रुं से प्रति । है से प्रति । क्रिया क्रुं से स्वर्ता क्रुं से प्रति । है से प्रति । क्रिया क्रुं से प्रति । है से प्रति । है से प्रति । क्रिया क्रिया क्रुं से प्रति । है से प्रति । क्रिया क्रिया

यहूँ नि.ची. । ने.लर.श्र.पबर.ने। यर.लूर.केन.व.यार.भ्री.यपश्चार.पश्चर.व. लर.क्ष.पश्चर.याने.वे.वे.ने.क्चर.रयाने.यां ने.क्ष.येप्त.हेन.या लर.क्ष.पश्चर.यांचे.वे.क्चर.यांचे.क्चर.यांचे.क्ष.यांचे.क्ष.यांचे. होत्र.चे।

द्र.य.से वे. तपुर, प्रचा वि. तपुर, तपुर, या विया असूर, यपुर, सुवा, प्रचा, विया ग्री. कु धित पर वया हे अ शुरवर्गे हेंगा ने वर गुन पते ही र है। ने से न व खुड़ यदेगा बुग्राया ग्राम्यो प्रमान प्रमान प्रमान क्षेत्र विष्या अपने विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषय श्रेमा ने श ग्री मा बुद दें त द्वार प्रयुद्ध प्रदेश खड़ा यदे मा बुम् श खी सा दे दे हु। धेव मदे से मा बुम्य दे सर्वे माने से साम के साथ है सु द मदे सु प्रेय के सि ने प्यटाखुङ्गायवे मा बुग्रायास्य स्राया ने वे मा बुग्रायासी स्रवे हे र प्येव प्रटारेगा या द्वी अदि खून हेना हो न हो न खो ने न विन न ने मारा खूर अया ने मारा धे·अदे·हेरःयेव:८८:पाञ्चपायाधेःअदेःयुव:हेपाःहे८:क्रेव:हे८:देँ। ।<u>५</u>यः अष्ठअःसदेः रेवाःवाञ्चवार्यायाञ्चवाः सेर्वः वाञ्चवाः सेर्वः र्वे वाः याञ्चवाः कुःदन्नराग्री:हेरासुःदर्शे:वृंगायास्वयाने:नर्गेरायाधेरायरार्सुत्रसेन्देः कुःदन्नराग्री:हेरासुःदर्शे वृंगायास्वयाने पर्वे वेशम् केमवित्रम्यामीशः सुर्से वित्र स्थापरस्य वेशस्य सूर्दे ।

## गिरेश्याम् गुन्यसुर मिन्याम् निरमा

मिहेशमगुवल्युम्नियं द्वारावी देवि हेम्लेव सी सुम्मे

चडर्माना भीता निर्मान क्या निर

महिस्रासाख्रदायम्याश्चर्याचे दिंद्य सर्दे त्यस सुमानस्याम् महिस्रासाख्य स्वाराम्य देव दिंद्य स्वाराम्य स्वराम्य स्वाराम्य स्वराप्य स्वाराम्य स्वराप्य स्वराप्य स्वराप्य स्वाराम्य स्वराप्य स्वर

ग्रवश्री भुष्य देव र् महेर नवे श्रेन य ने वे श्रेन य वे र् सेन य वे र लुयाला लटासूचाक्रवाशाइस्रश्चित्राच्च्यात्रम्वाचर्षावर्द्रम्यमः वर्देन् प्रवे नश्रश्रास्था धुवावा वहुवा साने न्वा वे वे देश निव्य निवाद विदेन् श्रेन प्रमाय विषय स्थान नन्त्यारा विंतें ने तरे सूर नन्त्र येवारा रार रोसरा है। येदरा वहेंत्रे ने विवासिक वि या ने वे श्रेन य वर्नेन यदे श्रेन य प्येन विना ने र स वन यान यी श्रेर पर श्रिवाःळवाशःवनेःस्वाः विवःयः न्दः वर्दे रः वर्दे नः वहवाःयः ने ः नवाः वे ः वर्दे नः न्दःवहिषाः श्रेनः धेरः परःवर्देनः छेरः। ने व्यः त्रवेः श्रेनः याश्रुयः गाः परः। न्वीयायायायवेयाचेपाचायाक्षेत्या वर्तराधेन्छेन्विन्कुरावन् ययर संभित्रते । दिसात प्यर विसायि के ना ग्राम श्रीत श्रीत कु प्येत प्यर या वर्गिहेश से प्यर कु प्येत वेश माश्रुय गा सूर प्रेत के मार्गे।

नवि'म'क्रेव'ग्री'क्रम्म'म्या श्रेन'मक्रेव'न्'नश्र्वा ने'म्य'नेम'ग्रेन' नर्गेना सर्ह्यन्म'म'श्रूम'मर्थे।

 यदे कुं 'धेव 'यर 'यय। क्या श्राया या वित्र 'यर 'श्रे 'या श्रे दि 'या 'ये 'श्रे दे 'श्रे दे 'श्रे दे 'श्रे दे 'श्रे दे 'श्रे दे स्थ्र 'या स्थ्र दे से 'श्रे दे दे से 'श्रे दे से 'श्

गशुस्रास्य स्ट्रिंद्र स्था शुद्राचा दे वि स्तु स्य से दे कि व साम स्था से दि र ब्रेरासुरायराग्रारावे पर्देराकवारायग्रहारावरायग्राराहे। द्येराव कवारा व्याक्षेर्नायाः अर्वेदाव्याः कष्म्यायाः श्रेदायमः क्षेर्ने वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वि वा ने वे वि वे रवा या के वर्षे न या वसे व स्वी या वे न हो न या प्राप्त या वि व है। सुराळग्रायदे श्लेन होन ही सळद धेन मार्स विगाने प्राय धेवन्यनग्राम्यन्द्रभे त्यायायस्य वे वा भे त्यायाने भूर्वे सुरा शेशशाग्री हेर येव पीव पा हेर वे नशय न पीव ग्री थूव हेग ग्रेर मेव दं सः न् : त्यू रः नरः सू रः परः ने देः प्यतः त्याः न हे सः से : नरः वे सः से वा सः सुः पिर्याञ्चरयापिते भ्रिम्भे । दे स्थ्रमास्य या स्थान स्वास्त्र न स्थ्रमा भ्रिमा र्'त्रमुर्र्र्र्यते रेग्रायाय दे हिंद्रग्रार हे या शुर्व्य देंद्र व वे। । कुरायव ररा केन:स्टामी:पर्देन:साञ्ची:साञ्चानी:साप्यामार्वेन:साचीन:सस्यानुसार्दे।

त्रेगाचेत्रावर्षे । क्याश्राच्याक्षे न्यायाक्षे न्यायाकष्ठे न्यायाकष्ठे न्यायाकष्ठे न्यायाकष्ठे न्यायाकष्ठे न्यायाकष्याकष्ठे न्यायाकष्ठे न्यायाकष्याकष्याविक्षे न्यायाविक्यायाकष्याविक्यायाकष्याविक्यायाकष्ठे न्यायाकष्याविक्यायाविक्यायाकष्याविक्

तकर्रेत्। विश्वाक्षयायाः भ्रीत्यायाः भ्रीत्यायः भ्रीत्यायाः भ्रीत्यायाः भ्रीत्यायाः भ्रीत्यायाः भ्रीत्यायाः भ्रीत्यायः भ्रीत्य

लर्धुंगाचेर्वित विवासत्त्रित्र न्यास्त्रित्र व्यास्त्रित्र व्यास्त्र स्व वर्तिरः नवे कु 'धेव 'प्रश्र रेग्र श्वा रावदे 'खुश से द क्या श सर्वेद 'चवे ' ह्यासाग्रीसाग्रसायसायदें दाळवासाय ग्रुटा चते 'द्रो प्यटा द्या हा वसा ब्रिट्यासदे क्रें त्या ह्या सुरादे दिन दी क्रिटायन स्टा हे दा श्री सार हो। वर्देन्यायाम्बर्मिन्या ग्रम्भायमायग्रम् विभावकन् सेन्। देन् निमाना प्रेम हरायार्से ग्रायायया विगान्दाया स्रोताया निवा वियापे दिनाया ग्रम्भागी र्ल्य निवानिक मार्थ निहेत ग्रम्य म्या में में दिव सम्बन्ध निवा रास बुद दर्भ : धर द्वा रह विका बुर का सदे हि स् कें का माना का सर है दासर वर्देन त्यामार्वेन विद्यास्य विद्या व ब्रम्यायायायायायस्वायदेः श्चेष्त्रयावेष्ट्राय्यस्वायदेः श्चेराये व रदासुग्रासामी समुद्राद्यो पदाद्या हु चर्गे दाया सामित के ले वा वदी रापदा द्धराया अद्धरमाया ग्रानिते श्रीरानित्राणी दाशी खुमाळण मारादे ह्यूरा श्चरायदे सञ्चर्ने प्यराद्या कुर्ने र्राया या प्येत्र वाया हे खुरा श्चेराया 

यरियापान्दरायमाग्रहाकुः साधिवावस्य देवे द्वीरासेदायादेया सु वर्तरक्त्ररावस्व हेवा से लेश यवसास देवा मंद्र राज्य हिंदा पर होत म्री सर क्षे निते कु प्येत प्या क्षेत्र प्या के नित्र के स्वाप के कुः सळ्दः भॅरिने। देवे दे साम्राप्ति कुः सेव प्रसास महिर्पा भेदा प्रदे धेरा शेर्पिने कें राक्षेत्र कें राक्ष्या वित्यार शेर्पि अर शे प्राप्त स्थान भ्रवश्रादिन्द्रभाशुःवन्द्रभादेःकुः सळ्दः व्यद्रिन्द्र। वित्रद्राद्रवश्राधः श्रेन् धे अदे कुन ने न सूय निर प्रमेन पर होन प्रदे प्रमेन होन ही कु प्येन रादे भ्रिम्प्रा दे स्थान्न प्रमानिक स्थानिक स् मर्भाने स्वराम्बर्गा स्वराम्बराधार स्वराम्बर्गा स्वराम्बराधार स्वराम्बराम्बराम्बर्गा स्वराम्बराम्बराम्बराम्बराम हे। श्रेन्पाने व्यान्य या प्राप्त विश्वासी श्रेन्पाने स्रेन्य विश्वासी स्थान श्चिन्यम् भ्रेष्ट्रे ना स्रोन्याययम् स्रोन्याययम् स्रोन्याययम् यशर्षेत्रकेत्। यश्चत्रमायाश्चेत्रमाश्चेत्रप्रेत्रेत्रकेष्ट्वेत्रःर्दे ।

## मशुस्रायायम् मार्थियायम् मार्थियायम्

मशुश्रायायमें गायि यने वाया वर्मे माया प्रमें माया वियापा माया वियापा माया वियापा वियापा वियापा वियापा वियापा वि

देश'यञ्चर'मी'क्र्स'य'वे'यस'यदेव'ग्रीस'देश'यञ्चेव'ग्री'क्र्स'य'दर' यह्या'य'गठिया'गेस'यळट्'यस'स्नूनस'यदेर'ज्ञर'र्र्स्याम्बुरस'र्स्र्।

ने प्यत्र भूत्वर हैं। । वड्द प्यत्र व्याप्त हैं या प्यत्र से अप्ति श्रूर सळस्य अप्त हैं द वड्द प्यत्य व्याप्त हैं विष्ट स्थाप्त से अप्ति श्रूर सळस्य अप्त हैं द विद्र प्याप्य विवास स्थित हैं। ।

र्ट्स्य वर्षे व

न्दः र्वा के त्र के त्

वाहेश्याः हेन्याः श्रम्याया वर्षाः श्रीत्यम् वयः याः श्रीतः वर्षाः श्रीतः श्री

धरःभ्रद्राचेताःग्रदःमात्र्याःसःस्रीःश्रेदःधरःवयःवःश्रदःवर्दे।

न्द्रास्ति। हिन्यायदेगावियादायाहित्व। हीर्स्यायाद्यायदित्रा नवे के नवर नन्ना ह्या भ के द विषय न विषय वर नवे के वर ने के द बर्स्स धित्र स्थादिर निर्वे निर्वा निर्वे । निर् धेवाया ने सूरायिं राजारें वे यात्रा के ना के ना यो के राजा के विष्या यो के राजा के ना यो के राजा के रा वर से त्युर वर्ष विर व र्षे द या से त्यन दें। विदे र व से द व र य ययराजात्यासुरा स्रुसास्रसायदी हिर्डेसायसान्सायस्य वस्तरास्र हिराया हे यश विराधर र वि विराधिर विराधिर विराधित विष्य नन्गाह्यायाविंद्रानासाधिवाग्तीरहेरायेवाग्तीस्त्रास्ति कुवार्धसाविया वर्षिरः नरः न १८ द्या दे । ५८ वर्षे रः वरः यः वर्षे ५ वरः न श्रुव शः यः वर्षा वः नरः हें न्याधेवाहे। ने प्यन्ति सूर्विर्च राधिरावन्या सेन् ग्री हेरायेवा शे स्रम्भितः क्रुव्या विवा विवस्य प्राधिव वा ने केमावायायाया सम्मायया येत्रसायवायाते। वरामार्वेनामये के वरामार्वे ये निवाय वे से निवाय स्वार र्रेदि कुत्वे त्यापार वेत प्रमा वर पर्वेच प्राव केतर के द प्राव के प्रमा विकास हैतर से दाव वर मतर रें दाय राय वर्ष स्थाय के सुरा में विकास के वा वी दें व वर्रे भित्र हैं। विवारि वर्ष में वर्ष म ग्री:स्र रेवि: क्रुव र अ विवा परिंद न प्येव ग्री परिंद न र रेवि न न वा से द परि धेरा वर्रेराता बरायवे पात्र अभूत्र अतः बरायवरा छेरा हेरा येव ग्री सुर में कुव कर हिर ने यश ग्रावव भवे वर भरे वर भ में वि नि ग्राम

य्राच्या स्वाचित्र स्वाचि

ने प्यत्त्वस्य स्वर्गिना स्वरं यने व सासूना यस्य स्वरं निका स्वरं स्व

यदेव्ययास्य स्त्र स्त्र

महिश्यसम्बर्धित्वाहेरक्षे श्रेष्ठी स्वर्धित्वाहेर्यं विश्वे स्वर्धित्वाहेर्यं स्वर्धेत्वाहेर्यं स्वर्वे स्वर्धेत्वाहेर्यं स्वर्धेत्वाहेर्यं स्वर्धेत्वे स्वर्वे स्वर्वे स्वर्धेत्वे स्वर्वे स्वर्वे स्वर्वे स्वर्वे स्वर्वे स्वर्धेत्वे स्वर्वे स्वर्

 न्दः ज्ञान्तर्थः न्याः न्याः

ने भूतः सूना नस्यायस्याना स्राधित्र स्राधित्य स्राधित्र स्राधित्य स्राधित्य स्राधित्र स्राधित स्राधित्र स्राधित्र स्राधित्र स्राधित्र स्राधित्र स्राधित्र स

न्द्रम् वा न्द्रमा स्थान स्था

प्रवास्त्रिं भ्रम् विकार्ष्य विकार्य विकार्ष्य विकार्य विकार्ष्य विकार्य विकार्ष्य विकार्य विकार्ष्य विकार्ष्य विकार्ष्य विकार्य विकार्ष्य विकार्ष्य विकार्य विकार विकार्य विकार्य विकार्य विकार विकार विकार विकार्य विकार विकार विकार विकार विकार विकार विकार

 श्चेत्रा विश्वाश्चर्यात्राम्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थाः स्था

नेश्व श्रें श्रें श्रें ते इसस ते श्रुवाय स्टर्न्य न्या हे न्या हे न्या से श्रें श्रें ते श्

क्रम्भान्नवाले स्ट्राइन्द्रम्यान स्ट्रान्ति । त्यान्तर्वे आले स्ट्राइन्द्रम् त्रिम्न त्रिम्न

यहिरापान्य पर्वे । विराध्य स्थान स्

यावस्यायते स्त्रीम्।

यावस्यायते स्त्रीम्यते स्त्रीम्।

यावस्यायते स्त्रीम्।

यावस्यायत

मान्य मान्य

गशुस्रायायद्यायद्वेत् श्रेत्यवे कुः धेत्रयायाद्याद्यायाश्रदाया

च्यात्राचित्राचे वित्राचित्राचे वित्राचित्राचे वित्राचित्राचे वित्राचित्राचे वित्राचे वित्राच वित्राच वित्राच

र्त्वात्वहेनाः सुन्न सुन्न हो ने हिन्द्र अन्ति। स्वात्वात्व निष्न विद्यात्व निष्न विद्यात्व निष्न विद्यात्व निष्म विद्य न

यद्याः यद्गे । वद्गे द्रायः यद्गे देशः श्री मः त्रायः या श्री याः यः यद्गे याः यद्गे यद्

याश्वस्यायार्चे स्वायते द्वस्यायात्र निर्मा देवा यात्र निर्मा विद्यस्य स्वायते द्वस्य स्वायत् स्वयत् स्वायत् स्वायत् स्वयत् स्वयत् स्वयत् स्वयत् स्वयत् स्वयत् स्वयत् स्वयत्य

ण्यात्राह्म स्वाराह्म स्व

यात्रश्रासंत्राचादात्राचादात्रे वित्राच्यात्राच्याः वित्राच्यात्रे वित्राच्यां वित्राच्या

ध्रिन्। स्वाधित्रः सम्प्राधित्। वित्रः ह्याः स्वाधितः स्वाधितः स्वाधितः स्वाधितः स्वाधितः स्वाधितः स्वाधितः स्व

ग्वतः प्यतः से ह्या प्रास्था प्रेत त्र विद्या प्रासे न द्यों संस्थित है विद्या ह्वायरविद्युरित्रे। केंश्यारवीयरविद्यविद्यायकीरायरे व्यास्त्र यः इस्र राष्ट्रवाः यः वे राष्ट्रें द्राये श्री स्ट्री । यदि रायदे वा यः इस्र यस्य वर्षः यदे के अधिव व ह्या यर नश्रव यधिव यशा ह्या यधिव व दिस्था से प्रिव न्में अः शॅं विश्रञ्चानानानाना धेव दें। निव्व धर ह्ना संधेव व न्दें अः सें धेव दर्गे अवा ह्या व से ह्या प्रशास्त्र । ह्या व दर्गे व से प्रोते । मश्चित्रा नर्देशःर्यः धेतः त्रः भेरह्माः मश्चानः प्रवेश्चेत्रा वर्देनः त्रा ह्मानः वहिनामश्राद्यन्यम् त्रवार्थे। विदेन्त्र। निव्नामश्रादनावः विदा भेदान प्रेंदाम्या हिना पर क्षुप्त है या प्रेंचा स्थाप विवा दियान वावकासातुःमाहिँद्राद्रेकाववायायासुदावासुसावकायोवामादेः स्वेतेःसूना वर्रे र्श्वेरश्रायायायार् ते हिना सम् र्श्वेश विना स्त्री हिना समावशायेत रैग्रारायरावयुराने। ह्यायवेर्देन्यावरायेन्द्रीय्रारायरावहेन् र्'श्रेरे. कुरा ही. स्वायाय ही. ही. स्वाय स्वरावया स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर नन्द्रपदे नहेर्या वर्षे नुद्र नदे हे या या से निष्य स्था

## नवि'स'यस'ग्री'नदेन'स'नभ्द'स्।

युन्ययय भी निर्वास्य निर्वासे निर्वासे निर्वासे निर्वास मिल्य मिल

गहिश्यास्ति । श्रुम्याद्या नेति क्षुण्याद्य । श्रुम्यास्त्र स्वी । वित्र क्षुण्याद्य क्ष्य क्ष्

८८.स्.स् वी योष्यार्थेर.सबर.सुष्य.सप्त.सुष्य.स्था.स्था.स्था.स्था.

हेशनःश्वर्तत्व्युर्त्तायः धिवाते। न्याये सेत्राहिष्य्याये सेत्राह्यायः सेत्राह्याय

महिश्वानिति कुः अळ्तु कुश्यान्य मिन्न स्त्री मायाहे निन्न स्त्री।

हिंग्यानिति कुं अळ्तु कुश्यान्य स्त्री मायाहे निन्न स्त्री कुश्यान हे स्वर्था कुश्यान है स्वर्था कुश्यान हे स्वर्या

ध्यायने यय ने यहाय कुते के नावन की या है नहें ने ना नित्र की या है ने नित्र की या है ने नित्र की या है ने नित्र की नित्

शुःवह्नेत्रभूत्रावर्गानाः श्रुवाश्चर्याः वित्रमान्त्रवेषाः वित्रम्याः वित्रम्यः वित्य

निटा दे वना विदे नाव राखनारा यया दी व हे विना मुख्य रादे हैं वर्षा हिन्यिक्षेया व्याप्ताय निर्मा सुर्वे या स्वर्धित स्वर्धित निर्मा निरम् द्रभे न्यून्य द्यार्द्व न्याय्यु र नि द्रभे दे नि विद्र नु नि नि से दि नि स यदे ने संस्वा ग्री साहे सामा सूर पिंदा ग्री कुदाया है सासे दायर हो दा ग्राट हेशरमश्लेशर्यरिसेर्भर्यर्भेत्र्यर्भेत्र्यर्भः वृत्रायर्भवया सेस्रश्चीर्द्र नविव वे के प्राचारायायाया है निवा प्रहें व ही खुव या ने वे प्रहें व सूरका सूराया ग्रुनःग्री:नद्गाः सेदःहिंग्रां सदेः नेराः स्वःग्री:वहेंद्रः सूद्राः द्दाः सबुद्राः स् गुनःसरा नेरार्ना से सरा गुःर्रा नित्र या गहेत से दे से नरा गुरा वज्रवासी मुद्राधीत विद्या दि साळग्रसार्स ग्राम्य प्राप्त मान्य विद्या स्थान स् इसरावे सेसराकुर्ण र्रे तुरावा के पाहेत से दे के परा शेरा द्वाया दुरा धिव भने देश हो ने अव अध्य शे स्ट निव न दि सुर न वे अभने दे सेससाकुन्यामहेन्सेत्रेस्त्राण्येसावन्यन्से सेन्द्राचान्त्रे र्देव पीव त्या । विट सर दे प्यर प्रहेव सूरका के सका ग्री मावका खुमाका या वियासारान्द्रावित्सावितः कुते याई सेति यहेत सूद्रा सेस्रा यो यात्रा युग्रायाया से वर्षे व

स्टानिविद्द्रियाश्वालेश्वाल्या ने वित्ति हेन्यः श्वीनायि श्वीन्यः स्टानिविद्द्रियः स्ट्रिस्य श्वीन्यः स्टानिविद्वः स्ट्रिस्य स्ट्रिस्य

वज्रूरानवे द्धवार्शे से राष्ट्रे त्रावक्षत्राचे देवे श्री राष्ट्रे सामे समानिया बेर्व्सिन्थान्ते नेशास्त्र देवे नित्ति नित्ति हैर्त्य अस्ति नुष्टि स्थित शासा र्स्रेन:राद्यायी:सहस्याव्यायी:याद्रशःभ्रवशःशुःद्वे:सःहस्यशःग्रीशःहेशःराः नश्चेत्रपदे त्रापा सेत्रेत् । स्र्रे क्रिया नस्र सम्भित्र विष्या प्रति । ग्रवसः भ्रम्य राष्ट्राया प्रमासे दार्चे दे सुवि सुवा सी साहि प्रमास के सा र्याग्रद्धस्य राष्ट्रेत्याया सेदायदे सिम् वयम्याया स्रिवाया स्यस्य इट वर क्रे विश्वास वित्र प्राप्त विश्वास त्या प्राप्त विश्वास वित्र विश्वास विश् याधीवाने। हेयामात्रस्याउदाग्रीः स्वानिष्यान्देवायादिस्यास्यानेदिन्या ठव्राची नित्रा से दासदेव सुसार् हिंगा सामिर विसार वा कुट्टा या न से दार पर त्यायायष्ठा उत्राक्षेरार्थे उत्राची प्रदेशार्थे राष्ट्रा स्था प्रदेश वित्रा प्रदेश वित्रा क्रेंबरप्यायाये। धुवर्त्रायोवयायायविवर्ते। । ने स्वर्त्सेव यया त्राप्य नि येट्रियायायदे नेयार्य हेयाययादे स्थायी त्यापरा यसूत्र त्या द्या नर्डसार्चनायदे सेस्राम् नुनित्रेयाययादह्स्यया से नुसायदे मु सळ्दा वळन्यने। वळे न सेन्न प्यान्य नियाने व ब्र-न-१५ मा भून में

मशुस्रायान्त्रेत्रःहिष्यायान्त्रेतः भेषायान्त्रेत्रः महित्रः विश्वायान्त्रेतः भेषायान्त्रेतः स्वायान्त्रेत्रः स्वायान्त्रः स्वायान्तः स्वायान्त्रः स्वायान्त्रः स्वायान्त्रः स्वायान्तः स्वायान्त्रः स्वायान्तः स्वायान्तः स्वायान्त्रः स्वायान्तः स्वायान्तः स्वायान्तः स्वायान्तः स्वायान्तः स्वयान्तः स्वायान्तः स्वयान्तः स्वयान्तः स्वयान्तः स्वायान्तः स्वयान्तः स्वयान्यः स्वयान्तः स्वयान्तः स्वयान्य

देशःग्राद्यवासेन्द्रिं स्वास्त्रे से स्वास्त्रे से स्वास्त्रे से स्वास्त्रे से स्वास्त्रे से स्वास्त्रे से स्व स्वास्त्र स्वास्त्र से स्वास्त्र से

 यादन्याभी मुद्दात् वर्ष्यू मानाद्दा क्रमा भारतीय विमाद्दा दिया शु वहें तर्भूरकाक्षे सञ्जूतामार्ड्यामीकामाराहेकामानुरकावनीताके त्राहे। तुस्रयःसँग्रयः कंत्रसेत् प्रवेशकें स्वा हिंत् में स्रयः स्रास्य सेस्रयः हुत्यः वज्ञवासी सुरात् वर्षुराजा दरा ले स्ट्रार्से ज्ञान पर विदेश सूर्या सी सामुदा यः ठवः ग्रीः से द्रायः यः से गायः दरः वहे वः स्नूरयः देरे यः सुः वर्गायः वः से दः यदे भ्रेम वियः भ्रे कवाया स्वाया हें दासे द्या सारा गुदा हें दासे द्या स्वर ही सा रेगाननेवे इन्य उर्जे के त्या दे प्यर वहेगा के मुराय व्याप्त प्रति स्र लेव.सह. मुंर. बुरा.सह. क्रूटा चर्या. यह व बुरा सूर्याय. रहा चित्रया यन्दरक्षेदरहेर्भेषार्थायारहेर्ययदेन्द्र्यामहेर्याधेराहे। वेर्ध्यामीयहेर र्र-चित्रयान्यस्यान्य चित्रात्रेय्यान्य वित्रात्रेयाय्य स्थान्य वित्रया शॅग्राश्वे सूर शॅग्राशसर्गे ग्वेंद्र प्रदे ग्विद सें धेद ग्रूट दूरश प्रदेद मदे गहेत में साधित हैं विशक्षित मा शुस्य के मिया है दिया दिया श्रेवाशःश्री विदेशावे सूरावी वाहेद सें राजुस्यारा सुँसारा श्रेवाशाग्रारा भ्रेत्र हो ८ ग्री प्यया द्या पीत श्री भ्रेत्य प्यया या पीत प्यमः प्रभूत पा पीत हि ।

 यम् म्हित् स्वास्त्र स्वस

णटाक्षाविक् के स्वाका साथिक विकास त्या ति स्वास्त्र स्व

देशवास्त्रिंदेशवाहिषाः स्वास्त्रिंदेशवाहिषाः स्वास्त्रिंदेशवाहिषाः स्वास्त्रिंदेशवाहिषाः स्वास्त्रिंदेशवाहिषाः स्वास्त्रिंदेश्च स्वत्रिंदेश्च स्वास्त्रिंदेश्च स्वास्त्रिंदेश्च स्वास्त्रिंदेश्च स्वास्त्रिंदेश्च स्वास्त्रिंदेश्च स्वास्त्रिंदेश्च स्वास्त्रिंदेश्च

रें नें प्यत्र विषा मुंदे ने स्वर्था ने विश्व में त्र पावत सदे विश्व के यवाया मुर्देव यर्गे वायायायायी वाया ने सूर्व वर्षे साय्व विषय श्चानार्साक्षाम्यायम् वश्चमानवे भ्रम् वेया मुन्यायन संविद्या वियायानामानाधेन विरादि सामानामाना वियायानामाना वियायानामाना विष्यायान्यामाना वियायानामानामानामानामानामानामाना द्धयाते पदी धोताते। पहेना क्षेत्रेन सारेना माधेताता नर्डे साध्य पद साग्री सर्ने त्यराष्ट्र न न मार्स द्वार स्थान वहिनाः भ्रः सर्द्धरमः भ्रम् न् न् निन् मः विनायः हे। स्र हिन्स् न् स्र स् यरःख्वायाक्षेत्रीरायवे धिरार्रे विवा क्रिवाकेरारी यारेवायायाहेवा बॅर्या उव प्रांक्त बॅर्या राष्ट्र या धेव प्रांचे या रेगा पा गहेश थें प्राया वहिनाः भ्रः ते रहेत् सें रश्राण्ठता श्रीः सारेना सार्वि ता धेता वेदा हे शावा वहिनाः भ्रः अन्देवान्धदे सुवारावाडेवा प्येद प्रशा सुवारा वाडेवा सुवारा वाडेवा प्राट्य द्येर्द्राचायाः वार्चेवायायाचेवाः धेदायाद्यायार्चेवायायाचेवाः याच्यायाचेवाः मस्यायाः १ प्रमायाः भ्राप्ते विष्या विष्या च । या विष्या विष्या च । या विषया । विषया । विषया । विषया । विषया । सर्द्धरमारमाध्रमासी पद्धि विष्व हे निमासी मार्थिय हे निमासी मार्थिय है निमासी मार्थि न्वीर्यासाधिवाती। नेयावाप्ययाहिनायाहे नयर नश्चिरानियादी नियावार्या नसूर्याने पदीर सूर्या पति । त्या सर्द्धर या पर स्वराय वे या गुर्य या श्री नियात्रावहिषाः भ्रायानेषाः संवित्रायान्या भ्रायान्या सर्वेत्यायमः स्वित्रायिः अन्त्रेया वेशायाशुत्रायायायायायायासूत्र सूत्रायातायीयायायीयायायीया

र्श्वायत्ते स्वर्त्ता स्वरत्ता स्वर्त्ता स्वर्ता स्वर्त्ता स्वर्त

र्देन्य अर्द्ध म्याध्य प्रत्य विष्ठ प्रत्य विष्ठ प्रत्य विष्ठ विष

युव प्रभायहेवा यु प्राप्त सक्द र भाषा मा युव सी प्रवि सी मारी हो मारी ।

देव ग्राम में ज्ञान क्ष्या विषय क्ष्या क्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या

निव मा श्रम्या स्थान स्

ङ्ग्यान्देन्त्वाक्ष्य्याची व्यवस्ति देवा व्यवस्ति विष्ठस्ति विष्यस्ति विष्ठस्ति विष्ठस्ति विष्ठस्ति विष्ठस्ति विष्ठस्ति विष्ठस्ति विष्ठस्ति विष्ठस्ति विष्यस्ति विष्ठस्ति विष्ठस्ति विष्ठस्ति विष्यस्ति विष्यस्ति विष्यस्ति विष्यस्ति विष्यस्यस्ति विष्यस्ति विष्यस्ति विष्यस्ति विष्यस्ति विष्यस्ति विष्यस्ति

यश्याया प्राप्त वित्र स्था वित्र

यात्यात्यत्वित्तः स्ट्रियाः स्ट्रियः स्ट्य

त्रेत्रस्य वित्रस्य वित्रस्य

महिराया से साम निर्माय सिंदा साम सम्माय स्था निर्माय स्थाय स्था निर्माय स्था निर्म

क्रमाश्रास्त्रसंभ्रां व्यायावीर यह वा हे श्रास्त्र स्वायावी व्यायावी व्यायायावी व्यायायी व्यायायायी व्यायायी व्यायायायी व्यायायी व्यायायी व्यायायी

ळग्रान्द्रन्त्रयानवे कुण्यं स्थित्राया या येत्र हैं।

गहेशमाने त्या हिन्दा श्रम्मानाया नन्गा हेश सेन्धिन ग्रम्माना यालेवारार्श्वेदानार्श्वेतायमान् स्वाप्त्रम्यार्श्वेतान्यस्यान् मः भ्रेंत्यायम् म्रान्त्रभावम् सर्वे । इत्सर्वे म्रायाने । वद्यां द्रायानी वा श्चेंत्रः ये दः धेत्रः ग्रुटः दे त्यः वेत्रः दः दित्रः चरः दक्षेटः चर्यः चर्याः व्यव्यायः यः भ्रुवित्वरुषाशुःवर्षयायम् हुर्वे विवा दे सूमःवर्षय्यायने त्यर्षा हेमः वर्म्य वेव केट कवा या परे भ्रिव नवया शुः सर्वेट वया श्री टावर वर्मे रहें वेत्रा क्यायायदीः धीः ध्यायायद्या दे क्क्रिंत् से दाधेताया देयाया यया सुतः ह्यूट न से द पर दे किया था पर दे हिंदा न र दे द्वा था या थी द है। धें द हुन धुवावासासर्वेदानसाधेदान्। हेर्नेवालेदासावर्देदारावार्सेवासायदे कुंवानारानी अरग्रदार्श्वेदाना श्रेवरायते श्रेत्र नित्रात्वा स्वत्रात्वा स्वत्रात्वा स्वत्रात्वा स्वत्रात्वा स्व हिंद्रिक्कें व उवर्त्वा निष्ठ्र राष्ट्र राष्ट्

वया क्रम्या वित्तर्भा वित्त नित्र नित्र क्षेत्र नित्र क्षेत्र क्षेत्र

ग्वित्याया प्रमायाक्ष्यायाया क्षेत्रित्या प्राचित्रा स्वित्रा स्वित्रा स्वित्रा स्वित्रा स्वित्रा स्वित्रा स्व हे निन्नात्यः कवार्यान्यः देशःश्रीतः यदेः श्रूवा नश्रूवः श्रीः हेतः श्रीतः प्रश्राः वे दा ने भू तयर निवायने या कवा रापा निवायो वनवः विवा वी अः न १९ ग्री वा वन १ नवा वी अः वर्षे वी सः वनवः विवा हुः नन्द्री वियाने विदाळवाराया सैवाराया दे सेदासंदे नद्वाप्यदावाराया सूगानस्यामी मुं सेदायमार्सेदासेदाधेदार्दे विद्या नद्यात्या कर्यासारादे यरकें भारत्व नन्याने न्दरावर मुन्ति से द्वा वर्षे दर्भ में वर्षे गिवि'नन्ग'ने'सेन्'सदे'हिन्'प्यत्ग्नर'न'स्या'नस्य'ग्री'कु'सेव्'सदे'धेरा ह्याश्राश्चानात्वा नन्याः सेन् प्रदेशनन्याः स्वाश्राधन्याः स्वाश्वास्याः नन्गान्दरने वाळग्रायामहेरामा श्रुव से दाये दारे दे श्री रामहेरामा याळग्रायाप्टराज्याजुः स्रेत्रायराज्याया

यहिष्याः स्वाप्ता स्वाप्त्रेयाः स्वाप्त्रेयाः त्रिष्याः स्वाप्तः स्वापतः स्

यर्देन्द्राचि न्यात्राचि न्यात्राच न्यात्याच न्यात्राच न्यात्राच न्यात्राच न्यात्राच न्यात्राच न्यात्राच न्यात्राच न्यात्राच न्यात्राच न्यात्याच न्यात्याच न्यात्याच न्यात्याच न्यात्याच न्यात्याच न्यात्याच न्यात्याच न्यात्याच न्यात्याच

महिरायां ने निया मार्था निर्मायां मार्था निर्मायां मार्थे । निर्माय । निर

याहेश्यः में त्राचाना याया सर्मे स्वास्त्रम् क्रा क्रायः वित्रमें वित्र वित्र

वतः र्त्ते सार्ट्र स्वादे स्वीदान् विष्यं स्वाद्वे स्वाद्वे स्वीदान स्वाद्वे स्वाद्

दे स्वरास्तात्वाका की निर्माणी निर्माले के साक्षे निर्माणी निर्मा

देशक्षात्र प्रत्य स्थान्य प्रत्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्था स्थान्य स्थान्य

अधिवाही न्वराधायां अवाश्वावायां स्वाधायां स्वाधायं स्वाधायां स्वध्यां स्वाधायां स्वध्यां स्वध्यां स्वध्यां स्वध्यां स्वधायां स्वधायां स्वधायां स्वध्यां स्वध्यां स्वध्यां स्वध्यां स्वध्यां स्वध्यां स्वध्यां स्वधायां स्वधायां स्वधायां स्वध्यां स्वध्यां स्वध

त्वा नहरू भी । व्या के मार्थ निष्य के मार्थ निष्य में निष्य के मार्थ निष्य के मार्य निष्य के मार्थ निष्य के मार्य निष्य के मार्थ निष्य के मार्थ निष्य के मार्थ निष्य के मार्थ निष्य के मार्य निष्य के मार्य निष्य के मार्य निष्य के मार्य निष्य मार्य मार्थ निष्य के मार्य निष्य मार्य मार्य मार्य मार्य मार्य मा

गहिराना क्रियान क्रियान स्वानित हिनानित क्रियान क्रिय

न्दः में त्या न्द्रमा स्वास्त्र म्यास्त्र म्यास्त्र व्यास्त्र व्य

चर्झ्यश्रामशर्म् । हिन्द्रम् श्री । ह्नान्यस्य हिन्द्रम् श्री । ह्नान्यस्य हिन्द्रम् श्री । ह्नान्यस्य हिन्द्रम् ह्नाम्यत्र हिन्द्रम् ह

गहेशायान्याधिनावाबेवायवे गहेवारी नमूवायायव्या ता सेना यर वया निवा विषा निवानि निवानि के स्वा निवानी निर्वे निवानि । यायमामावर्षमामवे भ्रम् । व्यास्री वनवा वहीं माने के वनवा वा ळग्रासानसूत्रस्य हो दाराधेताया वद्या ळग्रास दे वद्या वी र वे तर्यः र्भार्मेत् तुर्भामास्र मु उद्याधेत् प्रदे भि म् वरादे दि ग्री भी भारत के भारत् नन्गाक्षायाश्चरयान्त्रान्त्राची तुःसूना नस्या तुः र्स्र्यायान हेंदा पर ळग्रासामह्रम् बद्दानु से त्युरावराष्ट्रम् स्टाकुर् ग्रीप्यद्या स्टाकुर् ग्रीप्यद्या स्टाकुर् न्नरःग्रीशःनन्गाःग्रीःनःषःळग्राःज्यःन् त्र्यूरःनवे ग्रेग्राशः होन् हेरःनेवेः क्रिंत्रायर क्रिनामा धेरायदे हिम् नेस मया नेते ननर गेरा नन्या में निर्देश थॅव निव की क न बुद न या निहेव व या दे त्या क न या या या दे व द्वा कि द भ्रे न न न स्थान

ग्याने वर्षान्य मान्यान्य स्मान्य स्वत्याने नित्र नित्र नित्र प्रमाण्य स्र

न्दः सं द्वी द्वदः स् वाश्वास्य वाश्वास्य दे द्वास्य विश्वास्य वि

यायाने स्र्यायने या क्षेत्राय क्षेत्र व्याप्ता व्याप्ता क्षेत्र व्याप्ता व्याप्ता क्षेत्र व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता विद्या विद्य

नेश्वात्यायाचेषात्याञ्चरान्दान्देन् स्वात्याचेषाः तृत्वद्देन् स्वेः

याव्यायर स्त्राय स्त्रीय स्त्राय स्त्राय स्त्रीय स्त्

गहिरायाविवायाक्यारायाक्षेत्रीत्रायम्बर्याक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्राया मुँक्राच र्रेन्या हेर मुँक्राचन्वा प्राप्त व्याप्त विष्य वार्य व्याप्त विष्य चुः अधीतः प्रमः वया वद्याः यः कया अधः देः श्रेष्ट्रितः स्रोदः धुवः उदः कया अधः न्दः नन्ना नी नने न सून हो न न्नदः सँग्रा ग्राम् ने नन्ना सुँ न से न ने दे श्चनः होन् छेन् धोव प्रति ही स्ति। वन्या श्चिव सेन धोव प्रति श्चन होन् ग्चन श्चेंत्रः सेन् प्येत्रः न्वें सः स्था स्था न्ये न्ये न्यान्य व्यवस्य क्या सः स्न न्यान्यः स्याद्युरः नरः वया नन्याः न्दः नेते सुवाः उतः न्दः नन्याः वीः नः गशुस्रागाः श्रुवःसेन् प्षेवः या पर्वे ना पर्वे स्वरावकेन वर होन् प्रवे कुरनः र्भेत्राचरुरायाराधिताते। देशासूना नस्या भ्रेता परि । सेता यह वा नहना यहरा श्चित्र नहरूष शुः त्रया सूना नस्य श्चित्र पाने दे नन्ना यद्द सामा धेत मंदे भ्रेम ने श्वाद ने देश खुवा वाद वा प्यापद है कवा श्वाद दि न न स्थाप वशुरानराष्ट्रया वर्षिरानवे गात्र शारे रान्या ने वे श्लेष्ट्रित सर्वेदा प्यारा ने व्या ळण्यायान्द्राच्याचराचुःचाकेदात्रुःसेदासदेःध्रीय

यश्यापान्यत्स्य विष्याचा त्या क्षेत्राचा क्षेत्राच्या क्षेत्राच क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच क्राच्या क्षेत्राच क्षेत्रच क्षेत्रच क्षेत्रच क्षेत्रच क्षेत्रच क्षेत्रच क्षेत्रच क्षेत्रच क्षेत्रच

क्रुवायि क्रुवायि क्रुवाय क्रियायि । प्रमायि क्रियायि क्

त्रः में त्री कर से नास ग्रे प्रेस्त न्त्रः सर्वे त्या स्वार्य स्वार्

गहिस्रास्ति स्थान्य स्थान्ति स्थानि स्थानि

श्चित्रश्चित्रश्चर्यात्रे त्याहे त्याहे त्या वित्ता ने त्या वित्ता वित्

महिरामायात्रारका की स्वाकान्यायाना या निरामिक निरामिक निरामिक मिल नु मन्द्र नु रामा द्यामें या यया दु से प्रमानस्य में प्रमानस्य ग्रीअ'थेट्रग्रुट्य'य'ळग्य'त्र्य'ग्री'कुर्र्य से'वर्ष्य कग्य'त्र्य'ग्री'रर नविवर्धेशन बुद्दनर्थे । प्रदर्भे वे मुद्दश्व व व वे वि वे व व व व व श्चेशन्तर्दर्द्वरेश्वारार्द्वरम्बद्दर्श्वर्यस्त्रेशन्तर्भेशन्तर्भवारात्रे विविस्त्रम्य विश्वासी देविष्ठ असी स्त्रिक्ष स्त्रिक्ष स्त्री स्त्रु स्त्रु स्त्रु स्त्रु स्त्रु स्त्रु स्त्रु स र्सेम्रायाकम्रायान्यान् त्रम्रान्याने महिराष्ट्रमान्याने सा नियायात्रम्ययाधीयार्वे विष्या यदे सँग्रयायाद्रम् अस्तु मद्राप्तर्देवः सुसाग्रीसानेसामा संसाग्रीसादिरानायसाग्रीयानरासी वशुरानरामय। ष्यायायासुर्यापि नियापि स्त्री स्त्री से प्राप्त स्त्री प्राप्त स्त्री प्राप्त स्त्री प्राप्त स्त्री स्त्र स्त र्शेग्राथ्यश्यादात्रम्यद्यादे वर्त्तर्तुः श्रूरः धरः वेशः धरेः ध्रेरा देरः वया क्रेअन्तुःनन्गानिनःर्नेन्न्न्यानिनःन्यःर्यम्। बेवावयान्यः स्वान्यः ५८.यरे.य.जश्रासक्र्या.धं.श्रीम.स.यावय.रूप.रं.याधेम.सह.स्रीम.स्रा १४८. हेन्स् धु महिम्ह् त्वा स्वार्वि स्वार्वे स्वर्वे स्वार्वे स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये वहिना हो न सम्हिन्य स्वरे ह्विं उठ हे न हो हो मा ने हो माने सम्बद्धिया हेन्न् अर्वेन्यम् गुर् श्रेन्यम् कव्यम् या श्रेन्द्रि।

नेशन्त्रन्त्रात्यःकवाश्यःसन्ते क्रिंशः उद्या स्टायन्त्रशःयितः स्वीः स्वाः

नश्याश्ची सुः धेत्र ते । हिंद् श्ची रात्र स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्व

महिस्रास्त्रम् न्यान्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस

यश्यान्य स्था विष्ठ विष

वे। दे.व.चर्ट्र म.र्जेच.पर्य म.र्जेच.चर्चेच.चर्चेच.चर्चेच.तर.चर्चेट्य.त्य स्थानिर. रटा वी क्रेंब प्रदेश स्ट्रिट प्रवाय र्थे वि व केंद्र प्रक्षा प्रकार का विवा नक्षें सामराम् सुरसामा साधिव मी त्र्री ने ने सूमा नक्षा ता न में रसा वसा स्वानस्यानर्स्रियायरावासुरसायाधिताया देनाग्रीप्टर्ग्नेनाग्रीस्वा नश्याने प्यानि वर्षेत् परिता स्वापनि वर्षा स्वापनि वर्षेत्र प्राप्ति वर्य प्राप्ति वर्षेत्र प्राप्ति वर्ति वर्ते प्राप्ति वर्षेत्र प्राप्ति वर्ति वर्ति वर्ति वर्ति वर्ति वर्ति वर्ति वर्ति वर्त मु 'यम'न्द हें व सेंद्र मिव 'यम सु में मादे हो न देव ग्राट पर्द हो द ग्रे सूना नस्य नर्से सपि हैं ने हे के साउदा से नाय सन्देश सु र्से य हेंग्रायायिः क्षायायश्चेत्रायिः हेत्त्वया व्ययात्यायायीत् ययायश्चेया गुरा गशुरमारार्थमाधेत्रायदेः भ्रेत्र वित्र श्रेत्यायमार्देमासुः भ्रेत्या भ्रेत्या यसन्दर्देव वन्य श्चेत् ने न्या सामित्र प्रमान वित्र श्रें दिन भू नशः में वारत्युरः ग्रीः क्षेत्राराः ध्रूषाः या वर्षः या ग्रुयाः ये स्वार्धः राष्ट्रियाः या वर्षे यथः या ८८। वर्गानवस्थान्यस्थान् नर्स्रसामास्यास्य वर्षास्य स्थान्यस्य वर्षास्य स्थान्यस्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्थानस्य स्य स्य स्य स्य स्था नेशर्यार्ने भ्रेत्रां में दे दे दे दे दे स्थान में साम माम में साम में धेव दें।

नेते भ्री मार्चे अप्युव प्यूव अप्युव अप्युव

श्रुन्द्र, अर्ने, त्यश्र न्याः श्रुट्याः यश्रुव्याः यश्य्याः यश्य्याः यश्रुव्याः यश्रुव्याः यश्रुव्याः यश्रुव्याः यश्रुव्याः यश्रुव्याः यश्रुव्याः यश्रुव्याः यश्रुव्याः यश्ययः यश्यव्याः यश्ययः यश्

मशुश्रामार्देन् नशुःनान्ते। देःनश्राम् नामाणाः क्रमाश्रामाद्दाः नामाणाः क्रमाश्रामाद्दाः नामाणाः नामा

यहिमानदेन्त्राक्ष्यास्य स्थान्य स्थान

यश्यायां ने यात्रात्वे वात्रात्वे वात्रात्वे वात्रात्वे व्याप्त्रात्वे व्याप्तात्वे व्यापत्वे व्यापत्ये व्यापत्वे व्यापत्वे व्य

यहिश्वास्त्र न्वराधुवानी निया स्थार द्या व्यास्य स्थान स्था

स्तर्ने त्यम् न्यत्र क्षेत्र क्षेत्र

ध्रम्भूयाम्य वर्षे स्वर्ष्य स्वर्ष्य । वर्षे स्वर्ष्य स्वर्ष्ण स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वयः स्वय

महिरायां दे हिन् में व्यायायां वित्र में ने नित्र महिरायां वित्र में वित्र

श्चित्रप्त श्रे न्या त्रे त्या त्रे न्या त्रे न्या त्रे न्या त्रे न्या त्रे न्या त्रे न्या त्रे त्रे न्या त्रे न्या त्रे न्या त्रे न्या त्रे त्रे न्या त्रे त्रे न्या त्रे त्रे न्या त्रे त्या त्रे त्रे न्या त्रे त्रे न्या त्रे त्या त्रे त्या त्रे त्या त्रे त्या त्रे त्या त्रे त्या त्रे

के के नियम् मुम् र्विया ग्रम् सामि नियम के निय

न्वाग्यन्त्वहुन्त्वा ने नन्देवे के क्षें से न्याये हुन क्ष्या क्षेत्र क्षेत्र

युवेन्यन्त्र्राचेन्यन्त्राक्ष्यायायाय्वेन्याय्याय्वेन्यन्त्र्याः वित्राचेन्यन्त्राः वित्राचेन्यन्त्राः वित्राचेन्यन्त्राः वित्राचेन्यन्त्राः वित्राचेन्यन्त्रः वित्राचेन्यन्त्रः वित्राचेन्यायाय्वेन्यः वित्राचेन्यः वित्राचेन्यः

र्वेन्द्रेश्वरः इत्वेन्त् देशन् स्थान्त्रे स्यान्त्रे स्थान्त्रे स्यान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्ये स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्

ने नश्च निष्णे से निष्णे स्वर्षे के न्या स्वर्णे के निष्णे के न

यक्ष्मिय्राधित्र विष्ण्य विष्

वाश्वाराव्यशास्त्रभा नवावारान्त्रभान्ता हिन्दा है।

महेर्न्तुः प्राचित्रे महिरान्य स्थान्त्र स्था

यहिश्यानः ईदिन्यः श्वदानाय। यश्च श्चेद्राचिश्वः श्चेत्राचित्रः स्व श्वरः स्

र्सरमित्राचित्रास्त्रीय्यास्त्रीय्यास्त्रीय्यास्त्रीय्याः स्त्रीय्याः स्त्रीयः स

न्त्राचा स्थानित्र स्थानित् स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित् स्थानित् स्थानित् स्थानित् स्थानित् स्थानित् स्थानित् स्थानित् स्थानित् स्थानित्र स्थानित् स्थानित् स्थानित् स्थानित् स्थानित् स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स

यश्राभी द्वारायम् । विष्ठा स्वीत् । । विष्ठा स्वार्थ । विष्ठा स्वार्य । विष्ठा स्वार्य स्वार्थ । विष्ठा स्वार्य स्वार्थ । विष्ठा स्वार्थ स्वार्थ । विष्ठा स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वर

नेवे र्भेन र्भेन निया है । हे र्भेन नाव हुन ग्री तुराया धेरा यस सूर क्रियायायते व्यापायद्रेयायम् ग्रुयायाधीय छेट व्ययापायद्रेयायदे यत्र्यया नु'मिर्ठम'र्से'ने'हेन'न्गव' श्रुन'ग्री'मान्न'न मार्ठम'र्सेन अ' श्रुन' सम्'यग्रून' र्रे वे वा वायाने यथा शे त्यायायहे यायर हो रायवे रागवा श्वारी ख्या हें वर्धेर्यायम् हे न्याययान्व श्रेषे वर्यान्य स्वाधिययार्थेन्य या वर्देन न्या खुर्याहें वर्धेन्य प्रमाने ने प् नुदे-द्रवो न्यायाया श्रुः र्केवायाया वयया उदः ग्री-त्याया दर्देयाय राज्या विष्या श्रीत्र वार्त्र वार्त्र वार्षिया वी श्रावर्षे स्था त्राप्य विष्ट्र व्या त्रःतःश्चारवेत्राः प्रदेश्चात्रः तात्रः तुः चार्ठवाः वी शः ग्रामः पर्दे स्रशः प्रशः श्चारवायः न-१८ से ख्रान्स्रेत्राया सेवासायदे वात्रान्य से नवरायात् सार्रेसाया वयायाची वसानेसामार्श्वेत्याची इसाम्यास्यासे पार्य स्वापार्थिस्य यःशॅग्रायःनेराययःवस्याउदःग्रेत्यायःसूर्वेग्रायःनर्वेसद्या व्यायायाविया वर्षे यया थे व्यायायायायाय विर्धे रार्दे।

देशव्यक्ष्याविस्रस्य विस्तान्त्र माद्र माद्र स्वान्त्र स्वान्त्र

यहिरामाधूमा यशसूर्वेषाशमदे नुशमादे शमम् हो न्यदे <u> न्यायः ब्रुनः ने 'क्रे' यनयः नः श्रेषाश्चार्थे शास्त्रः है क्र श्रेन्श्चर्यः स्वरः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्त</u> स्यानस्य हेर धेर दें ले वा दें त स्यानस्य रे ते यस रत ही प्रत्य सह धेंद्र'सदे भ्रीर'दर्देश'यश'श्रु'र्केंग्रश'ग्री'त्रश'य'दर्देश'सर'ग्रेट्'य'श्रेंग्रश' शुःदशुरःतः भेव दे। दिःव हिंदः स्टायाययः ग्रेःदश्यात्रात्वेव पदेः व्यापः नर्डे अप्रासी से द्राप्त प्रमार त्राप्त हो। यथा ग्री मा हे दार्थ से प्रमा हे साम प्रमा से साम प्रमा से साम प्रमा श्चेन्यायशर्मेवानायम्भे श्चेन्यम्ययुम्मे वेषा ग्रान्यम् श्चेत्रः स्वाया श्रेंग्राश्चर्म्यश्चर्योग्।यरःग्रेट्धायन्याःभेट्धार्यस्त्रःशुस्रान्तःहेय्राश्चरः नेयार्गरे हेयामानेया क्रेन्यामे प्राची या या में स्थान ह्या क्रेन वर्चेत्रसदे त्राराया वर्ते दायर वर्च्या हो। सार्वे द्रारा त्रार हु दायू वर्ष गहेरारी साक्षेत्रार क्षेत्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र क्षेत्र राष्ट्र क्षेत्र साक्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र हेशनाक्ष्यायार्थेयायार्थेयायादेः भ्रेम देशम्यायायायाया ह्रमःश्चितःश्चेतः विश्वान्तः विश्वान्त

लर.य.भट.त.टट.सू.यशिषाचीशालयाचीशायादूट्याराय.स्याश्चेय. वर्चेत्र'यदे तुर्याया वेत्र में या वहें यया या धेत है। या दें रया या ते वेया या ळग्यःशॅग्यास्कुरायादवुराधे सुरात् वुयायदे सुरावेयायसूराया मरा यात्रास्रसात्रुसात्रेत्रायदे यसारे हिन्याहेत् से साहस्रसाय सात्रेत् स्रा वेशन्त्रभूतर्ते। यरम्प्रम्राप्तर्रा मार्थ्यम् मार्थ्यम् मार्थ्यम् मार्थ्यम् वह्र्मश्राम्यान्त्रेन्यायात्राद्ध्यायात्राद्ध्यात्रात्र्यात्र्यम्यात्र्यम्यात्र्यम् <u> २८.२.चित्रासदास्त्रीत्रमार्थेर सूर्यासास्त्रीतायात्री। क्रेयासुर्यास</u>्त्रीया विव पाहेव रेवि क्रिन्य ग्रीय प्रहिपा पर हो द द में या पर हो सेव प्राप्त दे प्रविव प र्फ़ेंबरबेंद्यायादेयायादेंद्यायादाययास्त्रेर्पित्वयायाविदारेंया नर्डेअ'मदे'क्क्रें'क्र्य'संदेट्य'म'क्रेंक्रेंक्रेंद्य'मदे'द्वद'मेश'य्यायार्थेम् शे.र्ट्रानुर्यरत्यूराग्रीविश्वात्रस्वात्रशास्यशहिष्ट्ररायशानुश्वार गहेत्रस्थाह्यस्य स्टिन्यस्य स्टिन्स्य हिन्ति । हिन्ति हिन्ति । विवानीशादिराधरादराळुवावाशवातरातुशासी।

ने प्यट स दिरस राज हें व सेंट्स राज हो हो से उट उ स स ने हें व

स्त्रास्त्रास्त्रास्त्रे द्वाणिवाची साद्ध्यास्त्रे क्वास्त्रास्त्रास्त्रे द्वास्त्रास्त्रे द्वास्त्रे द्वास्त्रास्त्रे द्वास्त्रास्त्रे द्वास्त्रास्त्रे द्वास्त्रे द्वास्त्रास्त्रे द्वास्त्रे द्वा

याहेश्वास्त्रश्वर्थन्त्र्यस्त्र्यस्त्र्यस्त्रेत्वा स्त्रेत्वर्धन्त्रः स्थान्त्रेत्वः स्यान्त्रेत्वः स्थान्त्रेत्वः स्थान्त्वः स्थान्त्रेत्वः स्यान्त्रेत्वः स्थान्त्रेत्वः स्थान्त्यः स्थान्त्रेत्वः स्थान्त्रेत्यः स्थान्त्रेत्वः स्थान्त्रेत्वः स्थान्त्यः स्थान्त्रेत्वः स्थान्त्यः स्थान्यः स्थान्त्यः स्यान्त्यः स्थान्त्यः स्थान्त्यः स्थान्त्यः स्थान्त्यः स्थान्त्यः

गहिरायाने त्यायाने याने वार्यायात्र व्यावी ने त्या त्याया से त्या के प्राप्त के प्राप्त

युन्नात्यः स्त्रीत् अद्येष्ठात्यः यहतः यहतः यहतः स्त्रीतः स्तिः स्त्रीतः स

निवित्याने व्यक्षान है नायमुन छुष्याने । नावन र्नेन नु ने प्ष्रमायम में स्थान स्थान है नाम वित्र ने निष्ट्रमाय वित्र निष्ट्रमाय वित्र

निर्नेत् निर्वित निर्वित स्वार्थ स्थान स्

सःयनयः विवागाश्चरः नरः सहराय। दे राषाणीः श्चुनः ग्रेट्रः हे के वार्षः रारः नरः सहरायः विवायः यो वार्षः यो

## ने यः क्षन् सम् विष्ठम् स्रित्र स्रित्

महिस्याने त्याळ न्यस्य विद्यस्य विद्यस

दें न न के अर्थन प्रत्या शी अळव अदे अळव के न के न के न अर्थ है । सूर

नश्रास्थाने क्षित्र क्षेत्र क

दे त्यासर्दि शुस्राश्ची सळ्द हिन्दी हिंगा सन्त श्वा वित्या प्रिस्य प्रा वित्या प्रा वित्या प्रा वित्या प्रा वित्या वित्या प्र वित्या वित्या प्रा वित्या वित

मःसर्वेदःचवेःस्रेरःर्रे।

याद्यन्यायान्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वयः

ह्वाश्वास्त्रः द्वान्ते त्यास्य स्वाध्य स्वाध

द्वस्यः द्वः त्वस्यः व्यान्तः व्याः विद्यः विद्यः

## सह्या:ब्रह्म